FAIZANE AMEERE MUAWIYA (HINDI)

अव्वल मुलूके इस्लाम, कातिबे वहूय हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رضی اللہ عنہ के

फ़ज़ाइल व मनाक़िब, औसाफ़ और दौरे हुकूमत के सुन्हरी वाक़िआ़त पर मुश्तमिल तख़रीज शुदा किताब

फ़ैज़ाने अमीरे मुआ़विया رضی اللہ عنہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी किताब** या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले जे़ल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** *से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** ने येह किताब **"फ़ैज़ाने अमीरे मुआ़विया رضی اللہ عنہ"** **उर्दू** ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (**Translation**) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (**Transliteration**) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है। इस किताब में अगर किसी जगह **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए **Sms, E-mail** या **Whats App** ब शुमूल सफ़्ह़ा व सत़्र नम्बर) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं।...

राबित़ा :- मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

www.dawateislami.net

अव्वल मुलूके इस्लाम, कातिबे वह्य हज़रते सय्यिदुना

अमीरे मुआविया رضی اللہ تعالیٰ عنہ के फ़ज़ाइल व मनाक़िब, औसाफ़ और दौरे

हुकूमत के सुन्हरी वाक़िआत पर मुश्तमिल तख़रीज शुदा किताब

फ़ैज़ाने अमीरे मुआविया رضی اللہ تعالیٰ عنہ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बा : फ़ैज़ाने सहाबा व अहले बैत

नाशिर

मक्तबतुल मदीना, देहली

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللہ

नाम किताब	: फ़ैज़ाने अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ
पेशकश	: मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए फ़ैज़ाने सहाबा व अहले बैत)
पहली बार	: रबीउ़ल अव्वल, सिने 1438 हिजरी
कुल सफ़हात	: 292
नाशिर	: मक्तबतुल मदीना, देहली-6

-: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

- अजमेर : **मक्तबतुल मदीना,** 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : 0145-2629385
- बरेली : **मक्तबतुल मदीना,** दरगाह आ'ला हज़रत, महल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यु.पी. फ़ोन : 09313895994
- गुलबर्गा : **मक्तबतुल मदीना**, फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तिम्मापुरी चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक फ़ोन : 09241277503
- बनारस : **मक्तबतुल मदीना**, अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी. फ़ोन : 09369023101
- कानपुर : **मक्तबतुल मदीना,** मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिपटी पडाव चौराहा, कानपुर, यु.पी. फ़ोन : 09616214045
- कलकत्ता : **मक्तबतुल मदीना,** 35A/H/2 मोमिन पुर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल, फ़ोन : 033-32615212
- नागपुर : **मक्तबतुल मदीना,** ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ीनगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर (ताजपुर) महाराष्ट्र, फ़ोन : 09326310099
- अनंतनाग : **मक्तबतुल मदीना,** मदनी तरबिय्यत गाह, टाउन हॉल के सामने, अनंतनाग, (इस्लामाबाद), कश्मीर, फ़ोन : 09797977438
- सुरत : **मक्तबतुल मदीना,** वलिया भाई मस्जिद के सामने, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सुरत, गुजरात, फ़ोन : 09601267861
- इन्दोर : **मक्तबतुल मदीना,** शॉप नम्बर 13, बॉम्बे बाज़ार, उदा पुरा, इन्दोर, एम. पी. (मध्य प्रदेश) फ़ोन : 09303230692
- बेंग्लोर : **मक्तबतुल मदीना,** शॉप नं. 13, जामिआ़ हज़रत बिलाल, 9th मेन पिल्लाना गार्डन, 3rd स्टेज, बेंग्लोर 45, कर्नाटक : 08088264783
- हुबली : **मक्तबतुल मदीना,** ए. जे. मुढोल कोम्पलेक्स, ए. जे. मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

Web : www.dawateislami.net / E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब (तख़रीज शुदा) छापने की इजाज़त नहीं है

www.dawateislami.net

याददाश्त

दौराने मुत़ालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

याददाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

इजमाली फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़ह़ा
इस उम्मत के बेहतरीन लोग	9
पहला बाब : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया का तआ़रुफ़	15
दूसरा बाब : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया के औसाफ़	36
तीसरा बाब : सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया का इ़श्क़े रसूल	62
चौथा बाब : ह़ुकूमते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया	95
पांचवां बाब : अ़ह्दे अमीरे मुआ़विया की इ़ल्मी सरगर्मियां	137
छटा बाब : सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया और इन्तिज़ामी उमूर	143
सातवां बाब : अल्लाह वालों से मह़ब्बत व अ़क़ीदत	154
आठवां बाब : सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया के फ़ज़ाइल	161
नवां बाब : मुशाजराते सह़ाबा और हम	200
दसवां बाब : सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया की मरविय्यात	225
ग्यारहवां बाब : विसाले सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया	239
बारहवां बाब : उ़लमा व मुह़द्दिसीन का ख़िराजे अ़क़ीदत	255
माख़ज़ो मराजेअ़	273
तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	281

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"हर सहाबी जन्नती है" के 13 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "13 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ

या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث: ۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

दो मदनी फूल :

बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴿1﴾ हर बार ह़म्द व ﴿2﴾ सलात और ﴿3﴾ तअ़व्वुज़ व ﴿4﴾ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़े के ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। ﴿5﴾ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर ﴿6﴾ ह़त्तल वस्अ़ बा वुज़ू और ﴿7﴾ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। ﴿8﴾ क़ुरआनी आयात और ﴿9﴾ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴿10﴾ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴿11﴾ जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ﴿12﴾ नीज़ सह़ाबए किराम और बुज़ुर्गाने दीन के नाम के साथ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पढ़ूंगा। ﴿13﴾ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौ़र पर मुत्त़लअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : *बानिये दा'वते इस्लामी, आशिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल* ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** *क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तख़रीज[1]

---

1 .....तादमे तह़रीर (रबीउ़ल आख़िर 1437 हिजरी) 10 शो'बे मज़ीद क़ाइम हो चुके हैं : (7) फ़ैज़ाने क़ुरआन (8) फ़ैज़ाने ह़दीस (9) फ़ैज़ाने सह़ाबा व अह्ले बैत (10) फ़ैज़ाने सह़ाबियात व सालिह़ात (11) शो'बए अमीरे अह्ले सुन्नत (12) फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (13) फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा (14) बयानाते दा'वते इस्लामी (15) रसाइले दा'वते इस्लामी (16) अ़रबी तराजुम।

(मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

www.dawateislami.net

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ **ह़त्तल वस्अ़** सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **'दा'वते इस्लामी'** की तमाम मजालिस ब शुमूल **'अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या'** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हिजरी

www.dawateislami.net

इस उम्मत के बेहतरीन लोग

सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان वोह मुक़द्दस हस्तियां हैं जिन्हों ने नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुस्नो जमाल को ईमानी नज़रों से देखा, सोह़बते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से फ़ैज़याब हुवे, आफ़्ताबे रिसालत से नूरे मा'रिफ़त ह़ासिल कर के आस्माने विलायत पर चमके और गुलिस्ताने करामत में गुलाब के फूलों की त़रह़ महके और "सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان" के मुअ़ज़्ज़ज़ लक़ब से सरफ़राज़ हो कर इस उम्मत के लिये नुजूमे हिदायत क़रार पाए।

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तमाम सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان इस उम्मत में अफ़्ज़ल हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने करीम में सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की फ़ज़ीलत व मद्ह़ बयान फ़रमाई। इन के बेहतरीन अ़मल, उ़म्दा अख़्लाक़ और ह़ुस्ने ईमान का तज़किरा फ़रमाया और इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या को दुन्या ही में अपनी रिज़ा का मुज़्दा सुनाया, चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इरशाद है :

رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمۡ وَرَضُوۡا عَنۡہُ وَاَعَدَّ لَہُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِیۡ تَحۡتَہَا الۡاَنۡہٰرُ خٰلِدِیۡنَ فِیۡہَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِکَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِیۡمُ

(پ۱۱، التوبۃ:۱۰۰)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी और उन के लिये तय्यार कर रखे हैं बाग़ जिन के नीचे नह्रें बहें हमेशा हमेशा उन में रहें येही बड़ी कामयाबी है।*

दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की इ़ज़्ज़त व तौक़ीर का हुक्म इरशाद फ़रमाया : चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से रिवायत है कि

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरे सह़ाबा की इ़ज़्ज़त करो कि वोह तुम्हारे बेहतरीन लोग हैं।(1)

यक़ीनन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की शान बहुत आ'ला व अर्फ़अ़ है, इन मुक़द्दस हस्तियों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बेह़द फ़ज़्लो करम है। हमें चाहिये कि इन पाकीज़ा नुफ़ूस की मह़ब्बत दिल में बसाते हुवे इन की पाकीज़ा ह़यात का मुत़ालआ़ करें और दोनों जहां में कामयाबी के लिये इन के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे ज़िन्दगी बसर करने की कोशिश करें। इसी अहम्मिय्यत के पेशे नज़र शैख़े त़रीक़त अमीरे अह्ले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** से इस ख़्वाहिश का इज़्हार फ़रमाया कि सह़ाबिये रसूल, कातिबे वह्य **ह़ज़रते** सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक सीरत को किताबी सूरत में "फ़ैज़ाने अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)" के नाम से मुरत्तब किया जाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस किताब पर शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबा व अह्ले बैत (**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**) के 5 इस्लामी भाइयों ने काम करने की सआ़दत ह़ासिल की बिलख़ुसूस अबू सलमान मुह़म्मद अ़दनान चिश्ती मदनी, अबू आ़त़िर मुह़म्मद नासिर जमाल अ़त्तारी और आसिफ़ जहांज़ेब अ़त्तारी (سَلَّمَہُمُ اللّٰہُ الْبَارِی) ने ख़ूब कोशिश की।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की मजलिस **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** की इस काविश को क़बूल फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबा व अह्ले बैत
1 जुमादल उख़रा सिने 1437 हिजरी मुत़ाबिक़ 11 मार्च सिने 2016 ईसवी

1 ... مشکاۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب الصحابۃ، ۲/۴۱۳، حدیث: ۶۰۱۲ مختصرا

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ैज़ाने अमीरे मुआविया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में महब्बत रखने वाले जब बाहम मिले और मुसाफ़हा करें और नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिल्म हो तो ऐसा !

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में क़बूले इस्लाम के लिये लोग जूक़ दर जूक़ हाज़िर हुवा करते। एक दिन यमनी बादशाहों की औलाद से हज़रते सय्यिदुना वाइल बिन हुजर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वफ़्द की सूरत में बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में क़बूले इस्लाम के लिये हाज़िर हुवे तो इन्हें सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने बताया कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(1) ... مسند ابی یعلی، مسند انس بن مالک، ۳/۹۵، حدیث: ۲۹۵۱

www.dawateislami.net

ने तीन दिन पहले ही तुम्हारे आने की बिशारत इरशाद फ़रमा दी थी । नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन पर बेहद शफ़्क़त फ़रमाई, इन के लिये अपनी चादर मुबारक बिछा दी, अपने क़रीब बिठाया, मिम्बरे अक़्दस पर इन के लिये ता'रीफ़ी कलिमात इरशाद फ़रमाए, बरकत की दुआ़ फ़रमाई और इन के क़ियाम के लिये मकान की निशान देही का काम एक **कुरैशी नौजवान** के सिपुर्द फ़रमाया (इत्तिफ़ाक़ से येह **कुरैशी नौजवान** भी एक सरदारे मक्का का फ़रज़न्द था लेकिन दर्सगाहे नबुव्वत से फ़ैज़याब होने और सोह़बते मुस्त़फ़ा से अख़्लाक़ व आदाब सीखने की बरकत से इस के मिज़ाज में ज़र्रा बराबर भी सरदारों वाली बात न थी) नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुक्म पाते ही वोह **नौजवान** फ़ौरन ह़ज़रते सय्यिदुना वाइल बिन हुजर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हमराह चल दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना वाइल बिन हुजर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ऊंटनी पर सुवार थे जब कि वोह **कुरैशी नौजवान** साथ साथ पैदल चल रहा था । चूंकि गर्मी शदीद थी इस लिये कुछ देर पैदल चलने के बा'द उस **कुरैशी नौजवान** ने ह़ज़रते सय्यिदुना वाइल बिन हुजर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : "गर्मी बहुत शदीद है, अब तो मेरे पाउं अन्दर से भी जलने लगे हैं । आप मुझे अपने पीछे सुवार कर लीजिये ।" ह़ज़रते सय्यिदुना वाइल बिन हुजर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने साफ़ इन्कार कर दिया । उस **कुरैशी नौजवान** ने कहा : कम अज़ कम अपने जूते ही पहनने के लिये दे दीजिये ताकि मैं गर्मी से बच सकूं । ह़ज़रते सय्यिदुना वाइल बिन हुजर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : तुम उन लोगों में से नहीं हो

www.dawateislami.net

जो बादशाहों का लिबास पहन सकें। तुम्हारे लिये इतना ही काफ़ी है कि मेरी ऊंटनी के साए में चलते रहो।" येह सुन कर उस **कुरैशी नौजवान** ने निहायत तह़म्मुल का मुज़ाहरा किया और ज़बान से भी जवाबी कारवाई न की। वक़्त गुज़रता गया और वोह **कुरैशी नौजवान** पूरे मुल्के शाम का गवर्नर बन गया। एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना वाइल बिन हुजर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उसी **कुरैशी नौजवान** के पास आए जो कि अब गवर्नर बन चुका था। तो वोह **कुरैशी नौजवान** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ निहायत एह़तिराम से पेश आया और माज़ी के उस वाक़िए़ का बदला लेने के बजाए ह़ज़रते सय्यिदुना वाइल बिन हुजर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने साथ तख़्त पर बिठाया और फ़रमाया : मेरा तख़्त बेहतर है या आप की ऊंटनी की कोहान ? ह़ज़रते सय्यिदुना वाइल बिन हुजर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं उस वक़्त नया नया मुसलमान हुवा था और जाहिलिय्यत का रवाज वोही था जो मैं ने किया। अब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें इस्लाम से सरफ़राज़ फ़रमाया है और आप ने जो कुछ किया वोही इस्लाम का त़रीक़ा है।" ह़ज़रते सय्यिदुना वाइल बिन हुजर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस **कुरैशी नौजवान** के रवय्ये से इस क़दर मुतअस्सिर हुवे कि आप ने फ़रमाया : काश मैं ने इन्हें अपने आगे सुवार किया होता !"[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप जानते हैं कि तक्लीफ़ बरदाश्त करने के बा वुजूद हुस्ने सुलूक से पेश आने वाले येह बुर्दबार **कुरैशी नौजवान** कौन थे ? येह नबिय्ये

1 ... معجم صغیر، من اسمہ یحیی، ۲/۱۴۳، مسند بزار، مسند وائل بن حجر، ۱۰/۳۴۵، حدیث: ۴۴۷۵، تاریخ المدینۃ المنورۃ، وفاۃ وائل بن حجر الحضرمی، ۲/۵۷۹، الاصابۃ، وائل بن حجر، ۶/۴۶۶، رقم: ۹۱۲۰ ملخصاً

www.dawateislami.net

करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जलीलुल क़द्र सह़ाबी और कातिबे वह़्य **ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे । इस वाक़िए़ में हमारे लिये दर्स है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा के लिये अ़फ़्वो दर गुज़र से काम लें और हर एक के साथ मह़ब्बत भरा सुलूक करने की कोशिश करें ।

हिसाब में आसानी के तीन अस्बाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन बातें जिस शख़्स में होंगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (क़ियामत के दिन) उस का हिसाब बहुत आसान त़रीक़े से लेगा और उस को अपनी रह़मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा । सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह कौन सी बातें हैं ? फ़रमाया : (1) जो तुम्हें मह़रूम करे तुम उसे अ़त़ा करो और (2) जो तुम से तअ़ल्लुक़ तोड़े तुम उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ो और (3) जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उसे मुआ़फ़ कर दो ।[1]

आप भी निय्यत फ़रमा लीजिये कि किसी की जानिब से मिलने वाली तक्लीफ़ पर सब्र कर के न सिर्फ़ उसे मुआ़फ़ कर दूंगा बल्कि जहां तक हो सका उसे राह़त पहुंचा कर दिलजूई भी करूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ... معجم اوسط، من اسمہ محمد، ۴/۱۸، حدیث: ۵۰۶۴

www.dawateislami.net

पहला बाब

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया का तआ़रुफ़

इस्मे गिरामी और लक़ब व कुन्यत

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नामे नामी इस्मे गिरामी मुआ़विया है ।[1] कई सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का नाम मुआ़विया था[2] जैसा कि शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन मह़मूद बिन अह़मद ऐ़नी ह़नफ़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मुआ़विया नाम के 20 से ज़ाइद सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان हैं ।[3]

---

1 ... سیر اعلام النبلاء، معاویۃ بن ابی سفیان، ۴/۲۸۵

2 ....ख़बरदार शैत़ान येह वस्वसा न डाले कि लुग़त (Dictionary) में तो लफ़्ज़े मुआ़विया का मा'ना दुरुस्त नहीं लिहाज़ा येह नाम नहीं रखना चाहिये ? याद रहे ! लुग़त में मुआ़विया के अच्छे मा'ना भी हैं जैसे बहादुर और बुलन्द आवाज़ नीज़ शैत़ान के इस वार को नाकाम बनाने के लिये येह क़ाइ़दा ज़ेह्न नशीन कर लीजिये कि नबिय्ये रह़मत शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दते मुबारका थी कि अगर किसी नाम का मा'ना दुरुस्त न होता तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह नाम ही तब्दील फ़रमा देते लेकिन "मुआ़विया" वोह ख़ूब सूरत नाम है जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से कई मरतबा अदा हुवा इसी नाम से पुकार कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दुआ़ से नवाज़ा और इसे तब्दील न फ़रमाया। येह भी याद रखिये कि किसी नाम को सह़ाबिये रसूल से निस्बत ह़ासिल हो जाए तो उस में लुग़त नहीं देखी जाती बल्कि निस्बत की बरकतें पाने के लिये वोह नाम रखा जाता है।

3 ... عمدۃ القاری، کتاب العلم، باب من یرد اللہ بہ ۔۔۔ الخ، ۲/۶۹، تحت الحدیث: ۷۱

www.dawateislami.net

जब मुत़लक़न मुआ़विया बोला जाए तो इस से मुराद ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया इब्ने अबू सुफ़्यान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) होते हैं।[1] आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत "अबू अ़ब्दुर्रह़मान" है, लक़ब "نَاصِرٌ لِدِینِ اللّٰہ" (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दीन के मददगार) है और "نَاصِرٌ لِحَقِّ اللّٰہ" (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़क़ के मददगार) भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का लक़ब है और येही ज़ियादा मश्हूर है।[2]

विलादत

शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा अबुल फ़ज़्ल अह़मद बिन अ़ली इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत बिअ़ूसते मुबारका से पांच साल क़ब्ल (तक़रीबन 604 ईसवी) में हुई और येही क़ौल ज़ियादा मश्हूर है।[3]

सिलसिलए नसब

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सिलसिलए नसब "अ़ब्दे मनाफ़" पर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सिलसिलए नसब से जा मिलता है। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1 ....मिरआतुल मनाजीह, 6 / 114

2 ... تاریخ الخمیس، ذکر خلافۃ معاویۃ...الخ، ۲/۲۹۱، سیر اعلام النبلاء، معاویۃ بن ابی سفیان، ۴/۲۸۵، مورد اللطافۃ فی من ولی السلطنۃ والخلافۃ، معاویۃ بن ابی سفیان، ۱/۶۴

3 ... الاصابۃ، ذکر من اسمہ معاویۃ، ۶/۱۲۰

www.dawateislami.net

का नसबे मुबारक मुलाह़ज़ा फ़रमाएं : "मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब बिन हाशिम बिन अ़ब्दे मनाफ़।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सिलसिलए नसब इस त़रह़ है : मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान सख़्र बिन ह़र्ब बिन उमय्या बिन अ़ब्दे शम्स बिन अ़ब्दे मनाफ़।"(2) इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए मोह़तरमा का नसब भी "अ़ब्दे मनाफ़" पर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिल जाता है, मुआ़विया बिन हिन्द बिन्ते उ़त्बा बिन रबीआ़ बिन अ़ब्दे शम्स बिन अ़ब्दे मनाफ़।"(3) इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नसबी ए'तिबार से हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रिश्तेदारों में से हैं।

वालिदैन का त़आ़रुफ़ और क़बूले इस्लाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान और वालिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना हिन्द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़त्ह़े मक्का (8 हिजरी मुत़ाबिक़ 629 ईसवी) के रोज़ सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते ह़क़ परस्त पर इस्लाम क़बूल किया।(4)

1 ... السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، ذکر سرد النسب الزکی من محمد الی آدم، ص۵
2 ... الاصابۃ، معاویۃ بن ابی سفیان، ۶/۱۲۰
3 ... اسد الغابۃ، ھند بنت عتبۃ، ۷/۳۱۶
4 ... زرقانی علی المواھب، کتاب المغازی، ذکر غزوۃ احد، ۲/۴۴۰

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू सुफ़्यान की क़ुरबानियां

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद हज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़बीलए क़ुरैश की शाख़ बनू उमय्या की अहम तरीन शख़्सिय्यत थे येही वज्ह है कि अबू जह्ल के ग़ज़्वए बद्र में क़त्ल होने के बा'द तमाम क़बाइल की मुत्तफ़िक़ा राए से आप सरदारे मक्का मुन्तख़ब हुवे। फ़त्हे मक्का के दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम क़बूल किया और इसी रोज़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर को "दारुल अमान" या'नी अम्न का घर क़रार दे कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़ुसूसी इम्तियाज़ से नवाज़ा।[1] हज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम क़बूल करने के बा'द अपनी तमाम तर कोशिशें दीने इस्लाम की सर बुलन्दी में सर्फ़ फ़रमाई। इस दौरान आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बहुत क़ुरबानियां दीं और अपनी जुरअत व बहादुरी का अ़मली मुज़ाहरा फ़रमाया यहां तक कि अपनी दोनों आंखें राहे ख़ुदा में क़ुरबान कर दीं। चुनान्चे,

जब हज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ज़्वए हुनैन में हाज़िर हुवे तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को माले ग़नीमत से सौ ऊंट और चालीस ऊक़िया अ़ता फ़रमाए और आप के दोनों फ़रज़न्द हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया

1 . . . السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، اسلام ابی سفیان بن الحارث ــــ الخ، ص ۴۶۹ ملخصاً، زرقانی علی المواھب، کتاب المغازی، باب غزوۃ الفتح الاعظم، ۳/۴۱۷ ـ ۴۲۲ ملتقطاً، اسد الغابۃ، ابو سفیان صخر بن حرب، ۶/۱۵۷

www.dawateislami.net

और ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबी सुफ़्यान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को भी इतना ही अ़ता फ़रमाया। ग़ज़वए त़ाइफ़ में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शिर्कत की और इस में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक आंख शहीद हुई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दूसरी आंख जंगे यरमूक में शहीद हुई। याद रहे जंगे यरमूक के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़रज़न्द ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबी सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे।[1] (येह यज़ीदे पलीद के चचा थे, वोह बदबख़्त था लेकिन वालिद और चचा ख़ुशबख़्त थे) दोनों आंखों का राहे ख़ुदा में शहीद हो जाना येह किस क़दर अ़ज़मत की बात है लेकिन येह तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़ज़मत का ज़ाती पहलू है आप के मक़ामो मर्तबे को पहचानने के लिये आप के अह्ले ख़ाना के अ़ज़ीम किरदार को मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

लख़्ते जिगर बारगाहे रिसालत में

एक मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मेरी तीन बातें क़बूल फ़रमाइये : (1) उम्मे ह़बीबा बिन्ते अबी सुफ़्यान अ़रब में सब से ह़सीनो जमील हैं मैं उन का निकाह़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से करता हूं (2) मुआ़विया को अपना कातिब बना लीजिये (3) मुझे लश्कर का अमीर मुक़र्रर फ़रमा दीजिये ताकि मैं कुफ़्फ़ार से ऐसे ही लड़ूं जैसे मुसलमानों से लड़ता था।" नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हर सुवाल पर अपनी रिज़ामन्दी का इज़्हार

1 ... اسد الغابۃ، ابوسفیان صخر بن حرب، ۶/۱۵۸

www.dawateislami.net

फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जुमैल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अगर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल न करते तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़त़ा न फ़रमाते इस लिये कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दते मुबारका थी कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी साइल का सुवाल रद नहीं फ़रमाते थे।[1]

ज़रूरी वज़ाह़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से छे या सात हिजरी में निकाह़ फ़रमाया था और उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम नहीं लाए थे लेकिन बारगाहे रिसालत में दोबारा इल्तिजा करना नए निकाह़ के लिये न था बल्कि निकाह़ की तजदीद के लिये था।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़त़ा की क्या बात है, बारगाहे रिसालत का सुवाली ख़ाली हाथ नहीं जाता बल्कि अपने मन की मुराद पाता है, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़बान पर साइल के सुवाल के जवाब में ''न'' जारी नहीं हुवा, इस बात को बयान करने के लिये शारेह़ बुख़ारी इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी और इमाम शिहाबुद्दीन

1 ... مسلم، کتاب المناقب، باب من فضائل ابی سفیان۔۔۔الخ، ص ۱۳۵۸، حدیث: ۱۶۸

2 ... شرح مسلم للنووی، کتاب فضائل الصحابۃ، فضائل ابی سفیان صخر۔۔۔الخ، الجزء: ۸، ۱۶/ ۲۳

www.dawateislami.net

अह़मद क़स्त़लानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا ने फ़र्ज़दक़ का येह शे'र नक़्ल फ़रमाया है :

مَا قَالَ لَا قَطُّ إِلَّا فِي تَشَهُّدِهٖ لَوْلَا التَّشَهُّدُ كَانَتْ لَاءُهٗ نَعَمُ

या'नी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कलिमा "ला" तशह्हुद में ही फ़रमाया अगर तशह्हुद न होता तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का "ला (या'नी नहीं)" भी "नअ़म (या'नी हां)" होता।[1]

आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल बरकत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

वाह क्या जूदो करम है शहे बत़ह़ा तेरा
नहीं सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा

सआ़दत मन्द फ़रज़न्द

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जनाज़ा पढ़ाया।[2]

सय्यिदतुना हिन्द की प्यारे आक़ा से महब्बत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह़ **ह़ज़रते** सय्यिदतुना हिन्द बिन्ते उ़त्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने भी इस्लाम के बा'द अपनी तमाम तर कोशिशें दीने इस्लाम की सर बुलन्दी में सर्फ़ फ़रमाईं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी सह़ाबियात की मुबारक सफ़ में

1 ... فتح الباری، کتاب الادب، باب حسن الخلق۔۔۔الخ، ۱۱/۳۸۷، تحت الحدیث: ۶۰۳۴، ارشاد الساری، کتاب الادب، باب حسن الخلق۔۔۔الخ، ۱۳/۶۶، تحت الحدیث: ۶۰۳۴

2 ... شذرات الذهب، سنة احدی وثلاثین، ۱/۶۳

www.dawateislami.net

शामिल हो गईं और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को सारे जहां से बढ़ कर चाहने लगीं चुनान्चे, हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : हिन्द बिन्ते उ़त्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुईं और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! (इस्लाम लाने से क़ब्ल) रूए ज़मीन पर आप के घरवालों से ज़ियादा किसी घरवालों का रुस्वा होना मुझे मह़बूब न था। मगर अब मेरा ह़ाल येह है कि रूए ज़मीन पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के घरवालों से ज़ियादा किसी घरवालों का इ़ज़्ज़त दार होना मुझे पसन्द नहीं।[1] मज़ीद बारगाहे रिसालत में हदया भेज कर भी अपनी दिली अ़क़ीदत का इज़्हार फ़रमाया। चुनान्चे,

बारगाहे रिसालत में हदया

हज़रते सय्यिदुना अबू हुसैन हुज़ली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते हिन्द बिन्ते उ़त्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इस्लाम लाईं तो अपनी ख़ादिमा के हाथ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में बकरी के दो भुने हुवे बच्चे बत़ौरे हदया भेजे। उस वक़्त हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वादिये अब्त़ह़ में जल्वा फ़रमा थे। ख़ादिमा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ैमे के क़रीब पहुंची सलाम अ़र्ज़ किया और ख़ैमे में दाख़िल होने की इजाज़त त़लब की। इजाज़त मिलने पर ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुई तो उस वक़्त रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में उम्मुल मोमिनीन

1 . . . بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ذکر ہند بنت عتبۃ۔۔۔الخ، ۲/۵۶۷، حدیث:۳۸۲۵

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) और बनू अ़ब्दुल मुत्त़लिब की बा'ज़ ख़वातीन भी ह़ाज़िर थीं।

ख़ादिमा ने अ़र्ज़ किया कि मेरी मालिका ह़ज़रते हिन्द बिन्ते उ़त्बा ने येह हदया आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में भेजा है और उन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मा'ज़िरत चाहते हुवे अ़र्ज़ की है कि इन दिनों हमारी बकरियों ने थोड़े बच्चे जने हैं (वरना आप की शान के लाइक़ हदया भेजा जाता, बहर ह़ाल येह मा'मूली हदया ह़ाज़िरे ख़िदमत है) नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते हिन्द बिन्ते उ़त्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को दुआ़ से नवाज़ा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी बकरियों में बरकत फ़रमाए और उन में इज़ाफ़ा फ़रमाए। इस के बा'द वोह ख़ादिमा अपनी मालिका ह़ज़रते हिन्द बिन्ते उ़त्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास वापस आई और बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिलने वाली दुआ़ की ख़बर सुनाई। ह़ज़रते हिन्द बिन्ते उ़त्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا दुआ़इय्या कलिमात सुन कर निहायत ख़ुश हुई, उन की ख़ादिमा कहती हैं कि इस के बा'द हमारी बकरियों की ता'दाद में ऐसी कसरत और ज़ियादती हुई जो इस से क़ब्ल हम ने न देखी थी, ह़ज़रते हिन्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती थीं येह नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ए बरकत का नतीजा है और फ़रमातीं कि **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र है कि उस ने हमें इस्लाम की त़रफ़ हिदायत फ़रमाई, ह़ज़रते हिन्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इस मौक़अ़ पर येह भी फ़रमाया : मैं ने

www.dawateislami.net

ख़्वाब देखा कि मैं धूप में खड़ी हूं और एक साया मेरे क़रीब है, लेकिन मैं उस साये को पाने पर क़ादिर नहीं हूं, इसी दौरान रह़मते दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे क़रीब तशरीफ़ लाए जिस की बरकत से मैं उस साये को पाने में कामयाब हो गई। (या'नी कुफ़्र की धूप से निकल कर इस्लाम के साये में आ पहुंची)[1]

ह़ज़रते सय्यिदतुना हिन्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अ़ह्दे सिद्दीक़ी में जंगे यरमूक में अपने शोहर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ शरीक हुईं।[2] ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में जिस दिन अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़ुह़ाफ़ा उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्तिक़ाल फ़रमाया, ऐ़न उसी दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की भी वफ़ात हुई। आप निहायत फ़सीह़ो बलीग़ और अ़क़्लमन्द ख़ातून थीं।[3] ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से भी अह़ादीस रिवायत कीं।[4]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ... تاریخ ابن عساکر، ھند بنت عتبۃ، ۷۰/۱۸۴

2 ... اسد الغابہ، ھند بنت عتبۃ، ۷/۳۱۷، تاریخ ابن عساکر، ھند بنت عتبہ، ۷۰/۱۲۶، البدایۃ والنہایۃ، سنۃ اربع عشرۃ من الھجرۃ، ذکر من توفی ـــ الخ، ۵/۱۲۱

3 ... اسد الغابہ، ھند بنت عتبۃ، ۷/۳۱۷

4 ... مرقاۃ المفاتیح، کتاب اللباس، باب الترجل، الفصل الثانی، ۸/۲۴۳، تحت الحدیث: ۴۴۲۶، تاریخ ابن عساکر، ھند بنت عتبۃ، ۷۰/۱۲۶

www.dawateislami.net

सूरत व सीरते मुबारका

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **दराज़ क़ामत थे** । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का **रंग सफ़ेद व ख़ूब सूरत** और **शख़्सिय्यत** रो'बदार थी । सर और **दाढ़ी** मुबारक में **मेहंदी** लगाया करते थे जिस के रंग के सबब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **दाढ़ी सोने** की त़रह़ मा'लूम होती थी ।[(1)] आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **ह़लीम व बुर्दबार**, **बा वक़ार**, **मालदार** और लोगों में **सरदार** थे, करम फ़रमाने वाले और बहर सूरत **इन्साफ़** क़ाइम करने वाले थे ।[(2)]

हज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद जज़री رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत **ख़ूब सूरत गोरे रंग वाले** थे । चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : **"मुआ़विया** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **अ़रब के किस्रा**[(3)] **हैं** ।"[(4)] नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अक्सर **सियाह इमामा** बांधते थे ।[(5)]

---

1 . . . الاصابة، معاوية بن ابی سفيان، ۱۲۰/۶، البداية والنهاية، سنة ستين من الهجرة النبوية، و هذه ترجمة معاوية ـ الخ، ۲۱۹/۵، اسد الغابه، معاوية بن صخر ابی سفيان، ۲۲۳/۵، تاريخ الخلفاء، معاوية بن ابی سفيان، ص ۱۵۵

2 . . . البداية والنهاية، سنة ستين من الهجرة النبوية، وهذه ترجمة معاوية ـــ الخ، ۲۱۹/۵

3 ....फ़ारस (ईरान) के बादशाह को किस्रा कहते हैं । (फ़िरऔ़न का ख़्वाब, स. 3)

4 . . . اسد الغابه، معاوية بن صخر، ۲۲۲/۵

5 ....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 344 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन मुह़म्मद दियार बकरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बादशाह थे, रो'ब व दबदबा वाले, दूर अन्देश, बहादुर, सख़ी, बुर्दबार और सरदार थे, गोया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पैदा ही बादशाहत के लिये हुवे थे।[1]

सब्ज़ लिबास भी ज़ेबे तन फ़रमाते

ह़ज़रते इस्ह़ाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हमें ख़ुत़बा दिया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब्ज़ चादर ओढ़ रखी थी।[2]

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बचपन

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिन लोगों ने अपने कारनामों के सबब दुन्या में नाम कमाया उन की उस कामयाबी के पीछे वालिदैन की अच्छी तरबिय्यत और बुराइयों से पाक सोह़बत का बड़ा किरदार होता है। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिदे मोह़तरम सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिन का नाम सख़्र और कुन्यत अबू ह़न्ज़ला भी है।[3] ज़मानए जाहिलिय्यत में सरदारे मक्का थे, जो शुजाअ़त व बहादुरी

1 ... تاریخ الخمیس، ذکر خلافۃ معاویۃ، ۲/۲۹۲

2 ... طبقات ابن سعد، معاویۃ بن ابی سفیان، ۶/۲۳ مکتبۃ الخانجی

3 ... عمدۃ القاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب ذکر معاویۃ بن ابی سفیان، ۱۱/۴۸۷

www.dawateislami.net

और सियासत व हुक्मरानी के इ़लावा अपनी ज़ाती ख़ुसूसिय्यात के सबब अ़रब के मुमताज़ लोगों में जाने जाते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सोह़बत और तरबिय्यत ने सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर अपना ख़ूब रंग जमाया, जिस की बदौलत अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी अ़ज़मत के पैकर बन गए, मज़ीद पढ़ने लिखने के शौक़ और उस की तक्मील के सबब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शख़्सिय्यत और मुमताज़ व नुमायां हो गई।

बचपन से ही अ़ज़मतों का ज़ुहूर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने हिन्द बिन्ते उ़त्बा को मक्कए मुकर्रमा में देखा, उन का चेहरा गोया चांद का टुकड़ा था और उन के पास एक बच्चा खेल रहा था, एक (दूर अन्देश) शख़्स वहां से गुज़रा तो वोह बच्चे के बारे में पेशगोई करते हुवे कहने लगा : **"अगर येह बच्चा ज़िन्दा रहा तो अपनी क़ौम का सरदार बनेगा।"** येह सुन कर ह़ज़रते हिन्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "अगर येह सारे अ़रब का सरदार न बने तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे मौत दे।" वोह बच्चे **ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) थे।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन कैसान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रिवायत फ़रमाते हैं : अ़रब के बा'ज़ साह़िबे बसीरत लोगों ने सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बचपन में देखा तो उन में से एक

1 ... البدایۃ والنہایۃ، سنۃ ستین من الھجرۃ النبویۃ، ھذہ ترجمۃ معاویۃ۔۔۔الخ، ۵/۲۲۰

www.dawateislami.net

ने कहा : मेरा ख़याल है कि अ़न क़रीब येह बच्चा अपनी क़ौम का सरदार बनेगा। जब येह बात उन की वालिदा ह़ज़रते हिन्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने सुनी तो फ़रमाने लगीं : "मैं इस को रोऊं अगर येह सिर्फ़ अपनी क़ौम का सरदार बने।[1]"

इसी त़रह़ एक रोज़ जब कि सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ छोटे बच्चे थे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नज़र आप पर पड़ी तो फ़रमाया : "बेशक मेरा येह बड़े सर वाला बेटा अपनी क़ौम का सरदार बनने के लाइक़ है, ह़ज़रते हिन्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने येह सुन कर फ़रमाया : "सिर्फ़ अपनी क़ौम का सरदार ! (इतनी ख़ूबियों के बा वुजूद) अगर येह सारे अ़रब का सरदार न बने तो सत्यानास हो।"[2]

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की जवानी और ज़मानए जाहिलिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! चूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की विलादत हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ए'लाने नबुव्वत से पांच साल पहले मक्कए मुकर्रमा में हुई इस ह़िसाब से ब वक़्ते हिजरत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की उ़म्र 18 साल थी और आप जवान थे, लेकिन सरदारे मक्का के घर में तरबिय्यत पाने और कुफ़्फ़ारे मक्का के दरमियान रहने के बा वुजूद इस्लाम के ख़िलाफ़ होने वाली साज़िशों और जंगों में आप की शुमूलिय्यत

1 ... البدایۃ والنہایۃ، سنۃ ستین من الھجرۃ النبویۃ، ھذہ ترجمۃ معاویۃ۔۔۔الخ، ۵/۲۲۰

2 ... الاصابۃ، معاویۃ بن ابی سفیان، ۶/۱۲۱، البدایۃ والنہایۃ، سنۃ ستین من الھجرۃ، وھذہ ترجمۃ معاویۃ۔الخ، ۵/۲۲۰

www.dawateislami.net

मन्क़ूल नहीं, या'नी ज़मानए जाहिलिय्यत में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का दामन ईज़ाए मुस्लिम के बदनुमा दाग़ से पाको साफ़ रहा और यक़ीनन येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का आप पर करम था।

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब छोटे थे तो मुशरिकीने मक्का ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने हज़रते सय्यिदुना खुबैब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को तख़्ते दार पर खड़ा किया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अह्ले मक्का के लिये बद दुआ की। हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मुझे मेरे बाप ने ज़मीन पर लिटा दिया क्यूंकि उन का ख़याल था कि अगर ज़मीन पर लेट जाएं तो बद दुआ का असर नहीं होता। उस बद दुआ से हज़रते सुफ़्यान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर एक इज़्तिराबी कैफ़िय्यत तारी हो गई, मुझ पर उस बद दुआ का येह असर हुवा कि कई सालों तक मेरी शोहरत ख़त्म रही। कहते हैं कि जितने आदमी भी सूली पर चढ़ाते वक़्त मौजूद थे एक साल के अन्दर अन्दर सब मर खप गए।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ाहिर होने वाले मो'जिज़ात और सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की ज़ात से सादिर होने वाली बरकात मज़हबे इस्लाम की हक़्क़ानिय्यत वाज़ेह करने के लिये काफ़ी थीं, मगर दुश्मनाने इस्लाम सब कुछ देखते और जानते बूझते हुवे भी बुग़्ज़ व अदावत के सबब ईमान न लाते थे, लेकिन जिन लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ल्बे सलीम की ने'मत से नवाज़ा था वोह

1 . . . شواھد النبوۃ، رکن رابع، ص ۱۰۰، البدایۃ والنھایۃ، سنۃ اربع من الھجرۃ النبویۃ، غزوۃ الرجیع، ۳/۲۰۶، سیرت ابن ھشام، ذکر یوم الرجیع فی سنۃ ثلاث، ص ۳۷۱

www.dawateislami.net

हिदायत का असर क़बूल करते थे और ईमान की ने'मत से सरफ़राज़ होते थे । सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी उन्हीं खुश नसीब लोगों में से थे । सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बे मिसाल कुरबानी और उन की बद दुआ़ की क़बूलिय्यत को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुलाहज़ा फ़रमाया, नीज़ प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मक्की ज़िन्दगी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने गुज़री थी, इस के इ़लावा आप की बहन उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का अवाइले इस्लाम में ह़बशा की त़रफ़ हिजरत करना और बा'दे अज़्वां नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के निकाह़ में आना, येह वोह तमाम चीज़ें थीं जिस के सबब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल में कुफ़्र से नफ़रत और इस्लाम की मह़ब्बत पैदा हुई, ग़ालिबन येही वोह अस्बाब थे जिन की वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम के ख़िलाफ़ होने वाले इक़्दामात व जंगो जिदाल में शरीक न हुवे और फिर अपने इस्लाम को फ़त्ह़े मक्का के रोज़ ज़ाहिर फ़रमाया जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिदैन के साथ साथ मक्के वाले भी इस्लाम ले आए थे ।

क़बूले इस्लाम

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल्लाह अ़न्सी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : जब हुदैबिया के मौक़अ़ पर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कुरैश ने बैतुल्लाह से रोक कर मक़ामे राह़ में ठहरने पर मजबूर किया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उस मौक़अ़ पर एक मुआ़हदा किया तो उस वक़्त मेरे दिल में इस्लाम आ चुका

www.dawateislami.net

था फिर जब मैं ने इस का ज़िक्र अपनी वालिदा से किया तो उन्हों ने कहा : अपने वालिद की मुख़ालफ़त से डरो या अपनी राह जुदा कर लो और अगर दूसरी सूरत इख़्तियार की तो तुम्हारा खाना तक रोक दिया जाएगा । मेरे वालिद उन दिनों (तिजारत के सिलसिले में) हुबाशा (साल में आठ दिन लगने वाले बाज़ार) गए हुवे थे । मैं इस्लाम ले आया और इसे ख़ुफ़्या रखा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हुदैबिया से रुख़्सत हुवे तो मैं आप पर ईमान ला चुका था और येह बात मैं ने अपने वालिद से छुपा रखी थी फिर जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उ़मरे की क़ज़ा फ़रमाने तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त भी मैं मोमिन था । जब मेरे मुसलमान होने का इ़ल्म मेरे वालिद को हुवा तो उन्हों ने मुझ से कहा : तुम्हारा भाई तुम से बेहतर है क्यूंकि वोह मेरे दीन पर है । मैं ने कहा : "मैं ख़ुद भी ऐसी बरतरी नहीं चाहता ।" फिर जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़त्हे मक्का के मौक़अ़ पर तशरीफ़ लाए तो मैं ने अपना इस्लाम ज़ाहिर किया और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा ख़ैर मक़्दम फ़रमाया और यूं मैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कातिब बन गया ।(1)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ईमाने अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाते हैं : सह़ीह़ येह है कि अमीरे

(1) . . . طبقات ابن سعد، معاویۃ بن ابی سفیان، ۶/۱۲ مکتبۃ الخانجی

www.dawateislami.net

मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ास सुल्हे हुदैबिया के दिन 7 हिजरी (628 ईसवी) में इस्लाम लाए मगर मक्का वालों के ख़ौफ़ से अपना इस्लाम छुपाए रहे, फिर फ़त्हे मक्का के दिन अपना इस्लाम ज़ाहिर फ़रमाया। जिन लोगों ने कहा है कि वोह फ़त्हे मक्का के दिन ईमान लाए वोह ज़ुहूरे ईमान के लिहाज़ से कहा।(1)

इस्लाम क़बूल करने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मज़हबे इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये कोशां हो गए। फ़त्हे मक्का के बा'द होने वाले ग़ज़वए हुनैन में नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शिर्कत फ़रमाई और हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने आप को हवाज़िन के माले ग़नीमत में से सौ(100) ऊंट और चालीस(40) ऊक़िया सोना अ़ता फ़रमाया जिस का वज़्न ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किया था, इसी त़रह़ जंगे यमामा में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शिर्कत फ़रमाई।(2)

आप मुअल्लफ़तुल क़ुलूब में से न थे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रहे ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुअल्लफ़तुल क़ुलूब(3) में से हरगिज़ न थे जैसा कि जलीलुल क़द्र मुफ़स्सिरीन ह़ज़रते

1 ... البدایۃ والنہایۃ، سنۃ ستین من الھجرۃ النبویۃ، وھذہ ترجمۃ معاویۃ الخ، ۵/۲۱۹ ملخصاً، امیر معاویہ، ص۴۱

2 ... البدایۃ والنہایۃ، سنۃ ستین من الھجرۃ النبویۃ، و ھذہ ترجمۃ معاویۃ الخ، ۵/۲۱۹ ملخصاً، تھذیب الاسماء واللغات، معاویۃ بن ابی سفیان، ۲/۴۰۶

3 .....मुअल्लफ़तुल क़ुलूब से मुराद वोह लोग हैं जिन्हें इस्लाम की त़रफ़ माइल करने के लिये ज़कात दी जाए। لغۃ الفقہاء، ص۴۸۱

www.dawateislami.net

इमाम अबू बक्र अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ बिन हुमाम सन्आ़नी, ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन जरीर त़बरी, ह़ज़रते इमाम इब्ने अबी ह़ातिम राज़ी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ) ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुअल्लफ़तुल क़ुलूब में शुमार नहीं किया बल्कि बनू उमय्या के मुअल्लफ़तुल क़ुलूब में सिर्फ़ ह़ज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम ज़िक्र किया है।(1)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद क़ुरतुबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का **मुअल्लफ़तुल क़ुलूब** में से होना बई़द है। वोह उन में से कैसे हो सकते हैं जब कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वह्य और उस की क़िराअत पर मुक़र्रर फ़रमाया और उन्हें अपने आप से मिला लिया नीज़ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त में तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़ालत और भी ज़ियादा ज़ाहिर व वाज़ेह़ है अलबत्ता आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद ज़रूर मुअल्लफ़तुल क़ुलूब में से थे।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : याद रहे कि ग़ज़वए हुनैन के मौक़अ़ पर सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो माल अ़त़ा फ़रमाया था वोह तालीफ़े क़ल्बी के लिये न था बल्कि शाही अ़त़िया था, जैसा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बह्रैन से आने वाले माल

1 ... تفسیر طبری، پ ۱۰، التوبۃ، تحت الآیۃ: ۶۰، ۶/۳۹۹، تفسیر عبدالرزاق، پ ۱۰، التوبۃ، تحت الآیۃ: ۶۰، ۲/۱۵۷، تفسیر ابن ابی حاتم، پ ۱۰، التوبۃ، تحت الآیۃ: ۶۰، ۶/۱۸۲۲

2 ... تفسیر قرطبی، پ ۱۰، التوبۃ، تحت الآیۃ: ۶۰، ۴/۸۸

www.dawateislami.net

में से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी इतना रूपिया अ़त़ा फ़रमाया कि ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उठा भी न सके। इस अ़तिय्ए खुसरुवाना से येह लाज़िम नहीं आता कि ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुअल्लफ़तुल क़ुलूब में दाख़िल हों, ग़रज़ येह कि अ़त़ाया नबविय्या और हैं और तालीफ़े क़ल्ब (या'नी दिलजूई) कुछ और चीज़। अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को येह अ़तिय्या पहली क़िस्म से है। हां येह हो सकता है कि अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को येह अ़तिय्या ह़ज़रते अबू सुफ़्यान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की ज़ियादतिये तालीफ़े क़ल्ब का बाइ़स बन गया हो जैसे कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़त्ह़े मक्का के दिन ए'लान फ़रमा दिया था कि जो अबू सुफ़्यान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के घर में पनाह ले उसे अमान है गोया सय्यिदुना अबू सुफ़्यान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का घर दारुल अमान बना दिया। क्यूं ? सिर्फ़ अबू सुफ़्यान के तालीफ़े क़ल्ब के लिये।[1]

अज़्वाज व औलाद

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़क़्दे निकाह़ में दर्जे ज़ैल चार ख़्वातीन आईं जिन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने औलाद भी अ़त़ा फ़रमाई।

(1) **मैसून बिन्ते बह़्दल कल्बी : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا को बे पनाह फ़ह्मो फ़िरासत और तक़्वा व परहेज़गारी जैसी आ'ला सिफ़ात से नवाज़ा था।[2] शरीअ़त के मुआ़मले में

---

1 ... تطہیر الجنان، الفصل الاول، فی اسلام معاویۃ، ص ۸ ملخصاً، امیر معاویہ، ص ۴۳ ملخصاً
2 ... البدایۃ والنہایۃ، سنۃ ستین من الہجرۃ النبویۃ، ذکر من تزوج من النساء۔۔۔الخ، ۵/ ۲۵۰

www.dawateislami.net

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا बेहद मोहतात़ थीं । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا का शुमार ताबिइ़य्यात में होता है चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन मुह़म्मद सग़ानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैसून बिन्ते बह़्दल अमीरे मुआ़विया की ज़ौजा हैं और ताबिइ़य्यात में शामिल हैं ।[1] ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अक्सर औलाद इन्हीं से है : यज़ीद, अमता रब्बिल मशारिक़, रम्ला, हिन्द ।[2]

(2) **फ़ाख़्ता बिन्ते क़रज़ह :** इन से ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दो औलादें हुईं :

(1) अ़ब्दुर्रह़मान और (2) अ़ब्दुल्लाह ।[3]

(3) **कनूद बिन्ते क़रज़ह :** येह फ़ाख़्ता बिन्ते क़रज़ह की बहन हैं ।[4] रूम के एक जज़ीरे कुबरुस की फ़त्ह़ के वक़्त येह सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ थीं ।[5]

(4) **नाइलह बिन्ते अ़म्मारह अल कल्बिय्यह :**[6]

---

1 ... العباب الزاخر، ۱/۲۰۰، تاج العروس، ۱۲/۵۲۹

2 ... الکامل فی التاریخ، ثم دخلت سنة ستین، ذکر نسبه و کنیته۔۔۔الخ، ۳/۳۷۲، البدایة والنهایة، سنة ستین من الهجرة النبویة، ذکر من تزوج من النساء۔۔۔الخ، ۵/۲۵۰، تاریخ طبری، السنة الستون، ذکر نسائه وولده، ۳/۲۶۴

3 ... البدایة والنهایة، سنة ستین من الهجرة النبویة، ذکر من تزوج من النساء۔۔۔الخ، ۵/۲۴۹، تاریخ ابن عساکر، فاختة بنت قرظة، ۷۰/۲

4 .....जब उन का इन्तिक़ाल हो गया या निकाह़ बाक़ी न रहा तो बा'दे इ़द्दत इन से निकाह़ फ़रमाया ।

5 ... عمدة القاری، کتاب الجهاد، باب غزوة المرأة فی البحر، ۱۰/۱۹۷، تحت الحدیث: ۲۸۷۸، البدایة والنهایة، سنة ستین من الهجرة النبویة، ذکر من تزوج من النساء۔۔۔الخ، ۵/۲۴۹، تاریخ ابن عساکر، کنودین قرظة، ۷۰/۵۴

6 ... تاریخ ابن عساکر، نائلة بنت عمارة، ۷۰/۱۳۵، البدایة والنهایة، سنة ستین من الهجرة النبویة، ذکر من تزوج من النساء۔۔۔الخ، ۵/۲۴۹

www.dawateislami.net

दूसरा बाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया के औसाफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर इन्सान अपनी सिफ़ात के ज़रीए़ जाना जाता है। अच्छा और सच्चा इन्सान हमेशा अपनी अ़ज़ीम सिफ़ात, बुलन्द किरदार और हुस्ने अख़्लाक़ के सबब अपनी पहचान क़ाइम करता है और न सिर्फ़ ज़िन्दगी में बल्कि दुन्या से चले जाने के बा'द भी वोह लोगों के दिलों पर हुकूमत करता है। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आ'ला सिफ़ात का मालिक बनाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बेशुमार ने'मतों से नवाज़ा और ऐसा क्यूं न होता कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिय्ये रह़मत, क़ासिमे ने'मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबी होने का शरफ़ रखते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अख़्लाक़े ह़सना के जामेअ़, अख़्लाक़े रज़ीला से कोसों दूर और इस्लाम का मीनारए नूर थे। ख़ित़ाबत और वा'ज़ो नसीह़त में अपनी मिसाल आप थे, ह़िल्म व बुर्दबारी में अ़ज़ीम शोहरत के ह़ामिल थे। बह़री व बरी जिहाद में दुश्मनों के लिये ख़ौफ़ की अ़लामत मगर ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब थर-थर कांपने वाले थे। चूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मुबारक जमाअ़त में से एक अ़ज़ीम सह़ाबी हैं लिहाज़ा इस मुबारक जमाअ़त का जो मक़ामो मर्तबा नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमाया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने "رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمْ وَرَضُوْا عَنْہُ"[1] फ़रमा कर अबदी रिज़ा

1 ...پ۱۱، التوبۃ: ۱۰۰

www.dawateislami.net

का जो मुज़्दए जां फ़िज़ा सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को सुनाया बिलाशुबा इस में ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी शामिल हैं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी की सारी ज़िन्दगी का इह़ाता करना और उस की ज़िन्दगी के सफ़ह़ात पर बिखरे तमाम मोतियों को जम्अ़ करना एक मुश्किल काम है। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी बेश बहा कमालात और औसाफ़ रखने वाले सह़ाबिये रसूल हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चन्द औसाफ़ मुलाह़ज़ा कीजिये :

(1) आ़जिज़ी व इन्किसारी

अपनी ता'ज़ीम पसन्द न फ़रमाते

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मिज्लज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के पास तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ता'ज़ीमन खड़े हो गए जब कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया और सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से ज़ियादा भारी जिस्म वाले थे, अपने वज़्न के सबब बैठे रहे, ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : बैठे रहो ! बेशक मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना है : "जो शख़्स इस बात को

www.dawateislami.net

पसन्द करे कि लोग उस की ता'ज़ीम के लिये खड़े हो तो वोह अपना ठिकाना जहन्नम बना ले ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह वालों की ता'ज़ीम के लिये खड़ा हो जाना यक़ीनन सआ़दत मन्दी है । जैसा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आने पर अन्सार से फ़रमाया : قُومُوا اِلٰی سَیِّدِکُم या'नी अपने सरदार के लिये खड़े हो जाओ ।[2] इस ह़दीसे पाक के तह़्त ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इस फ़रमाने आ़ली में हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने तमाम अन्सार को दो हुक्म दिये : एक ह़ज़रते (सय्यिदुना) सा'द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की ता'ज़ीम के लिये खड़ा होना, दूसरे उन के इस्तिक़्बाल के लिये कुछ आगे जाना उन को ले कर आना बुज़ुर्गों की आमद पर येह दोनों काम या'नी ता'ज़ीमी क़ियाम और इस्तिक़्बाल जाइज़ बल्कि सुन्नते सह़ाबा हैं बल्कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की सुन्नते क़ौली भी इस लिये اِلٰی سَیِّدِکُم फ़रमाया । मुफ़्ती साह़िब मज़ीद फ़रमाते हैं : जमहूर उ़लमा ने इस ह़दीस की बिना पर फ़रमाया है : बुज़ुर्गों के लिये क़ियामे ता'ज़ीमी मुस्तह़ब है । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते इ़करिमा इब्ने अबू जह्ल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) और ह़ज़रते अ़दी इब्ने ह़ातिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आमद पर उन की इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई के लिये क़ियाम फ़रमाया, ह़ज़रते (सय्यिदा) फ़ातिमा ज़हरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا)

1 ... ابوداؤد، کتاب الادب، باب فی قیام الرجل للرجل، ۴/۴۵۷، حدیث: ۵۲۲۹، مسند الطیالسی، معاویة بن ابی سفیان، الجزء الثانی، ص ۳۱۰، حدیث: ۱۰۵۳ واللفظ له

2 ... بخاری، کتاب الاستئذان، باب قول النبی قوموا الخ، ۴/۱۷۶، حدیث: ۶۲۶۲ ملتقطاً

www.dawateislami.net

हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की तशरीफ़ आवरी पर ता'ज़ीमी क़ियाम करती थीं, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये क़ियामे ता'ज़ीमी बारहा किया है।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वाली रिवायत के तह़्त ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इस ह़दीस ने मुमानअ़ते क़ियाम की तमाम ह़दीसों की शर्ह़ कर दी कि **जो कोई अपने लिये क़ियामे ता'ज़ीमी कराना चाहे उस के लिये न खड़े हो** या इस त़रह़ खड़े होना ममनूअ़ है कि मख़्दूम बैठा हुवा हो और लोग उस के सामने खड़े हों दस्त बस्ता और येह अ़मल तकब्बुर व ग़ुरूर के लिये हो ज़रूरतन न हो तब सख़्त ममनूअ़ है। आ़लिमे दीन के सामने दस्त बस्ता खड़ा होना यूं ही आ़दिल ह़ाकिम के रूबरू खड़ा होना ख़ुसूसन मुक़द्दमा वालों का, यूं उस्ताज़ के सामने शागिर्दों का खड़ा होना मुस्तह़ब है अगर्चे येह ह़ज़रात बैठे हुवे हों और शागिर्द वग़ैरा खड़े हों। हां मख़्दूमीन का तकब्बुरन उन्हें खड़ा करना ख़ुद बैठे रहना येह ममनूअ़ है येह ही यहां मुराद है।(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़कूरा रिवायत में ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी ता'ज़ीम से मन्अ़ फ़रमाया तो येह दर ह़क़ीक़त आप की आ़जिज़ी के सबब था। हमें भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पैरवी करते हुवे ता'ज़ीम का त़लबगार नहीं होना चाहिये, लेकिन अगर कोई शख़्स इल्मे दीन की ता'ज़ीम की

1.....मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 370 बित्तसर्रुफ़
2.....मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 372

www.dawateislami.net

ख़ातिर किसी आ़लिम साहिब के लिये या पीर साहिब या वालिदैन की ता'ज़ीम में खड़ा हो तो येह सिर्फ़ जाइज़ बल्कि दुन्या व आख़िरत की भलाई पाने का सबब है, जैसा कि क़बीलए औस के सरदार ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुवे तो हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अन्सार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : قُوْمُوْا اِلٰی سَیِّدِکُم या'नी अपने सरदार की ता'ज़ीम में खड़े हो जाओ।[1] अलबत्ता ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस अ़मल में हमारे लिये बेशुमार मदनी फूल हैं, हमें अपने दिल पर ग़ौर करना चाहिये कि जब लोग हमारी ता'ज़ीम करते हैं तो हम कितनी जल्दी ख़ुद पसन्दी में मुब्तला हो जाते हैं और दिल की ह़िफ़ाज़त की जानिब तवज्जोह नहीं देते। येह भी याद रखें कि दिल न तो आंख की त़रह़ है कि जिसे किसी ख़त़रे के पेशे नज़र बन्द किया जा सकता हो, न ही ज़बान की त़रह़ है जो दांतों और होंटों की ह़िफ़ाज़त में होती है बल्कि दिल तो मुसलसल ख़त़रात और वस्वसों के निशाने पर होता है इस लिये हमारे अस्लाफ़ क़ल्ब की इस्लाह़ पर बहुत ज़ियादा तवज्जोह दिया करते थे। दिल में पैदा होने वाले ह़सद, तकब्बुर और बुग़्ज़ो कीना जैसे अमराज़ **''बात़िनी बीमारियां''** कहलाती हैं। इन बीमारियों और इन के इ़लाज को जानना फ़र्ज़ है। तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब ''बात़िनी बीमारियों की मा'लूमात'' का मुत़ालआ़ दुन्या व आख़िरत दोनों के लिये मुफ़ीद रहेगा।

1 ... بخاری، کتاب الجهاد والسیر، باب اذا نزل العدو علی حکم رجل، ۲/۳۲۲، حدیث: ۳۰۴۳ ملتقطاً

www.dawateislami.net

(2) ख़ूब से ख़ूबतर बनने का जज़्बा

नसीहत के त़लबगार

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को एक मक्तूब लिखा जिस में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नसीह़त फ़रमाने की यूं इल्तिजा की : आप मुझे वोह बातें लिख दें जिस में मेरे लिये नसीह़त हो । ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जवाबी मक्तूब में इरशाद फ़रमाया : سَلَامٌ عَلَیْكَ आप पर सलामती हो, मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना है कि जो लोगों की नाराज़ी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा तलाश करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे लोगों की मोह़ताजी से मह़फ़ूज़ रखेगा और जो लोगों की रिज़ा की ख़ात़िर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ करेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे लोगों के सिपुर्द कर देगा ।(1)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : ''या'नी जो मुसलमान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये लोगों की नाराज़ी की परवाह न करे तो अगर्चे लोग उस से नाराज़ हो जाएं मगर اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, **अल्लाह** तआ़ला उसे लोगों के शर से बचाएगा, येह अ़मल बहुत ही मुजर्रब है जिस का अब भी तजरिबा हो रहा है ।''

(1) . . . ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، ۱۸۶/۴، حدیث: ۲۴۲۲ مختصراً

www.dawateislami.net

ह़दीसे पाक के दूसरे ह़िस्से की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : "या'नी एक काम से लोग तो ख़ुश होते हों मगर वोह शरअ़न ह़राम हो, येह शख़्स लोगों की ख़ुशनूदी के लिये वोह काम करे, **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी की परवाह न करे वोह उन्हीं लोगों के हाथों ज़लीलो ख़्वार होगा जिन की ख़ुशनूदी के लिये उस ने येह ह़रकत की।"

लोगों के सिपुर्द कर देने की वज़ाह़त करते हुवे फ़रमाते हैं : "फिर वोही लोग उस ख़ुशामदी आदमी को हलाक या ज़लीलो ख़्वार कर देंगे जिन्हें ख़ुश करने को उस ने अपने रब को नाराज़ कर लिया लिहाज़ा सब को राज़ी करने के लिये रब को नाराज़ न करो, किसी की ख़ुशनूदी के लिये गुनाह या कुफ़्र या शिर्क न करो।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मन्सब ख़्वाह किसी भी नोइय्यत का हो अगर उस में लोगों की रिआ़यत और उन की रिज़ा का ख़याल रखा जाए तो साह़िबे मन्सब हुदूदे शरइय्या भी उ़बूर कर सकता है लिहाज़ा उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपनी फ़िक़्ही बसीरत और फ़ह्मो तदब्बुर से जो इ़ल्मो ह़िक्मत से भरपूर मदनी फूल ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़ता फ़रमाया यक़ीनन वोह तमाम ह़ुक्मरानों के लिये राहनुमा उसूल है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के इस फ़रमाने मुबारक में हमारे लिये भी इस्लाह़ का ज़बरदस्त मदनी फूल है, आज हमारे पेशे नज़र सिर्फ़ लोगों की रिज़ा होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 675

www.dawateislami.net

को पसे पुश्त डाल कर गुनाहों भरे कामों में मश्ग़ूल रहते हैं, शादी बियाह की तक़रीबात हों या ख़ुशी ग़मी के दीगर मुआ़मलात, हम अह़कामे इलाही को नज़र अन्दाज़ करते हुवे मह्ज़ लोगों की रिज़ा चाहने के लिये कई गुनाहों भरे काम कर डालते हैं और हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा का कुछ ख़याल नहीं होता, शायद येही वज्ह है आज हमें तंगदस्ती व मोह़ताजी और कई त़रह़ की परेशानियों का सामना है । ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से नसीह़त चाहना बिलाशुबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़जिज़ी व इन्किसारी है, दर ह़क़ीक़त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह अ़मल हम जैसे गुनाहगारों की तरबिय्यत के लिये था ।

(3) ह़िल्म व बुर्दबारी

सब से ज़ियादा ह़लीमुत्त़बअ़

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक दफ़्आ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों में सब से ज़ियादा ह़ौसला मन्द और सब से ज़ियादा ह़लीमुत्त़बअ़ हैं । ह़ाज़िरीने मजलिस ने अ़र्ज़ की : क्या अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से भी ज़ियादा ? तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया : सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने मक़ाम और मर्तबे के ए'तिबार से तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बहुत बेहतर और अफ़्ज़ल हैं

www.dawateislami.net

लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ियादा ह़लीम (बुर्दबार) हैं ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुस्सा बरदाश्त कर लेना और गुस्सा दिलाने वाली बातों पर गुस्सा न करना "ह़िल्म" और "बुर्दबारी" कहलाता है[2] और इस सिफ़त का मालिक बहुत ही अ़ज़ीम इन्सान होता है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "पछाड़ देने वाला ज़ोर आवर नहीं होता बल्कि ज़ोर आवर वोह है जो गुस्से के वक़्त अपने नफ़्स पर क़ाबू पा ले ।"[3] ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ में सिफ़ते ह़िल्म कूट कूट कर भरी हुई थी और येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इम्तियाज़ी औसाफ़ में से एक है जिस का ज़ुहूर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़िन्दगी के हर गोशे में नुमायां नज़र आता है चुनान्चे,

कहीं बुर्दबारी कम न हो जाए !

एक मरतबा एक शख़्स ने ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से सख़्त कलामी की तो किसी ने कहा : "अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चाहें तो इसे इ़ब्रतनाक सज़ा दे सकते हैं ।" इस पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे इस बात से ह़या आती है कि मेरी रिआ़या की किसी ग़लती की वज्ह से मेरा ह़िल्म और बुर्दबारी कम हो जाए !"[4]

---

1 ... السنۃ للخلال، ذکر ابی عبد الرحمن۔۔۔الخ، ۱/۴۴۳، رقم: ۶۸۱

2 .....जन्नती ज़ेवर, स. 132

3 ... بخاری، کتاب الادب، باب الحذر من الغضب، ۴/۱۳۰، حدیث: ۶۱۱۴

4 ... حلم معاویۃ، ص ۲۲، رقم: ۱۴

www.dawateislami.net

सब से बड़ा सरदार कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में सुवाल हुवा : सब से बड़ा सरदार कौन है ? फ़रमाया : "जब कुछ मांगा जाए तो सब से बढ़ कर सख़ी हो, मह़ाफ़िल में हुस्ने अख़्लाक़ के ए'तिबार से अच्छा हो और उसे जितना ह़क़ीर समझा जाए तो उतना ही ह़िल्म व बुर्दबारी का मुज़ाहरा करे ।"(1)

किसी से ज़ाती दुश्मनी न रखते

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अस्वद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जंगे जमल में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के साथ थे लेकिन जंग ख़त्म हो जाने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अस्वद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें अपने पास बिठाया और क़ीमती तह़ाइफ़ से भी नवाज़ा ।(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़िल्म व बुर्दबारी और हुस्ने सुलूक के क्या कहने ! इस ह़िकायत से हमें दो मदनी फूल ह़ासिल हुवे :

1 ... تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر، ۵۹/۱۸۶

2 ... سیر اعلام النبلاء، ابو الاسود الدولی، ۵/۱۱۶ ملخصاً

www.dawateislami.net

(1) हमें चाहिये कि मुसलमानों के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आएं, उन का अदबो एह्तिराम करें क्यूंकि इस के सबब दिलों में महब्बत के जज़्बात परवान चढ़ते हैं जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हज़रते इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को वसिय्यत फ़रमाई : "याद रखो ! अगर तुम लोगों के साथ हुस्ने सुलूक से पेश न आए तो वोह तुम्हारे दुश्मन बन जाएंगे अगर्चे तुम्हारे मां-बाप ही क्यूं न हों। जब तुम लोगों के साथ अच्छा बरताव करोगे तो वोह तुम्हारे मां-बाप की त़रह़ हो जाएंगे अगर्चे तुम्हारे और उन के दरमियान कोई रिश्ता नात़ा न हो।"[1]

(2) हो सके तो वक़्तन फ़ वक़्तन तोह़फ़ा देने का मा'मूल बनाइये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से नाचाक़ियों का ख़ातिमा होगा और महब्बत बढ़ेगी क्यूंकि तोह़फ़ा देने से महब्बत में इज़ाफ़ा होता है जैसा कि हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने महब्बत निशान है : "तोह़फ़ा दिया करो महब्बत बढ़ेगी और बुग़्ज़ दूर होगा।"[2]

(4) शुजाअ़त व बहादुरी

क़ैसारिया का फ़ातेह़

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इम्तियाज़ी औसाफ़ में से एक शानदार वस्फ़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की

1.....इमामे आ'ज़म की वसिय्यतें, स. 25

2 . . . موطاامام مالک، کتاب حسن الخلق، باب ماجاء فی المهاجرة، ۲/۴۰۷، حدیث: ۱۷۳۱ ملخصاً

www.dawateislami.net

शुजाअ़त व बहादुरी भी है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में आप ने मानेईने ज़कात, मुन्किरीने ख़त्मे नबुव्वत, झूटे मुद्दइयाने नबुव्वत और मुर्तदीन के ख़िलाफ़ जिहाद में भरपूर ह़िस्सा लिया और कई कारनामे सर अन्जाम दिये। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में जो फ़ुतूह़ात हुईं इस में ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नुमायां किरदार रहा। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिहाद व फ़ुतूह़ात में मसरूफ़ रहे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रूमियों को शिकस्ते फ़ाश दे कर त़राबुलुस, शाम, अमूरिय्या, अन्त़ाकिया और दीगर अ़लाक़ों को हुदूदे नसरानिय्यत से निकाल कर इस्लामी सल्त़नत में शामिल फ़रमा लिया। इन की अ़ज़ीमुश्शान फ़ुतूह़ात का ज़िक्र **"हुकूमते अमीरे मुआ़विया"**[1] के बाब में आएगा। यहां एक रिवायत का ज़िक्र किया जाता है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ैसारिया[2] के मुह़ाज़ के लिये अमीर मुक़र्रर किया और उन की जानिब एक मक्तूब इरसाल फ़रमाया : **"ह़म्दो सलात के बा'द, मैं ने तुम्हें क़ैसारिया का वाली मुक़र्रर किया, तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मदद त़लब करते हुवे मुक़ाबले के लिये इस अ़लाक़े की त़रफ़ जाओ, لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم का विर्द करते रहो (क्यूंकि)**

1.....सफ़ह़ा नम्बर 95 2.....रूम का बहुत बड़ा शहर

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही हमारा रब है, उसी पर हमारा भरोसा और वोही हमारी उम्मीदों का मर्कज़ है, वोही हमारा मौला है, क्या ही अच्छा मौला और क्या ही अच्छा मददगार है।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ैसारिया की जानिब लश्कर कुशी फ़रमाई और क़ैसारिया का मुह़ासरा कर लिया और कई मरतबा दुश्मन की त़रफ़ पेश क़दमी की, जंग का आग़ाज़ हुवा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस में निहायत ही **शुजाअ़त व बहादुरी** का मुज़ाहरा फ़रमाया, उस जंग में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़ज़ीमुश्शान फ़त्ह़ से सरफ़राज़ फ़रमाया।(1)

(5) ह़ुस्ने अख़्लाक़

सब से अच्छे अख़्लाक़ वाला ह़ाकिम

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मेरी नज़र में कोई ह़ाकिम ऐसा नहीं गुज़रा जो ह़ुस्ने अख़्लाक़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बढ़ कर हो, लोग उन्हें कुशादा वादी के किनारों से दूर करते हैं (या'नी त़रह़ त़रह़ की बातें कर के उन्हें ग़ुस्सा दिलाते हैं) मगर वोह तंगी और रुकावट की वज्ह से न तो ग़ज़बनाक होते हैं और न बुरे अख़्लाक़ अपनाते हैं।(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो शख़्स ज़िम्मेदार हो या किसी मन्सब पर फ़ाइज़ हो, उस का हर त़रह़ के लोगों से वासित़ा

---

1 ... البداية والنهاية، ثم دخلت سنة خمس عشرة، وقعة قيسارية، ۵/۱۲۴

2 ... تاريخ ابن عساكر، معاوية بن صخر ـــ الخ، ۵۹/۱۷۵ ملخصا

www.dawateislami.net

पड़ता है, लिहाज़ा अगर वोह अपने काम को ब हुस्नो ख़ूबी अन्जाम देना चाहता है तो उसे हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर होना बहुत ज़रूरी है। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी ह़ाकिमे वक़्त थे और आप को भी उमूरे हुकूमत सर अन्जाम देने में दुन्या जहां के लोगों से वासित़ा पड़ता था। लोग अच्छी, बुरी और हर क़िस्म की बातें करते थे मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी की बात को ख़ात़िर में लाए बिग़ैर बहर सूरत हुस्ने अख़्लाक़ का मुज़ाहरा फ़रमाते थे।

ख़ुश त़बई भी फ़रमाते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ऐसा मिज़ाह़ महमूद व पसन्दीदा है जिस में न तो किसी की दिल आज़ारी हो और न ही उस में झूट शामिल हो क्यूंकि इस त़रह़ की ख़ुश त़बई तो दर अस्ल मुसलमान की दिलजूई करने का सबब और उसे अपने क़रीब करने का बेहतरीन ज़रीआ़ है येही वज्ह है कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन ह़स्बे मौक़अ़ ऐसा मिज़ाह़ फ़रमा कर लोगों को मानूस फ़रमाया करते और यूं दिल नशीन अन्दाज़ में उन की इस्लाह़ भी फ़रमा देते जैसा कि एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "मेरा घर बनाने में बारह हज़ार ख़जूर के दरख़्तों के ज़रीए़ मदद फ़रमाएं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : आप का घर कहां है ? उस ने अ़र्ज़ की : "बसरा में। आप ने बत़ौरे मिज़ाह़ उस से इरशाद फ़रमाया : "आप का घर बसरा में है या बसरा आप के घर में है ?"(1)

1 ... تاریخ طبری، ثم دخلت سنۃ ستین، ذکر بعض ماحضر نامن ذکر اخبارہ وسیرہ، ۳/۲۶۶

www.dawateislami.net

(6) जज़्बए ख़ैरख़्वाही

उम्मत की ख़ैरख़्वाही का जज़्बा

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अबू जैश नामी एक शख़्स को मह़ूज़ इस लिये मुतअ़य्यन कर रखा था कि वोह लोगों के पास जाए और दरयाफ़्त करे कि आज किसी के यहां बच्चे की विलादत तो नहीं हुई ? या कोई वफ़्द तो नहीं आया ? ताकि बैतुल माल से वज़ीफ़ा जारी करने के लिये उन का नाम लिख लिया जाए ।[1]

हुज्जाज और ग़रीब रोज़ादारों की ख़ैरख़्वाही का इन्तिज़ाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मक्कए मुकर्रमा में लंगर ख़ाना क़ाइम फ़रमाया जिस में ह़ाजियों और रमज़ानुल मुबारक के महीने में फ़ुक़रा के लिये खाना पकाया जाता था ।[2]

(7) फ़िक़्ह व इजतिहाद

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने **ह़ज़रते** सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़क़ीहाना सलाह़िय्यतों के पेशे नज़र आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़क़ीह (मुज्तहिद) फ़रमाया ।[3]

---

1 ... البدایۃ والنہایۃ، سنۃ ستین من الھجرۃ النبویۃ، وھذہ ترجمۃ معاویۃ۔۔۔الخ، ۵/۶۳۸

2 ... اخبار مکۃ للازرقی، رباع بنی عبد الشمس بن عبد مناف، ص ۸۶۴

3 ... بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب ذکر معاویۃ، ۲/۵۵۰، حدیث: ۳۷۶۵ ملتقطاً

www.dawateislami.net

(8) किताबते वह्‌य

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का शुमार अ़रब के उन लोगों में होता था जो लिखना–पढ़ना जानते थे और सलाहिय्यत व क़ाबिलिय्यत में अपना एक मक़ाम रखते थे, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ दौलते ईमान से शरफ़याब हुवे तो नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें अपना ख़ास क़ुर्ब अ़ता फ़रमाया। फ़त्हे मक्का के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ही रहे और तमाम ग़ज़्वात में हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ियादत में जिहादे फ़ी सबीलिल्लाह फ़रमाते रहे।

क़ुरआने मजीद को मह़फ़ूज़ रखने के ज़राएअ़ में से एक अहम ज़रीआ़ "**किताबते वह्‌य**" था, या'नी ज़बाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अदा होने वाली आयाते क़ुरआनी को लिख कर मह़फ़ूज़ करना, इस अहम तरीन काम के लिये सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तक़रीबन चालीस सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर मुश्तमिल एक जमाअ़त मुक़र्रर कर रखी थी जो "**कातिबाने बारगाहे रिसालत**" के मुक़द्दस नाम से जानी जाती थी, जिन में से चन्द के अस्माए मुक़द्दसा येह हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़ुहैरा, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अरक़म, ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब, ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन क़ैस, ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सईद, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़न्ज़ला बिन रबीअ़ असदी, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित, ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

अमीरे मुआविया बिन सुफ्यान और हज़रते सय्यिदुना शुरह्बील बिन हसना वग़ैरहुम (عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان) (1)

बा'ज़ उलमा ने फ़रमाया : हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सिर्फ़ और सिर्फ़ वह्य लिखने पर मामूर थे।(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(9) इत्तिबाए सुन्नत

ज़ियारते कुबूर की सुन्नत अदा फ़रमाई

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में हज या उमरह के लिये तशरीफ़ लाए और मदीनए मुनव्वरा हाज़िरी हुई तो आप भी इत्तिबाए सुन्नत के जज़्बे से शुहदाए उहुद की कुबूर पर तशरीफ़ ले गए क्यूंकि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, हज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर, हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म और सय्यिदुना उस्माने ग़नी (رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن) का साल में एक मरतबा शुहदाए उहुद के मज़ारात पर जाने का मा'मूल था।(3)

आशूरे का रोज़ा रखते

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सुन्नते नबवी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी में आशूरे के रोज़ (दस मुहर्रमुल

1 ... مدارج النبوۃ، ۲/۵۲۹تا۵۲۰ملتقطاً
2 ... السیرۃ الحلبیۃ، باب ذکر المشاھیر من کتابہ، ۳/۵۸۴ملخصاً
3 ... المغازی للواقدی، غزوۃ احد، تسمیۃ من قتل من المشرکین، ۱/۳۱۳ملخصاً

www.dawateislami.net

ह़राम) को रोज़ा रखने का एहतिमाम फ़रमाते और इस की तरग़ीब भी दिलाते थे।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر (10)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना) हर मुसलमान पर ज़रूरी है येही एक ऐसा सबब है जिस से मुआ़शरे के बिगड़े हुवे अफ़राद की इस्लाह़ मुमकिन होती है लोग नेकी के कामों की तरग़ीब पाते और नेकी के कामों में लग कर अपनी दुन्या और आख़िरत संवारते हैं। जिस मुआ़शरे में नेकी का हुक्म करने वाले और बुराइयों से मन्अ़ करने वाले लोग न हों वोह मुआ़शरा गुनाहों और बुरे कामों में मुब्तला हो कर दुन्या व आख़िरत में तबाहो बरबाद हो जाता है। इस ज़िम्न में एक ह़दीसे पाक मुलाह़ज़ा कीजिये :

एक दिन रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाया और मुसलमानों के कुछ गुरौह की ता'रीफ़ फ़रमाई, फिर इरशाद फ़रमाया : "उन लोगों का क्या ह़ाल है जो अपने पड़ोसियों को नहीं समझाते न सिखाते, न नेकी की दा'वत देते और न ही बुराई से मन्अ़ करते हैं और उन लोगों का क्या ह़ाल है जो अपने पड़ोसियों से नहीं सीखते, न उन से समझते और न ही नसीह़त त़लब करते हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की

1 ... مسلم، کتاب الصیام، باب صوم یوم عاشوراء، ص ۵۷۱، حدیث: ۱۲۶ ملخصاً

www.dawateislami.net

क़सम ! चाहिये कि एक क़ौम अपने पड़ोसियों को ज़रूर **दीन** सिखाए, समझाए, नसीह़त करे और नेकी की दा'वत दे, इसी त़रह़ दूसरी क़ौम को चाहिये कि अपने पड़ोसियों से दीन सीखे, समझे और नसीह़त ह़ासिल करे वरना जल्द ही उन्हें इस का अन्जाम भुगतना पड़ेगा।

फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बर शरीफ़ से नीचे तशरीफ़ ले आए, तो सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने (एक दूसरे से) इस्तिफ़्सार किया : "आप के ख़याल में प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन लोगों से कौन से लोग मुराद लिये हैं ?" तो दूसरों ने उन्हें बताया : "उन से मुराद अश्अ़री क़बीले वाले हैं क्यूंकि वोह फ़ुक़हा की क़ौम है और उन के पड़ोसी जफ़ाकार आ'राबी हैं।"

जब येह बात अश्अ़रियों तक पहुंची तो वोह हुस्ने अख़्लाक़, के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप ने एक क़ौम की भलाई और एक की बुराई का ज़िक्र फ़रमाया : हम उन में से किस में हैं ? तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : चाहिये कि एक क़ौम अपने पड़ोसियों को ज़रूर दीन सिखाए, उन्हें समझाए, नसीह़त करे, नेकी की दा'वत दे और बुराई से मन्अ़ करे, इसी त़रह़ दूसरी क़ौम को चाहिये कि अपने पड़ोसियों से दीन सीखे, समझे और उन से नसीह़त त़लब करे वरना जल्द दुन्या में ही इस का अन्जाम भुगतेगी। उन्हों ने दोबारा अ़र्ज़ की :

www.dawateislami.net

या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या हम दूसरे लोगों को नसीह़त करें ? तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येही बात दोहराई, उन्हों ने फिर येही अ़र्ज़ की : क्या हम दूसरों को नसीह़त करें तो ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हां ऐसा ही है । उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की : हमें एक साल की मोहलत दीजिये । तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें एक साल की मोहलत अ़ता फ़रमा दी ताकि येह लोगों को दीन सिखाएं और नसीह़त करें ।(1)

सुन्नत पर अ़मल करने की तरग़ीब

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नेकी के कामों में पेश पेश रहते और दूसरों को भी नेक आ'माल की तरग़ीब देते । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों को ख़िलाफ़े शरीअ़त काम करता देखते तो फ़ौरन इस्लाह़ फ़रमाते । ख़ुद भी सुन्नते नबवी पर अ़मल करते और दूसरों को भी इस की तरग़ीब देते । चुनान्चे, एक मरतबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने दौरे हुकूमत में मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए और यौमे आ़शूरा में ख़ुत़बा दिया तो फ़रमाया : ऐ अह्ले मदीना ! तुम्हारे उ़लमा कहां हैं ? मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस दिन के ह़वाले से येह फ़रमाते सुना है : ''येह आ़शूरे का दिन है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस दिन का रोज़ा फ़र्ज़ नहीं किया, मैं रोज़े से हूं तुम में से जो भी इस दिन का रोज़ा रखना पसन्द करे वोह रोज़ा रखे और जो न रखना पसन्द करे वोह न रखे ।''(2)

1 ... مجمع الزوائد، کتاب العلم، باب فی تعلیم من لا یعلم، ۱/ ۴۰۲، حدیث: ۷۴۸
2 ... مسلم، کتاب الصیام، باب صوم یوم عاشوراء، ص ۵۷۱، حدیث: ۱۲۶

www.dawateislami.net

बाल जोड़ने की मुमानअ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना हुमैद बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अय्यामे ह़ज में मिम्बर पर जल्वा फ़रमा थे, इसी दौरान आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने मुह़ाफ़िज़ के हाथ से बालों का एक गुच्छा लिया और लोगों को मुख़ात़ब करते हुवे फ़रमाया : ऐ अह्ले मदीना ! कहां हैं तुम्हारे उ़लमा ? हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इस से मन्अ़ फ़रमाया है, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि बेशक बनी इस्राईल हलाक हो गए जब उन की औ़रतों ने बाल जोड़ने शुरूअ़ कर दिये ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी ख़िलाफ़त में 51 सिने हिजरी में जब ह़ज फ़रमाया और मदीनए मुनव्वरा आमद हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिदे नबवी में मिम्बरे रसूल पर दौराने ख़ुत़बा येह कलिमात इरशाद फ़रमाए, जिस में आ़म लोगों को तम्बीह करने के साथ साथ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उ़लमाए किराम की तवज्जोह भी इस जानिब मब्ज़ूल करवाई और मज़कूरए बाला फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बयान फ़रमा कर औ़रतों को बाल जोड़ने के अ़मल से रोका ।[2] इसी के मुतअ़ल्लिक़ दूसरी रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद

1 ... بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب حدیث الغار ۲/۴۶۶، حدیث: ۳۴۶۸ ملتقطاً

2 ... ارشاد الساری، کتاب احادیث الانبیاء، باب حدیث الغار ۷/۴۸۱، تحت الحدیث: ۳۴۶۸ ماخوذاً، عمدۃ القاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب حدیث الغار ۱۱/۲۲۳، تحت الحدیث: ۳۴۶۸ ملخصاً

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "बाल जोड़ने वाली, जुड़वाने वाली, गूदने और गुदवाने वाली पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत हो।"(1)

सदरुश्शरीआ़ बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : इन्सान के बालों की चोटी बना कर औ़रत अपने बालों में गूंधे (या'नी जोड़ ले) येह ह़राम है। ह़दीस में इस पर ला'नत आई बल्कि उस पर भी ला'नत की गई है जिस ने किसी दूसरी औ़रत के सर में ऐसी चोटी गूंधी और अगर वोह बाल जिस की चोटी बनाई गई ख़ुद उसी औ़रत के हैं जिस के सर में जोड़ी गई जब भी नाजाइज़ और अगर ऊन या सियाह तागे की चोटी बना कर लगाए तो इस की मुमानअ़त नहीं।(2)

यज़ीद की गिरिफ़्त

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कोई ख़िलाफ़े शरीअ़त काम देख कर पसो पेश से काम न लेते थे और न ही अपने क़रीबी रिश्तेदार और अ़ज़ीज़ों से इस मुआ़मले में नर्म रवय्या इख़्तियार फ़रमाते बल्कि फ़ौरन इस्लाह़ की कोशिश फ़रमाते। चुनान्चे, एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह मन्ज़र मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि आप का बेटा यज़ीद अपने ग़ुलाम को मार रहा है तो सख़्त लहजे में इरशाद फ़रमाया : जान ले जितनी क़ुदरत तू इस ग़ुलाम पर रखता है इस से ज़ियादा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर क़ुदरत रखता है, तेरा बुरा हो ! तू ऐसे शख़्स को मार

1 ... بخاری، کتاب اللباس، باب الوصل فی الشعر، ۴/۸۳، حدیث: ۵۹۳۳

2 .....बहारे शरीअ़त, 3/596

www.dawateislami.net

रहा है जो तुझे रोकने की ताक़त नहीं रखता। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ताक़त व कुदरत के बा वुजूद कीना रखने वालों से इन्तिक़ाम लेने से रुका हुवा हूं क्यूंकि ताक़त के बा वुजूद मुआ़फ़ कर देना ही ज़ियादा बेहतर है।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने बेटे यज़ीद के ख़िलाफ़े शरीअ़त काम पर मुत्तलअ़ हुवे तो फ़ौरन उस की इस्लाह़ की कोशिश फ़रमाई और फ़िक्रे आख़िरत की तरग़ीब देते हुवे उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डराया। हमें भी चाहिये कि जहां ख़िलाफ़े शरअ़ काम होते हुवे देखें ख़ुसूसन अपनी औलाद और घरवालों को तो टाल मटोल और सुस्ती से काम लिये बिग़ैर फ़ौरन अह़सन अन्दाज़ में उन की इस्लाह़ की तरकीब बनाएं क्यूंकि हमें अह़लो इ़याल की इस्लाह़ का भी हुक्म हुवा है कल बरोज़े क़ियामत उन के बारे में भी हम से पूछा जाएगा। चुनान्चे, क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ (پ۲۸، التحریم:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो अपनी जानों और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं*

सरकारे मदीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान भी इस की ताईद करता है कि "तुम में से हर एक निगहबान है और हर एक से उस के मा तह़तों के बारे में पूछा

1 ... البدایۃ والنہایۃ، ثم دخلت سنۃ اربع وستین، وھذہ ترجمۃ یزید بن معاویۃ، ۵/۷۴۰

www.dawateislami.net

जाएगा, आदमी अपने अह्ले ख़ाना पर निगहबान है और इस से क़ियामत के दिन उन के बारे में पूछगछ होगी।"[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपने अह्लो इ़याल की इस्लाह़ और अपने बच्चों की सह़ीह़ इस्लामी तरबिय्यत करने का मदनी ज़ेह्न और कुढ़न अ़त़ा फ़रमाए, बच्चों की सुन्नतों भरी तरबिय्यत और इस्लाह़ का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के तह़्त चलने वाले दारुल मदीना, मद्रसतुल मदीना और जामिअ़तुल मदीना भी हैं यहां त़लबा की क़ुरआनो सुन्नत और दीगर अ़स्री उ़लूम के साथ साथ अख़्लाक़ी तरबिय्यत पर भरपूर तवज्जोह दी जाती है, अगर आप अपने बच्चों को क़ुरआनो सुन्नत का पैकर, अख़्लाक़े ह़सना से मुज़य्यन देखना चाहते हैं तो उन्हें दा'वते इस्लामी के तह़्त चलने वाले मद्रसतुल मदीना में दाख़िल करवाइये और दोनों जहां की भलाइयां पाइये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(11) नमाज़ से महब्बत

शैत़ान ने नमाज़ के लिये जगाया

ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन रूमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मस्नवी शरीफ़ में बयान फ़रमाते हैं : एक रोज़ आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के मह़ल में दाख़िल हो कर किसी ने आप को नमाज़े फ़ज्र के लिये बेदार किया तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने दरयाफ़्त फ़रमाया : तू कौन है ? और किस लिये तू ने मुझे जगाया है ? तो उस ने जवाब दिया : ऐ अमीरे

1 ... بخاری، کتاب الجمعة، باب الجمعة فی القری والمدن، ۱/۳۰۹، حدیث: ۸۹۳ مختصراً

www.dawateislami.net

मुआविया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) मैं शैतान हूं। आप ने हैरान हो कर पूछा : ऐ शैतान ! तेरा काम तो इन्सान से गुनाह कराना है और तू ने मुझे नमाज़ के लिये जगा कर मुझे नेक अमल करने का मौक़अ़ दिया, इस की वज्ह क्या है ? तो शैतान ह़ीलों बहानों से बात टालने लगा, कभी अपने नेक होने का दा'वा करता और कभी कहता कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर ली है, कभी कहता कि मैं नेकी की दा'वत देना पसन्द करता हूं तो कभी कहता कि मैं तो हमेशा से ही नेक हूं, मगर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे पकड़े रखा और जब तक ह़क़ीक़ते ह़ाल से आगाह न हुवे न छोड़ा, बिल आख़िर उस मर्दूद ने बता ही दिया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं जानता हूं कि अगर सोते रहने में आप की नमाज़े फ़ज्र क़ज़ा हो जाती तो आप ख़ौफ़े ख़ुदा से इस क़दर रोते और इस कसरत से तौबा व इस्तिग़फ़ार करते कि ख़ुदा की रह़मत को आप की बे क़रारी व गिर्या व ज़ारी पर रह़म आ जाता और वोह आप की क़ज़ा नमाज़ क़बूल फ़रमा कर अदा नमाज़ से हज़ारों गुना ज़ियादा अज्रो सवाब अ़त़ा फ़रमा देता चूंकि मुझे ख़ुदा के नेक बन्दों से बुग़्ज़ो ह़सद है इस लिये मैं ने आप को जगा दिया ताकि आप को कुछ ज़ियादा सवाब न मिल सके।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(12) सादगी

ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन ह़ल्बस رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़च्चर

1 . . . مثنوی معنوی مع شرح بحر العلوم، دفتر دوم، بیدار کردن ابلیس معاویۃ را۔۔۔الخ، ۲/ ۳۲۸ تا ۳۴۵ مفہوماً

www.dawateislami.net

पर सुवार देखा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ ख़ादिम भी सुवार था। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पैवन्द ज़दा क़मीस ज़ेबे तन फ़रमाई हुई थी और इस ह़ालत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दिमश्क़ के बाज़ार का दौरा फ़रमा रहे थे।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सादगी और आ़जिज़ी व इन्किसारी हमारे अस्लाफ़ की सीरत का एक शानदार पहलू है, और ऐसा क्यूं न होता कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सादगी के पैकर थे। काश सादगी अपनाने की आ़दत और सुन्नत के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की ख़स्लत हमारी ज़िन्दगी में शामिल हो जाए तो बहुत सी ख़राबियों और परेशानियों से जान छूट जाएगी।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़लाल रोज़ी किस निय्यत से त़लब की जाए ?

... **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सय्यिदुल मुतवक्किलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो ह़लाल रोज़ी सुवाल से बचने, घरवालों की ख़बरगीरी करने और पड़ोसियों पर शफ़्क़त की निय्यत से त़लब करेगा वोह क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि उस का चेहरा चौधवीं रात के चांद की त़रह़ (चमकता) होगा और जो ह़लाल रोज़ी माल बढ़ाने, फ़ख़्र व तकब्बुर और दिखावे की निय्यत से त़लब करेगा तो वोह बारगाहे इलाही में इस ह़ाल में ह़ाज़िर होगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से नाराज़ होगा।" (مصنف ابن شیبۃ، کتاب البیوع، باب فی التجارۃ والرغبۃ فیھا، ۵/۲۵۸، حدیث: ۷)

1 ... تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔۔الخ، ۵۹/۱۷۱، سیر اعلام النبلاء، معاویۃ بن ابی سفیان، ۴/۳۰۷

www.dawateislami.net

तीसरा बाब

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया का इ़श्के़ रसूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इ़श्के़ रसूल ईमान की जान और सरमायए इस्लाम है । सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ईमान के जितने बुलन्द दरजे पर फ़ाइज़ थे इसी क़दर मह़ब्बते रसूल से भी सरशार थे और सब ही अपने मख़्सूस अन्दाज़ में अपनी मह़ब्बत का इज़्हार करते थे। येह ह़क़ीक़त है कि जिस से मह़ब्बत होती है तो उस से मन्सूब चीज़ों से भी उतनी ही मह़ब्बत होती है। येह सच्ची मह़ब्बत की अ़लामत भी है । सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इ़श्के़ रसूल मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की चादर से मह़ब्बत

ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन ज़ुहैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मद्ह़ में एक क़सीदा लिख कर बारगाहे रिसालत में सुनाया । रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुश हो कर उन्हें तोह़्फ़तन अपनी चादर मुबारक इनायत फ़रमाई । ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन ज़ुहैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह मुक़द्दस चादर उन के साह़िबज़ादे से बीस हज़ार दिरहम के इ़वज़ ख़रीद ली । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द तमाम ख़ुलफ़ा ईदैन में वोही चादर ओढ़ कर निकलते नीज़ अ़र्सए दराज़ तक वोह चादर सलातीने इस्लाम के पास एक मुक़द्दस तबर्रुक के तौ़र पर बाक़ी रही ।[1]

1 ... الاصابۃ، تذکرۃ کعب بن زھیر، ۵/۴۴۴ ملخصاً، مدارج النبوۃ، ۲/۳۳۸ ملخصاً

www.dawateislami.net

दिन में तारे नज़र आने लगे

नबिय्ये अकरम, रह़मते दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिदे नबवी में एक सुतून से टेक लगा कर ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाते थे, फिर 7 सिने हिजरी में ख़ुत़बे के लिये मस्जिदे नबवी में लकड़ी का मिम्बर रखा गया (ताकि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाए) । ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चाहा कि उस मिम्बर को तबर्रुकन मुल्के शाम ले जाएं, चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब उस मिम्बर को उस की जगह से हटाया तो अचानक सारे शहर में ऐसा अंधेरा छा गया कि दिन में तारे नज़र आने लगे । येह मन्ज़र देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरादा तर्क फ़रमा दिया ।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बे मिसाल कफ़न

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कुर्ता, एक तहबन्द, एक चादर और चन्द मूए मुबारक थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वफ़ात के वक़्त वसिय्यत फ़रमाई कि इन मुक़द्दस कपड़ों में मुझे कफ़न दिया जाए और नाख़ुन शरीफ़ व मूए मुबारक मेरे मुंह और

1 ... مدارج النبوۃ، ۲/۳۲۶ ملخصاً

www.dawateislami.net

नाक पर रख दिये जाएं और मेरे सीने पर फैला दिये जाएं और फिर मुझे اَرْحَمُ الرَّاحِمِیْن के सिपुर्द कर दिया जाए।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और औलियाए उ़ज़्ज़ाम से मन्सूब अश्या की बरकतों के क्या कहने ! चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क़मीज़ की बरकत से ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बीनाई लौट आई,

चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

فَلَمَّاۤ اَنْ جَآءَ الْبَشِیْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِیْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝۹۶

(پ۱۳، یوسف:۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर जब ख़ुशी सुनाने वाला आया उस ने वोह कुर्ता या'क़ूब के मुंह पर डाला उसी वक़्त उस की आंखें फिर आईं (रौशन हो गईं) कहा मैं न कहता था कि मुझे* Allah *की वोह शानें मा'लूम हैं जो तुम नहीं जानते।*

और ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ख़ुद उस कुर्ते को अपने वालिदे मोह़तरम की आंखों पर डालने का इरशाद फ़रमाया था। चुनान्चे, इरशाद होता है :

1 ...تاریخ الخلفاء،معاویة بن ابی سفیان،ص۱۵۸ ملخصاً،تاریخ ابن عساکر،معاویة بن صخر ـــالخ، ۲۲۹/۵۹ ملتقطاً

www.dawateislami.net

اِذْهَبُوْا بِقَمِیْصِیْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِیْ یَاْتِ بَصِیْرًا ۚ

(پ۱۳، یوسف:۹۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मेरा येह कुर्ता ले जाओ, इसे मेरे बाप के मुंह पर डालो उन की आंखें खुल जाएंगी ।*

मक़ामे हुदैबिया नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सरे मुबारक के बाल तरशवा कर खजूर के दरख़्त पर रख दिये । वहां मौजूद तमाम सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن उस दरख़्त के नीचे जम्अ़ हो गए और मूए मुबारक के हुसूल में एक दूसरे से सबक़त करने लगे । ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे अ़म्मारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا कहती हैं कि मैं ने भी चन्द मूए मुबारक ह़ासिल कर लिये । जब कोई बीमार होता तो मैं उन मुबारक बालों को पानी में डुबो कर वोह पानी मरीज़ को पिलाती तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सिह़्हत अ़त़ा कर देता ।[1]

इसी त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों के तबर्रुकात की भी बड़ी बरकतें होती हैं । चुनान्चे, **"अख़बारुल अख़यार"** में है : सख़्त क़ह़त़ साली हुई, लोगों की बहुत दुआ़ओं के बा वुजूद बारिश न हुई । ह़ज़रते सय्यिदुना निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी अम्मी जान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا के कपड़े का एक धागा हाथ में ले कर अ़र्ज़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह उस ख़ातून के दामन का धागा है जिस (ख़ातून) पर कभी किसी ना महरम की नज़र न पड़ी, मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ इसी के सदक़े बारिश बरसा दे ! अभी दुआ ख़त्म

1 ... مدارج النبوۃ، ۲/۲۱۷

www.dawateislami.net

भी न हुई थी कि बादल घिर गए और रिम-झिम रिम-झिम बारिश शुरूअ़ हो गई।[1]

नबिय्ये करीम से निस्बत रखने वाली चीज़ों से महब्बत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! जब एक शै को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे बन्दों से निस्बत हो जाए तो वोह चीज़ ख़ास हो जाती है। दिल में ता'ज़ीम जिस क़दर ज़ियादा होगी बरकतें भी उतनी ही हासिल होंगी। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان हर उस चीज़ से महब्बत फ़रमाते जिसे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे मुबारक से लगने का शरफ़ हासिल हुवा हो और उसे नफ़्अ़मन्द और दाफ़ेउ़ल बला (या'नी बलाओं को दूर करने वाला) समझते, हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मन्सूब हर हर चीज़ से महब्बत फ़रमाते थे। चुनान्चे,

मिम्बर और अ़सा मुबारक से महब्बत

50 **हिजरी** में हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने हज फ़रमाया फिर मदीना तशरीफ़ लाए तो आप ने मस्जिदे नबवी शरीफ़ में मौजूद नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मिम्बर शरीफ़ और अ़सा मुबारक अपने साथ शाम ले जाने का इरादा फ़रमाया, जब इस इरादे की ख़बर हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) को हुई तो आप दोनों ने फ़रमाया : येह दुरुस्त नहीं है कि आप

1 ... اخبار الاخیار، ذکر بعضے از نسائے صالحات، بی بی سارہ، ص ۲۹۴

www.dawateislami.net

मिम्बर को उस जगह से हटा दें जिस जगह इसे नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रखा था और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़सा मुबारक को भी मदीने से जुदा करना ठीक नहीं । इस इल्तिजा पर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना इरादा तर्क फ़रमाया ।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام के आसार व तबर्रुकात बाइसे नुज़ूले रह़मत व बरकात, दाफ़ेए़ आफ़ात व बलिय्यात और शाफ़ेए़ अमराज़ होते हैं । तबर्रुकाते मुक़द्दसा की ता'ज़ीम करना, उन का बारगाहे इलाही में वसीला पेश करना, आफ़ात व बलिय्यात और बीमारियों से नजात के लिये उन से इस्तिफ़ादा करना, दूसरों को इस की तरग़ीब दिलाना और उन की ता'ज़ीम का दर्स देना, उन्हें इ़ज़्ज़त की जगह बा अदब त़रीक़े से रखना, हर त़रह़ की बे अदबी से बचाना बुज़ुर्गाने दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمُبِیْن का मा'मूल है । हमारे अस्लाफ़े किराम यहां तक कि सह़ाबए किराम, मम्बए़ रह़मतो बरकात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मन्सूब अश्या से तबर्रुक ह़ासिल फ़रमाते थे । चुनान्चे,

जुब्बए मुस्त़फ़ा बाइ़से शिफ़ा

सरकारे दो आ़लम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जुब्बए मुबारका से ह़ासिल होने वाली बरकात व शिफ़ा का ज़िक्र करते हुवे ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) फ़रमाती हैं : येह जुब्बा ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास उन के

(1) ... البداية والنهاية، سنة خمسين من الهجرة، ٥/٥٣٤ ملتقطاً

www.dawateislami.net

विसाल तक रहा और उन के पर्दा फ़रमा जाने के बा'द मैं ने ले लिया। नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इसे ज़ेबे तन फ़रमाया करते थे। हम इसे धो कर मरीज़ों को इस का पानी पिलाते हैं जिस से उन्हें शिफ़ा मिल जाती है।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस्ति'माल में रहने वाली चीज़ों से मह़ब्बत थी एक मौक़अ़ पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जुब्बा मुबारक और मूए मुबारक मंगवा कर उस से बरकतें ह़ासिल फ़रमाईं। चुनान्चे,

जुब्बए मुस्त़फ़ा और मूए मुबारक से ह़ुसूले बरकत का अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वालिदा फ़रमाती हैं: एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए तो आप ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाह में पैग़ाम भेजा कि आप मुझे नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इस्ति'माल शुदा मोटा ऊनी कुर्ता और मूए मुबारक इ़नायत फ़रमा दीजिये। ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मेरे ज़रीए़ येह तबर्रुकात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भिजवाए। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह कुर्ता ले कर पहना, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पानी

1 ... مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، باب تحریم استعمال اناء الذھب۔۔۔الخ، ص ۱۱۴۷، حدیث: ۲۰۶۹

www.dawateislami.net

मंगवा कर मूए मुबारक को गुस्ल दे कर वोह ग़स्साला नोश फ़रमाया और बक़िय्या पानी अपने जिस्म पर डाल दिया।[1]

तुझे बुराई नहीं पहुंचेगी

जलीलुल क़द्र बदरी सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दाढ़ी मुबारक के कुछ मुबारक बाल ह़ासिल किये तो नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू अय्यूब ! तुझे बुराई नहीं पहुंचेगी।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तबर्रुकात की दलील मांगना कैसा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तबर्रुकाते मुक़द्दसा के बारे में कहीं शैत़ान येह वस्वसा न दिलाए कि इस बात की क्या दलील है कि येह तबर्रुकात अस्ली हैं ? याद रहे कि ! तबर्रुकात के ह़क़ीक़ी और जा'ली होने के मुतअ़ल्लिक़ बद गुमानी करना मन्अ़ है जैसे अगर कोई मुसलमान अपने आप को सय्यिद कहे तो उस के मुतअ़ल्लिक़ बद गुमानी की आफ़त में मुब्तला न हों क्यूंकि जब किसी के सय्यिद होने या न होने का हमारे पास क़त़ई सुबूत नहीं तो हमें येही हुक्म है कि जो अपने आप को सय्यिद कहे हम आंखें बन्द कर के मान लें, हमें तह़क़ीक़ की ज़रूरत नहीं। इसी त़रह़ किसी बुज़ुर्ग के तबर्रुक का पता चले तो उस शै के वाक़ेई तबर्रुक होने या

1 ... سیر اعلام النبلاء، معاویۃ بن ابی سفیان، ۳/۳۰۵، طبقات ابن سعد، معاویۃ بن ابی سفیان، ۱۸/۲، مکتبۃ الخانجی

2 ... مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، التبرک بشعر النبی، ۴/۵۷۹، حدیث: ۵۹۹۷

www.dawateislami.net

न होने की तह़क़ीक़ की कोई ज़रूरत नहीं, पस उस को तबर्रुक तस्लीम कर लिया जाए अगर कोई झूट बोलता है तो उस का गुनाह उस के सर पर है। क्यूंकि तबर्रुकात की तफ़्तीश के लिये हमारे पास ऐसा कोई पैमाना या आला नहीं जिस से हम उस शै का तबर्रुक होना या न होना मा'लूम कर सकें। (अलबत्ता अगर मसनूई़ होने पर कोई दलील मौजूद हो तो फिर उस का ए'तिबार नहीं होगा।)

आ'ला ह़ज़रत का फ़तवा

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن मसनूई़ तबर्रुकात के मुतअ़ल्लिक़ पूछे गए सुवाल के जवाब में तसरीह़ाते अइम्मए इस्लाम (अइम्मए इस्लाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की वज़ाह़तें) ज़िक्र करने के बा'द इरशाद फ़रमाते हैं जिस का ख़ुलासा कुछ इस त़रह़ है : "अभी तसरीह़ाते अइम्मा से मा'लूम हो लिया कि ता'ज़ीम के लिये न यक़ीन दरकार है न कोई ख़ास सनद, बल्कि सिर्फ़ नामे पाक से उस शै का इश्तिहार (या'नी मश्हूर होना) काफ़ी है। ऐसी जगह बे इदराके सनद ता'ज़ीम से बाज़ न रहेगा मगर बीमार दिल, पुर आज़ार (या'नी बीमारियों भरा) दिल जिस में न अ़ज़मते शाने मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बर वज्हे काफ़ी, न ईमाने कामिल। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَاِنْ یَّكُ كَاذِبًا فَعَلَیْهِ كَذِبُهٗۚ-وَ اِنْ یَّكُ صَادِقًا یُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِیْ یَعِدُكُمْ[1]

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर बिलफ़र्ज़ वोह ग़लत कहते हैं तो उन की ग़लत गोई का वबाल उन पर और अगर वोह सच्चे हैं तो तुम्हें पहुंच जाएगा कुछ वोह जिस का तुम्हें वा'दा देते हैं।

1 ... پ۲۴، المؤمن: ۲۸

www.dawateislami.net

और ख़ुसूसन जहां सनद भी मौजूद हो फिर तो ता'ज़ीम व ए'ज़ाज़ व तकरीम से बाज़ नहीं रह सकता मगर कोई खुला काफ़िर या छुपा मुनाफ़िक़। وَالْعِیَاذُ بِاللّٰہ تَعَالٰی और येह कहना कि आज कल अक्सर लोग मसनूई तबर्रुकात लिये फिरते हैं मगर यूहीं मुजमल बिला तअ़य्युने शख़्स हो या'नी किसी शख़्से मुअ़य्यन पर इस की वज्ह से इल्ज़ाम या बद गुमानी मक़्सूद न हो तो इस में कुछ गुनाह नहीं, और बिला सुबूते शरई किसी ख़ास शख़्स की निस्बत हुक्म लगा देना कि येह उन्हीं में से है जो मसनूई तबर्रुकात लिये फिरते हैं, नाजाइज़ व गुनाह व ह़राम है कि इस का मन्शा (या'नी वज्ह) सिर्फ़ बद गुमानी है और बद गुमानी से बढ़ कर कोई झूटी बात नहीं।"[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सरकार की निस्बत का एहतिराम

ह़ज़रते सय्यिदतुना मारिया क़िब्ति़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को मिस्र व इस्कन्दरिया के बादशाह मुक़ौक़िस क़िब्ती ने बारगाहे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में चन्द हदाया और तहा़इफ़ के साथ बतौ़रे हिबा नज़्र किया था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रज़न्द ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इन ही के शिकमे मुबारक से पैदा हुवे थे। मिस्र के जिस अ़लाक़े से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का तअ़ल्लुक़ था ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस अ़लाक़े का ख़िराज सिर्फ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का इकराम करते हुवे मुआ़फ़ फ़रमा दिया था।[2]

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 21/415

2 ... البدایۃ والنہایۃ، سنۃ احدی عشر، فصل فی ذکر سراریہ۔۔۔الخ، ۴/۲۹۱

www.dawateislami.net

अह्ले बैते अत़हार से मह़ब्बत

ईमान कामिल तब होगा...

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिदे गिरामी से रिवायत करते हैं कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कोई बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसे उस की जान से ज़ियादा मह़बूब न हो जाऊं और मेरी औलाद उसे अपनी औलाद से ज़ियादा मह़बूब न हो जाए और इन की जानें उस की अपनी ज़ात से ज़ियादा मह़बूब न हो जाएं और मेरे घरवाले उसे अपने घरवालों से ज़ियादा मह़बूब न हो जाएं।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक सीरत के कई वाक़िआ़त से अह्ले बैत عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की बे पनाह अ़क़ीदतो मह़ब्बत झलकती है। चन्द वाक़िआ़त मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा से मह़ब्बत

शेरे ख़ुदा से मह़ब्बत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिस त़रह़ दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان

1 ... شعب الایمان، باب فی حب النبی، فصل فی براءتہ۔۔۔الخ، ۲/۱۸۹، حدیث: ۱۵۰۵

www.dawateislami.net

से महब्बत व अ़क़ीदत रखते थे इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) से भी दिली उल्फ़त रखते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़िलाफ़ किसी बात को गवारा न फ़रमाते और अहम व पेचीदा उमूर में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रुजूअ़ फ़रमाते थे, ज़ैल में इस की चन्द झलकियां मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझ से अफ़्ज़ल हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तज़किरा हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! जब अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कलाम फ़रमाते तो आप की आवाज़ में शेर की सी गरज होती, जब ज़ाहिर होते तो चांद की त़रह़ रौशन होते और जब नवाज़ते तो बारिश की त़रह़ बे इन्तिहा अ़त़ा फ़रमाते, बा'ज़ ह़ाज़िरीन ने दरयाफ़्त किया कि आप अफ़्ज़ल हैं या ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ? फ़रमाया : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चन्द नुक़ूश भी आले अबू सुफ़्यान से बेहतर हैं। फिर फ़रमाया : जो शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मद्ह़ में उन की शायाने शान शे'र सुनाए मैं उस को हर शे'र के बदले हज़ार दीनार इन्आ़म दूंगा।" चुनान्चे, ह़ाज़िरीन ने शे'र सुनाए, ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते थे : **"इन अश्आ़र में जो आप ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शानो अ़ज़मत बयान की आप इस से भी ज़ियादा अफ़्ज़ल हैं।"**

www.dawateislami.net

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की शानो अ़ज़्मत में कई अश्आ़र पढ़े ।[1]

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : अबू तुराब (ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) को बुरा भला कहने से तुम्हें किस बात ने रोक रखा है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : वोह तीन बातें जो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में इरशाद फ़रमाई थीं जब तक मुझे वोह याद हैं मैं हरगिज़ उन्हें बुरा नहीं कहूंगा क्यूंकि इन में से हर एक मुझे सुर्ख़ ऊंटों से भी ज़ियादा पसन्दीदा है : (1) एक ग़ज़्वे में नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपना नाइब बना कर पीछे रोक दिया (जंग में शरीक न किया) तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! आप मुझे औ़रतों और बच्चों के पास छोड़ कर जा रहे हैं ? नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि जो मक़ाम ह़ज़रते हारून عَلَیْہِ السَّلَام का ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के लिये था तुम्हारा मेरे नज़्दीक भी वोही मक़ाम हो ? मगर येह कि मेरे बा'द कोई नया नबी नहीं आएगा । (2) और मैं ने ग़ज़्वए ख़ैबर के दिन नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : मैं येह झन्डा उस शख़्स को दूंगा जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल से मह़ब्बत रखता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

[1] ... الناھیۃ، فصل تابع فی فضائل معاویۃ، ص ۵۹ مختصراً

www.dawateislami.net

और उस का रसूल भी उसे महबूब रखते हैं। वोह फ़रमाते हैं कि मेरा इन्तिज़ार त़वील हो गया तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़ली को मेरे पास बुलाओ, उन को बुलाया गया ह़ालांकि उन की आंख में तक्लीफ़ थी। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की आंख में लुआ़बे दहन डाला और झन्डा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इनायत फ़रमाया पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के हाथ पर फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाई। (3) जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ[1] तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली, फ़ात़िमा, ह़सन व ह़ुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) को बुलाया और फ़रमाया : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! येह मेरे अह्ल हैं।[2]

मनाक़िबे अ़ली व अह्ले बैत رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن व ज़बाने अमीरे मुआ़विया

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक दिन मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास मौजूद था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तख़्ते शाही पर तशरीफ़ फ़रमा थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में सरदाराने कुरैश और क़ह़्तान क़बीले से तअ़ल्लुक़ रखने वाले सादाते किराम रौनक़ अफ़रोज़ थे, जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़क़ील बिन अबी त़ालिब और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सने मुज्तबा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ तख़्ते शाही पर जल्वा फ़रमा थे। एक ख़ातून (ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की

---

1 ... پ۳، اٰل عمرٰن: ۶۱

2 ... مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب من فضائل علی بن ابی طالب، ص ۱۳۱۰، حدیث: ۲۴۰۴، ترمذی کتاب المناقب، باب مناقب علی بن ابی طالب، ۵/ ۴۰۷، حدیث: ۳۷۲۵ مختصراً

www.dawateislami.net

बहन) जो पर्दे की आड़ में बैठी थीं, उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुतवज्जेह किया और कहा : ऐ अमीरुल मोमिनीन मेरी रात जागते हुवे गुज़री है, सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से पूछा : क्या किसी तक्लीफ़ की वज्ह से ? जवाब दिया : नहीं (बल्कि) आप और ह़ज़रते अ़ली और आप के वालिद अबू सुफ़्यान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) के बारे में लोगों के इख़्तिलाफ़ करने की वज्ह से मेरी नींद उड़ गई है, आप की शान येह है कि आप के वालिद अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दादा "उमय्या" क़बीलए कुरैश का मग़्ज़ या'नी जौहर थे। और अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में कहा : फिर आप ने इस क़बीले की शानो शौक़त में मज़ीद इज़ाफ़ा किया, सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस दौरान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़क़ील बिन अबी त़ालिब और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सने मुज्तबा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की जानिब मुतवज्जेह थे, येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : जो शख़्स ज़ोहर की नमाज़ (या'नी चार फ़र्ज़) से पहले चार रक्अ़तें (सुन्नतें) और बा'द में चार रक्अ़तें (या'नी दो सुन्नत दो नफ़्ल) पढ़े तो ऐसे शख़्स पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जहन्नम की आग हमेशा के लिये ह़राम फ़रमा देगा।

फिर सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस पर्दा नशीन ख़ातून से फ़रमाया : ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में कहना है तो यूं कहो : वोह क़ह़त़ व तंगदस्ती में खाना खिलाने और कुशादगी करने वाले हैं, कोई उन से जुरअत व बहादुरी में सबक़त न ले जा सका, अच्छी आ़दात और शरफ़ो कमाल में कोई उन से आगे न बढ़ सका, गोया वोह चौकन्ना रहने वाले शेर, मौसिमे बहार

www.dawateislami.net

के आग़ाज़ की त़रह़ सर सब्ज़ो शादाब, नह्रे फ़ुरात की मिस्ल ख़ूबियों के जामेअ़ और चमकते चांद थे। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शेर से मुशाबहत दुश्मन को पछाड़ने के सबब है, मौसिमे बहार से आप की मुशाबहत ख़ूब सूरती व दिलकशी की वज्ह से है जब कि नह्रे फ़ुरात से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुमासलत त़हारत व पाकीज़गी और जूदो सख़ावत में है।

अपने आ'ला किरदार के सबब दूसरों पर ग़ालिब आने वाले सरज़मीने अ़रब के अव्वलीन सरदार (जैसे) अ़ब्दे मनाफ़, हाशिम और अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (जिन की रौशनी से अ़रब जगमगा उठा वोह) भी आप की अ़ज़ीमुश्शान ज़ात पर ग़ालिब न आ सके (या'नी आप भी शानो शौकत में किसी से कम न थे)। ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा हैं। ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा (या'नी ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सबब इ़ज़्ज़तो शरफ़ वाले हो गए। ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ुरआने मजीद की क्या ही अच्छी तर्जुमानी करने वाले हैं जो अब पुख़्ता उ़म्र को पहुंच चुके हैं, जिन की ज़बान बहुत सुवाल करने वाली और दिल ग़ौरो फ़िक्र में डूबा रहने वाला है, आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में बेहतरीन और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ानदान से हैं, येह लोग ख़ुद भी बेहतरीन हैं और मुअ़ज़्ज़ज़ वालिदैन की औलाद हैं। (अपने ख़ानदान के इन फ़ज़ाइलो मनाक़िब को सुन कर) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़क़ील बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने (पर्दे की ओट में बैठी सय्यिदुना अमीरे

www.dawateislami.net

मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहन से) फ़रमाया : ऐ अबू सुफ़्यान की बेटी ! अगर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास दो घर होते जिन में से एक सोने के टुकड़ों से भरा होता और दूसरा भूसे से तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के लिये) सोने वाले घर से इब्तिदा फ़रमाते । येह सुन कर सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ऐ अबू यज़ीद ! मैं ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान क्यूं न बयान करूं जब कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुरैश की इ़ज़्ज़तो शरफ़ और उस के सरदारों में से एक सरदार हैं, क़बीलए कुरैश के लोगों में मुअ़ज़्ज़ज़ और इस की सब से बुलन्दो बाला पहचान हैं । (येह सुन कर) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़क़ील बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दुआ़ए ख़ैरो आ़फ़िय्यत से नवाज़ा ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत में जब ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरबार में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बीले "बनू उमय्या" की ता'रीफ़ की गई जब कि क़बीलए "बनू हाशिम" के दो शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़क़ील बिन अबी त़ालिब और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सने मुज्तबा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) तशरीफ़ फ़रमा थे तो सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस ता'रीफ़ के मुक़ाबले में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये ता'रीफ़ी कलिमात इरशाद फ़रमाए, मज़ीद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के फ़ज़ाइलो मनाक़िब भी बयान फ़रमाए जिस के

1 ... تاریخ ابن عساکر، علی بن ابی طالب، ۴۲/۱۵ ملخصاً

www.dawateislami.net

सबब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़क़ील बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुक्रिया अदा किया लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पैरवी करते हुवे एक दूसरे के मक़ामो मर्तबे का लिह़ाज़ रख कर दिलजूई का सवाब ह़ासिल कीजिये, किसी इस्लामी भाई की कोई बात ना गवार गुज़रे तो सब्र से काम लेते हुवे दरगुज़र से काम लीजिये, ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिन फ़ज़ाइलो मनाक़िब के ज़रीए ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को याद करते थे और सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अह्ले बैते किराम जो ता'रीफ़ी कलिमात ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये फ़रमाते थे उन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या को इसी अन्दाज़ से याद करना चाहिये अगर हम ने इन मदनी फूलों को अपनी ज़िन्दगी में नाफ़िज़ कर लिया तो हमारे मुआ़शरे से बद अ़क़ीदगी और बे अ़मली के तअ़फ़्फ़ुन का ख़ातिमा हो जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

शेरे ख़ुदा के फ़ैसले पर ए'तिमाद

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में एक शख़्स ने मख़्सूस अल्फ़ाज़ में अपनी ज़ौजा को त़लाक़ दे दी, लोगों में उस की त़लाक़ की काफ़ी शोहरत हुई लिहाज़ा वोह येह मस्अला ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा। आप ने मस्अले में ग़ौरो फ़िक्र करने के बा'द त़लाक़ का हुक्म इरशाद फ़रमाया। जब ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दौरे हुकूमत आया तो

www.dawateislami.net

वोह शख़्स आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और यूं अ़र्ज़ की : "अबू तुराब (ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा की कुन्यत) ने मेरे और मेरी ज़ौजा के माबैन इस इस त़रह़ जुदाई करवा दी थी।" येह कह कर उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तमाम सूरते ह़ाल से आगाह किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की तमाम बातें सुन कर इरशाद फ़रमाया : हम अपने क़ाज़ी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ैसले को तुम्हारी वज्ह से रद नहीं कर सकते।[1]

इ़ल्मी मस्अले में शेरे ख़ुदा से रुजूअ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद फ़क़ीह होने के बा वुजूद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में रुजूअ़ फ़रमाया करते चुनान्चे, एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में एक मुक़द्दमा पेश हुवा तो आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मक्तूब लिखा कि इस मस्अले को ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में पेश कर के इस का जवाब दरयाफ़्त कीजिये। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मक्तूब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में पहुंचा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने वोह मस्अला पेश कर दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्अले की तमाम तफ़्सीलात पूछने के बा'द उस का जवाब इरशाद फ़रमा दिया।[2]

---

1 ... السنن الکبری، کتاب آداب القاضی، باب من اجتهد من الحکام۔۔۔الخ، ۱۰/۲۰۵، حدیث: ۲۰۳۷۷ ملخصاً

2 ... مؤطا امام مالک، کتاب الاقضیة، باب القضاء فیمن وجد مع امراته رجلا، ۲/۲۵۹، حدیث: ۱۴۸۱ ملخصاً

www.dawateislami.net

दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत से रुजूअ़ कीजिये

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन के तह़्त बहुत से शो'बाजात ख़िदमते दीन के लिये कोशां हैं। इन में से एक शो'बा **दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत** भी है, येह दा'वते इस्लामी के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम کَثَّرَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है जो लोगों के मसाइल के बारे में शरई राहनुमाई फ़राहम करने में मसरूफ़े अ़मल है। आप भी अपने शरई मसाइल के ह़ल के लिये **दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत** की त़रफ़ रुजूअ़ कीजिये।

मैं अ़ली से महब्बत करता हूं

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया : मैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर था, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी और ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) भी मौजूद थे। अचानक ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم तशरीफ़ लाए, नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : ऐ मुआ़विया ! क्या तुम अ़ली से महब्बत करते हो ? ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : उस

www.dawateislami.net

ज़ात की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये इन से बहुत मह़ब्बत करता हूं । आक़ाए दो जहां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़नक़रीब तुम दोनों के दरमियान आज़्माइश होगी, ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस के बा'द क्या होगा ? शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : (इस के बा'द) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुआ़फ़ी, उस की रिज़ामन्दी और जन्नत में दाख़िला । ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ैसले पर राज़ी हैं और उस वक़्त येह आयत नाज़िल हुई :

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۟ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۟ (1)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह चाहता तो वोह न लड़ते मगर अल्लाह जो चाहे करे (2)

औसाफ़े शेरे ख़ुदा सुन कर आंखे भर आईं

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना ज़रार बिन ज़मरह कनानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आए तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : "मेरे सामने (अमीरुल मोमिनीन) ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की शान बयान करो !" उन्हों ने

1 ... پ۳، البقرۃ: ۲۵۳

2 ... تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر ـــ الخ، ۵۹/ ۱۳۹

www.dawateislami.net

(मा'ज़िरत करते हुवे) कहा : "या अमीरल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! (मैं उन की शान कैसे बयान कर सकता हूं) क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझे इस से मुआ़फ़ नहीं रखते ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं तुम्हें (उस वक़्त तक) मुआ़फ़ नहीं करूंगा (जब तक ह़ज़रते (सय्यिदुना) अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के औसाफ़ बयान नहीं करोगे ।)" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़रार बिन ज़मरह कनानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कहा : "चलें अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझ पर लाज़िम क़रार देते हैं तो फिर सुनिये :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ख़्वाहिशात से दूर रहने वाले और बहुत त़ाक़त वाले थे, फ़ैसला कुन गुफ़्तगू फ़रमाते, लोगों के फ़ैसलों में हमेशा अ़द्लो इन्साफ़ से काम लेते, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इ़ल्मो ह़िक्मत के चश्मे जारी होते, दुन्या और इस की आसाइशों से वह़शत महसूस करते और रात और उस के अंधेरे से उन्सिय्यत ह़ासिल करते ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم हमेशा फ़िक्रे आख़िरत में डूबे रहते, अपना मुह़ासबा करते, पहनने और खाने के लिये जो भी मुयस्सर होता उसी पर राज़ी रहते हुवे क़नाअ़त फ़रमाते ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब हम में से कोई उन की ख़िदमत में जाता तो उस पर शफ़्क़त फ़रमाते, अपने पास बिठाते, हर सुवाल का जवाब इ़नायत फ़रमाते, इतनी शफ़्क़त व मह़ब्बत, उल्फ़त व क़ुर्बत के बा वुजूद भी हम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के रो'ब व

www.dawateislami.net

जलाल की वज्ह से बात न कर पाते, जब मुस्कुराते तो दांत पिरोए हुवे चमकते मोतियों की त़रह़ नज़र आते, नेक लोगों को इ़ज़्ज़तो तकरीम से नवाज़ते, मसाकीन आते तो वोह भी मह़ब्बत की चाश्नी पाते, त़ाक़तवर उन से बात़िल की उम्मीद रख कर मायूसी को गले लगाता और अ़द्लो इन्साफ़ ऐसा कि कमज़ोर लोग अपनी कमज़ोरी के सबब मायूस न होते।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इस बात की गवाही देता हूं कि मैं ने बा'ज़ दफ़्आ़ उन्हें देखा जब रात की तारीकी में सितारे छुप जाते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेह़राब में तशरीफ़ ले जाते और अपनी रीश (दाढ़ी) मुबारक पकड़ कर मुज़्त़रिब व ग़मज़दा शख़्स की त़रह़ आंसू बहाते गोया कि मैं अब भी उन की आवाज़ सुन रहा हूं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कह रहे हैं : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ !" आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिड़ गिड़ाते, फिर दुन्या को ललकारते और फ़रमाते : तू ने मुझे धोका देना चाहा मेरी त़रफ़ बन संवर कर आई, मुझ से दूर हो जा, दूर हो जा, किसी और को धोका दे, मैं तुझे तीन त़लाक़ें दे चुका हूं, तेरी उ़म्र क़लील, तेरी मजलिस ह़क़ीर और तेरा ख़त़रा आसान है, हाए अफ़्सोस ! हाए अफ़्सोस ! रास्ता पुर ख़त़र, ज़ादे राह क़लील और सफ़र त़वील है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़रार बिन ज़मरह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के औसाफ़ बयान करते रहे जिन्हें सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दाढ़ी मुबारक आंसूओं से तर हो गई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन्हें अपनी आस्तीन से पोछते रहे, ह़ाज़िरीन भी

www.dawateislami.net

अपने ऊपर क़ाबू न रख सके और रोने लगे। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : बेशक अबुल ह़सन अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ऐसे ही थे। ऐ ज़रार ! उन पर तुम्हारे ग़म की कैफ़िय्यत कैसी है ?" अ़र्ज़ की : "उस औ़रत की त़रह़ जिस की गोद में उस के बेटे को ज़ब्ह़ कर दिया गया हो न तो उस के आंसू थमते हैं, न ही ग़म में कमी आती है।"(1)

शहादते शेरे ख़ुदा पर आबदीदा हो गए

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत की ख़बर मिली तो निहायत अफ़्सुर्दा हुवे, रोने लगे और फ़रमाया : लोगों ने फ़ज़्ल, फ़िक़्ह और इ़ल्म से कितना कुछ खो दिया है !(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मह़ब्बत

फ़ज़ाइले इमामे ह़सन ब ज़बाने अमीरे मुआ़विया

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने हम नशीनों से फ़रमाया : आबाओ अजदाद, चचा, फूफी और मामूं व ख़ालू के ए'तिबार से लोगों में सब से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ कौन है ?" सब ने अ़र्ज़ की : अमीरुल मोमिनीन ज़ियादा जानते हैं। ह़ज़रते

1 ... الاستیعاب، علی بن ابی طالب، ۳/۲۰۹، حلیۃ الاولیاء، علی بن ابی طالب، ۱/۱۲۶ واللفظ لہ

2 ... البدایۃ والنھایۃ، سنۃ ستین من الھجرۃ النبویۃ، وھذہ ترجمۃ معاویۃ، ۵/۶۳۲ مختصرًا

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दस्ते मुबारक थामा और इरशाद फ़रमाया : येह हैं, (क्यूंकि) इन के वालिद सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब, वालिदा सय्यिदा फ़ात़िमा, इन के नाना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल, सय्यिदा ख़दीजा इन की नानी जान, सय्यिदुना जा'फ़र इन के चचा हैं, सय्यिदा हाला बिन्ते अबी त़ालिब इन की फूफी जान और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की औलाद इन के मामूं और ख़ालाएं हैं ।[1]

एक और मक़ाम पर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सने मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बान या होंट मुबारक का बोसा ले रहे थे । बेशक जिस ज़बान या होंट को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चूमा उसे हरगिज़ अ़ज़ाब नहीं दिया जाएगा ।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मनाक़िबे इमामे ह़सन की तस्दीक़

एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास क़ुरैश की मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्सिय्यात जम्अ़ थीं, उस मौक़अ़ पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : मां-बाप, चचा और फूफी, ख़ाला और ख़ालू, दादा और दादी के ए'तिबार से सब से ज़ियादा

1 ... عقد الفرید، تفضیل معاویۃ للحسن، ۵/۳۴۴

2 ... مسند احمد، مسند الشامیین، حدیث معاویۃ بن أبي سفیان، ۶/۱۷، حدیث: ۱۶۸۴۸

www.dawateislami.net

मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स कौन है ? ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अ़जलान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हुवे और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जानिब इशारा कर के अ़र्ज़ की : "येह सब से अफ़्ज़ल हैं, इन के वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और वालिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते रसूलिल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं, इन के नाना नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और नानी ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं । इन के चचा ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं जो जन्नत में परवाज़ करते हैं, इन की फूफी ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं और मामूं और ख़ालाएं आले रसूल से हैं ।" तमाम लोग ख़ामोश रहे, बनू सहम का एक शख़्स खड़ा हो कर कहने लगा : "आप के कहने पर इब्ने अ़जलान ने येह गुफ़्तगू की है ।" ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अ़जलान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस शख़्स को जवाब देते हुवे कहा : "मैं ने वोह बात कही है जो ह़क़ है, जो दुन्या में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी कर के मख़्लूक़ की रिज़ा चाहेगा वोह दुन्या में अपनी आरज़ू से महरूम रहेगा और आख़िरत में उस पर बदबख़्ती की मोहर लगा दी जाएगी । बनी हाशिम की अस्ल तुम में सब से ज़ियादा क़ाबिले फ़ख़्र है और इन में सब से ज़ियादा ग़ैरत व ह़मिय्यत पाई जाती है ।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जानिब मुतवज्जेह हुवे और अ़र्ज़ की : क्या मैं ने सह़ीह़ कहा है ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : हां, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह सच है ।"(1)

1.....बरकाते आले रसूल, स. 141 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

मुशाबहत की वज्ह से एह़तिराम

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से नक़्ल फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लब और ज़बान चूसते हैं जो लब व ज़बान हुज़ूर ने चूसे हों उस से दोज़ख़ की आग बहुत दूर रहेगी।

मुफ़्ती साह़िब मज़ीद फ़रमाते हैं : इस सुल्ह़ (या'नी ह़ज़रते इमामे ह़सन और ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के वक़्त वाक़िआ़ येह हुवा कि अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने इमामे ह़सन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के पास सादा काग़ज़ भेजा और फ़रमाया कि आप जो शराइते सुल्ह़ चाहें लिख दें मुझे मन्ज़ूर है, इमामे ह़सन ने लिखा कि इतना रूपिया सालाना बत़ौरे वज़ीफ़ा हम को दिया जाया करे और आप के बा'द फिर ख़लीफ़ा हम होंगे, आप ने कहा : मुझे मन्ज़ूर है। चुनान्चे, आप सालाना वज़ीफ़ा देते रहे इस के इ़लावा अक्सर अ़त़िया नज़राने पेश करते रहते थे, एक बार फ़रमाया कि आज मैं आप को वोह नज़राना देता हूं जो कभी किसी ने किसी को न दिया हो। चुनान्चे, आप ने चालीस करोड़ रूपिया नज़राना किये। जब इमामे ह़सन अमीरे मुआ़विया के पास आते तो अमीरे मुआ़विया उन्हें अपनी जगह बिठाते ख़ुद सामने हाथ बांध कर खड़े होते, किसी ने पूछा : "आप ऐसा क्यूं करते हैं?" फ़रमाया कि इमामे ह़सन हम शक्ले मुस्त़फ़ा हैं (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) इस मुशाबहत का एह़तिराम करता हूं।[1]

1.....मिरआतुल मनाजीह़, 8 / 460

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अमीरे मुआविया की त़रफ़ से चार लाख दिरहम का नज़राना

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "आज मैं आप को वोह नज़राना पेश करूंगा जो कभी किसी ने दूसरे को न किया होगा।" चुनान्चे, आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में चार लाख दिरहम पेश फ़रमाए।(1)

ह़ज़रते इमामे ह़सन से ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाने की फ़रमाइश

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से लोगों को ख़ुत़बा देने का कहा तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ख़ुत़बे के दौरान फ़रमाया : ऐ लोगो ! जो मुझे पहचानता है वोह तो पहचानता ही है और जो मुझे नहीं पहचानता मैं उसे बताना चाहता हूं कि मैं ह़सन बिन अ़ली बिन अबी त़ालिब हूं। मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बेटा हूं, मैं बिशारत देने वाले का बेटा हूं, मैं डराने वाले का बेटा हूं, मैं नूर फैलाने वाले चराग़ का बेटा हूं, मैं आस्मान की ज़ीनत का बेटा हूं, मैं उन का बेटा हूं जो रह़्मतुल्लिल आ़लमीन बन कर मबऊ़स हुवे, मैं उन का बेटा हूं जो जिन्नो इन्स की त़रफ़ मबऊ़स हुवे, मैं उन का बेटा हूं जिन के लिये ज़मीन सजदा गाह और त़ाहिर क़रार पाई।

(1) ... سیر اعلام النبلاء، معاویۃ بن ابی سفیان ـــ الخ، ۴/۳۰۹

www.dawateislami.net

मैं उस का बेटा हूं जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस त़रह़ पाक कर दिया जैसा पाक करने का ह़क़ है। मैं उस का फ़रज़न्द हूं जो मुस्तजाबुद्दा'वात है, मैं शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले, इत़ाअ़त किये जाने वाले का बेटा हूं, मैं उस ज़ात का फ़रज़न्द हूं जो (बरोज़े क़ियामत) सब से पहले उठेंगे, जो सब से पहले जन्नत का दरवाज़ा खट-खटाएंगे, मैं उस का फ़रज़न्द हूं जिस की रिज़ा रह़मान عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और जिस की नाराज़ी रह़मान عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी है, मैं उन का बेटा हूं जो करम करते हुवे नहीं उकताते।" ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ऐ अबू मुह़म्मद ! हमारे लिये (येह फ़ज़ाइल) काफ़ी हैं, हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़ज़ीलत से ख़ूब वाक़िफ़ हो चुके हैं।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्तिग़फ़ार की बरकत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास तशरीफ़ ले गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक ख़ादिम ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में अ़र्ज़ की : मैं मालदार आदमी हूं मगर मेरे हां कोई औलाद नहीं, मुझे कोई ऐसी चीज़ बताइये जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे औलाद अ़त़ा फ़रमा दे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : इस्तिग़फ़ार पढ़ा करो। उस ने इस्तिग़फ़ार की ऐसी कसरत की, कि रोज़ाना सात सौ मरतबा इस्तिग़फ़ार पढ़ने लगा।

1 ... ذخائر العقبی، الباب التاسع فی ذکر الحسن والحسین۔۔۔الخ، ص ۲۴۱ ملخصاً

www.dawateislami.net

इस की बरकत से उस शख़्स के दस बेटे हुवे, जब येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'लूम हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस शख़्स से फ़रमाया कि तू ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से येह क्यूं न दरयाफ़्त किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किस वज्ह से येह वज़ीफ़ा इरशाद फ़रमाया ? दूसरी मरतबा जब उस शख़्स को ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल हुवा तो उस ने दरयाफ़्त किया। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : तू ने ह़ज़रते सय्यिदुना हूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का क़ौल नहीं सुना जो उन्हों ने फ़रमाया : "وَیَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ" (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम में जितनी कुव्वत है उस से और ज़ियादा देगा) और ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का येह इरशाद नहीं सुना "وَیُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِیْنَ" (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा) (या'नी कसरते रिज़्क़ और हुसूले औलाद के लिये इस्तिग़फ़ार का ब कसरत पढ़ना क़ुरआनी अ़मल है।)[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से महब्बत

इमामे हुसैन का ह़ल्क़ए दर्स

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इल्मी मजलिस की ता'रीफ़

1 ... تفسیر مدارک، ھود، تحت الآیۃ: ۵۲، ص ۵۰۲ ملخصاً

www.dawateislami.net

करते हुवे एक क़ुरैशी से फ़रमाया : मस्जिदे नबवी में चले जाओ, वहां एक ह़ल्क़े में लोग हमा तन गोश हो कर यूं बा अदब बैठे होंगे गोया उन के सरों पर परन्दे बैठे हैं जान लेना येही ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मजलिस है । नीज़ उस ह़ल्क़े में मज़ाक़ मस्ख़री नाम की कोई शै न होगी ।[1]

सिलए रेह़मी और नर्मी से पेश आने की वसिय्यत

ह़ज़रते अ़ल्लामा अबुल क़ासिम अ़ली बिन ह़सन शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मरज़े विसाल में यज़ीद को बुला कर कुछ वसिय्यतें की थीं उन में एक येह भी थी कि नवासए रसूल, जिगर गोशए बतुल ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर एह़सान व मुरुव्वत की नज़र रखना क्यूंकि वोह लोगों में बहुत मक़्बूल हैं । उन के साथ सिलए रेह़मी करना और उन से नर्मी करना ही तुम्हारे लिये बेहतर होगा ।[2]

येह थोड़ी सी रक़म है

ह़ज़रते दाता गंज बख़्श अ़ली हिजवेरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अपनी तंगदस्ती और फ़क़्रो फ़ाक़ा की शिकायत करने लगा । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

1 ... تاریخ ابن عساکر، حسین بن علی بن ابی طالب، ۱۴/ ۱۷۹ ملخصاً
2 ... تاریخ ابن عساکر، الحسین بن علی بن ابی طالب، ۱۴/ ۲۰۶ مختصراً

www.dawateislami.net

थोड़ी देर बैठ जाओ ! हमारा वज़ीफ़ा आने वाला है, जैसे ही वज़ीफ़ा पहुंचेगा हम आप को रुख़्सत कर देंगे । अभी कुछ ही देर गुज़री थी कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से एक एक हज़ार दीनार की पांच थेलियां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में पेश की गईं । क़ासिद ने अ़र्ज़ की : सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मा'ज़िरत की है कि येह थोड़ी सी रक़म है इसे क़बूल फ़रमा कर ग़रीबों में तक़्सीम फ़रमा दीजिये । ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सारी रक़म उस ग़रीब आदमी के ह़वाले कर दी और उस से मा'ज़िरत फ़रमाई कि आप को इन्तिज़ार करना पड़ा ।(1)

अमीरे मुआ़विया इमामे हु़सैन व ह़सन का इस्तिक़्बाल फ़रमाते

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबू या'कूब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब भी ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात फ़रमाते तो مرحباً وَّأھلاً بِابْنِ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم या'नी ख़ुश आमदीद ऐ इब्ने रसूलिल्लाह कहते हुवे उन का इस्तिक़्बाल फ़रमाते और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में तीन लाख दिरहम पेश करने का हुक्म इरशाद फ़रमाते ।(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का भी مرحباً وَّاَھلاً بِابْنِ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم या'नी ख़ुश आमदीद ऐ इब्ने

1 . . . كشف المحجوب، باب فى ذكر آئمتهم من اهل البيت، ص ٧٧

2 . . . طبقات ابن سعد، الحسين بن على، ٦/ ٤٠٩، مكتبة الخانجي

www.dawateislami.net

रसूलिल्लाह कहते हुवे इस्तिक़्बाल फ़रमाते और उतना ही नज़राना पेश फ़रमाते।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन और इमामे ह़ुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से न सिर्फ़ मह़ब्बत फ़रमाते थे बल्कि इन के फ़ज़ाइलो मनाक़िब भी लोगों में बयान फ़रमाया करते थे। अक्सर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में तह़ाइफ़ पेश फ़रमाते नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन व ह़ुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का आप की त़रफ़ से पहुंचने वाले तह़ाइफ़ का क़बूल फ़रमा लेना भी इस बात की दलील है कि आप के दरमियान अदबो मह़ब्बत का रिश्ता क़ाइम था।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुन्यवी व उख़रवी भलाई की जामेअ़ चार चीज़ें

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "चार चीज़ें जिसे अ़त़ा की गईं उसे दुन्या व आख़िरत की भलाई दे दी गई : (1) शुक्र करने वाला दिल (2) ज़िक्र करने वाली ज़बान (3) मसाइब पर सब्र करने वाला बदन और (4) शोहर की अ़द्मे मौजूदगी में अपने नफ़्स और शोहर के माल में ख़ियानत करने से बचने वाली बीवी।"

(مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، طلق بن حبیب، ۸/۲۴۹، حدیث: ۱، بتقدیم وتاخیر)

1 ... معجم الصحابۃ، معاویۃ بن ابی سفیان، ۵/۳۷۰

www.dawateislami.net

चौथा बाब

हुकूमते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दुआ़ से नवाज़ते हुवे फ़रमाया : اَللّٰھُمَّ عَلِّمْہُ الْکِتَابَ وَالْحِسَابَ وَمَکِّنْ لَہٗ فِی الْبِلَادِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन्हें (या'नी अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को किताब व ह़िसाब का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमा और इन्हें शहरों की हुक्मरानी अ़त़ा फ़रमा।[1]

एक मौक़ए़ पर तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुकूमत से मुतअ़ल्लिक़ यूं नसीह़त फ़रमाई : یَا مُعَاوِیَۃُ اِنْ وُلِّیتَ اَمْرًا فَاتَّقِ اللّٰہَ وَاعْدِلْ या'नी ऐ मुआ़विया ! अगर तुम्हें कोई ज़िम्मेदारी सोंपी जाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरना और अ़द्ल करना।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : सरकारे बह़रो बर, ग़ैबों से बा ख़बर आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान के सबब मुझे ह़ाकिम बनने की आज़माइश में मुब्तला होने का यक़ीन हो गया था और आख़िरेकार मैं इस आज़माइश में मुब्तला हो गया।[2]

ग़ैबों के जानने वाले आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से निकला हुवा जुम्ला पथ्थर पर लकीर की मानिन्द है लिहाज़ा इस दुआ़ए मुस्त़फ़ा और नसीह़त का असर कुछ यूं ज़ाहिर हुवा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

1 ... مجمع الزوائد، کتاب المناقب، باب ماجاء فی معاویۃ۔۔۔الخ، ۹/۵۹۴، حدیث: ۱۵۹۱۸

2 ... مسند احمد، مسند الشامیین، حدیث معاویۃ بن ابی سفیان، ۶/۳۲، حدیث: ۱۶۹۳۱

www.dawateislami.net

को हुकूमत अ़ता फ़रमाई, फ़ुतूहात की ने'मत आप के हाथ आई और इस्लाम की तरक़्क़ी और तरवीजो इशाअ़त का अ़ज़ीम काम भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे हुकूमत में हुवा।

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया हाकिम कैसे बने ?

जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुल्के शाम फ़त्ह़ फ़रमाया तो सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भाई सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को शाम का ह़ाकिम मुक़र्रर फ़रमाया। सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन मुआ़मलात में अपने भाई के हमराह थे। जब ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ विसाल फ़रमा गए तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म तरबिय्यत फ़रमाते

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह से बहुत सारे मदनी फूल ह़ासिल होते और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीने में जल्वा अफ़रोज़ हो कर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तरबिय्यत फ़रमाते, इस की कुछ झलकियां मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

1 ... البداية والنهاية، سنة ستين من الهجرة النبوية، وهذه ترجمة معاوية۔۔۔الخ، ۵/۲۲۰

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म की नसीहत

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तरफ़ एक मक्तूब लिखा जिस में इरशाद फ़रमाया : "हक़ के साथ लाज़िम रहो, हक़ पर क़ाइम रहना तुम्हें उस दिन अहले हक़ के साथ कर देगा जब सिर्फ़ हक़ के साथ ही फ़ैसला होगा।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म के हुक्म पर मुआहदा तहरीर फ़रमाया

जब बैतुल मुक़द्दस के रहने वाले लोगों का एक वफ़्द हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बारगाह में हाज़िर हुवा और सुल्ह व अमान की दरख़्वास्त करने लगा तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की जानिब से जो तहरीरी सुल्हनामा उन्हें अता फ़रमाया गया उसे लिखने वाले हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे उस वक़्त हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद, हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन आस और हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) भी मौजूद थे।(2)(3)

अमीरे मुआविया को उसूले अद्ल से मुतअल्लिक़ मक्तूब

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक मौक़अ़ पर हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को उसूले अद्ल से

---

1 ... سیر اعلام النبلاء، احمد بن حنبل، محنۃ الامام احمد، ۹/۴۷۰

2 ... البدایۃ والنھایۃ، سنۃ اربع عشرۃ من الھجرۃ، فتح بیت المقدس ۔۔۔ الخ، ۵/۱۲۷ ملخصاً

3 .....फ़त्हे बैतुल मुक़द्दस की तफ़्सील जानने के लिये फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म, जिल्द 2, सफ़हा 619 ता 633 का मुतालआ कीजिये।

www.dawateislami.net

मुतअ़ल्लिक़ ब ज़रीअ़ए मक्तूब येह मदनी फूल अ़ता फ़रमाया : "ह़म्दो सलात के बा'द फ़रीक़ैन में फ़ैसला करने से मुतअ़ल्लिक़ मैं तुम्हें येह मक्तूब भेज रहा हूं, इस में अपनी और तुम्हारी भलाई की मैं ने पूरी कोशिश की है, पांच उसूलों पर कारबन्द रहो तुम्हारा दीन सलामत रहेगा और इस में तुम्हें ख़ुश नसीबी ह़ासिल होगी । (1) जब तुम्हारे पास फ़रीक़ैन अपना मुआ़मला ले कर आएं तो मुद्दई़ (अपने ह़क़ का दा'वा करने वाले) से सच्चे गवाह और मुद्दआ़ अ़लैह (जिस के ख़िलाफ़ किसी ह़क़ का दा'वा किया गया) से मज़बूत़ ह़ल्फ़ लो । (2) कमज़ोरों के साथ बहुत हमदर्दी से पेश आओ ताकि उन की हिम्मत बंधे और अपना मुआ़मला तुम्हारे सामने बयान करने में ज़बान खुले । (3) जो शख़्स बाहर से आया हो उस के साथ ख़ुसूसी तआ़वुन करो क्यूंकि ज़ियादा दिन इन्तिज़ार कर के अगर वोह बिग़ैर ह़क़ ह़ासिल किये चला गया तो उस का वबाल ह़क़ मारने वाले पर होगा । (4) मुद्दई़ व मुद्दआ़ अ़लैह के साथ यक्सां सुलूक करो । (5) फ़रीक़ैन में जब तक तुम्हें सह़ीह़ फ़ैसला समझ में न आए उस वक़्त तक कोई फ़ैसला न करो, ब सूरते दीगर फ़रीक़ैन में सुल्ह़ कराने की ह़त्तल मक़्दूर कोशिश करो ।[1]

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया ख़लीफ़ा कैसे बने ?

अ़ह्दे फ़ारूक़ी व अ़ह्दे उ़स्मानी में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शाम के गवर्नर की ह़ैसिय्यत से अपने फ़राइज़ सर अन्जाम देते हुवे इस्लाम की ख़िदमत फ़रमाते रहे और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की शहादत

1 ... البیان والتبیین، باب من اللغز فی الجواب، ۲/۱۵۰

www.dawateislami.net

के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सने मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुवे जो तक़रीबन 6 माह मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ रहने के बा'द इस्लाहे़ उम्मत और ख़ैरख़्वाही के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में ख़िलाफ़त से दस्त बरदार हो गए और यूं ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ममालिके इस्लामिया के "ख़लीफ़ा" बन गए।(1)

हुकूमते अमीरे मुआ़विया पर सय्यिदुना इमामे ह़सन की गवाही

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब मैं ने अपने वालिद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को येह फ़रमाते सुना : दिन रात गुज़रते रहेंगे यहां तक कि अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ह़ाकिम बन जाएंगे तो मुझे यक़ीन हो गया था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह हुक्म हो कर रहेगा इसी लिये मैं ने पसन्द नहीं किया कि मेरे और उन के दरमियान मुसलमानों का ख़ून बहे।(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म के नज़दीक मक़ामे सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिस किसी को भी गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाते तो तक़र्रुरी और बा'द अज़ तक़र्रुरी उस की कारकर्दगी पर भरपूर नज़र रखते, ख़ास तौ़र पर आप गवर्नर की अ़मली कैफ़िय्यत पर ख़ुसूसी नज़र रखते अगर कोई गवर्नर

1 ... عمدۃ القاری، کتاب فضائل الصحابۃ، باب ذکر معاویۃ بن ابی سفیان، ۱۱/۴۸۷ ملخصاً، الثقات لابن حبان، ذکر البیان بان من ذکرناھم ـــ الخ، ۲/۲۳۲ ملخصاً، امیر معاویۃ، ص۴۳ـ۴۴ ماخوذاً، تاریخ بغداد، معاویۃ بن ابی سفیان، ۱/۲۲۱ ملخصاً، تھذیب الاسماء واللغات، معاویۃ بن ابی سفیان، ۲/۴۰۶ ملتقطاً

2 ... معجم الصحابۃ، معاویۃ بن ابی سفیان، ۵/۳۷۲

www.dawateislami.net

उसूलों से इन्हिराफ़ करता तो उसे फ़िलफ़ौर मा'ज़ूल फ़रमा देते। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को गवर्नरी का ओ़ह्दा ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सोंपा था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी बे पनाह ख़ुदादाद सलाह़िय्यत और ग़ैर मा'मूली मक़्बूलिय्यत की बिना पर अ़ह्दे फ़ारूक़ी में इस मन्सब पर फ़ाइज़ रह कर उ़म्दगी के साथ ख़िदमात अन्जाम देते रहे। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अ़ह्दे फ़ारूक़ी में इस मन्सब पर फ़ाइज़ रहना इस बात की दलील है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मे'यारे फ़ारूक़ी पर उतरने वाले बेहतरीन ह़ाकिम और ज़बरदस्त मुन्तज़िम थे।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुल्के शाम तशरीफ़ ले गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप का इस्तिक़्बाल बहुत ही शानो शौकत के साथ किया सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हमराह इस्तिक़्बाल के लिये इतने बड़े लश्कर को देख कर (नाराज़ी फ़रमाते हुवे) इतना एहतिमाम करने की वज्ह दरयाफ़्त फ़रमाई तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस अ़मल की वज़ाह़त फ़रमाते हुवे अ़र्ज़ की : या अमीरल मोमिनीन ! हम जिस सरज़मीन में हैं यहां दुश्मनों के जासूस ब कसरत हैं इसी वज्ह से येह लाज़िम हुवा कि हम उन को हैबत ज़दा करने के लिये बादशाह की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत का इज़हार करें, अगर आप हुक्म देंगे तो हम येह सिलसिला जारी रखेंगे, अगर आप रोकेंगे तो हम फ़ौरन रुक जाएंगे, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप जो चाहें हुक्म इरशाद फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : “न तो हम कोई हुक्म दे रहे हैं और न ही ऐसा करने से रोक रहे हैं।” हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह नर्म रवय्या देख कर एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या अमीरल मोमिनीन ! इस जवान (या'नी हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने कितनी ख़ूब सूरती और दानिशमन्दी से ख़ुद को इस इल्ज़ाम से बरी कर लिया है।” आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : **इन्ही ख़ूबियों और सलाहिय्यतों की बिना पर हम ने येह मन्सब इन्हें सोंपा है।**(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुतअस्सिर होना और आप की सलाहिय्यतों का ए'तिराफ़ करना येह बहुत बड़े ए'ज़ाज़ की बात है क्यूंकि हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का निज़ामे एह़तिसाब निहायत मज़बूत़ था जब कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस मुआ़मले की ब राहे रास्त तफ़्तीश फ़रमाना और जवाब सुन कर इत़मीनान का इज़्हार फ़रमाना इस बात की रौशन दलील है कि हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ में मुआ़मला फ़हमी और इन्तिज़ामी उमूर को ज़बरदस्त त़रीके़ से अन्जाम देने की तमाम तर सलाहिय्यतें मौजूद थीं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 . . . البداية والنهاية، سنة ستين من الهجرة النبوية، معاوية بن سفيان، ۵/ ۲۲۷ ملخصاً، الاستيعاب، معاوية بن سفيان، ۳/ ۴۷۱ ملخصاً

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म का ए'तिमाद

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मौक़अ़ पर लोगों को तम्बीह करते हुवे इरशाद फ़रमाया : मेरे बा'द गुरौह बन्दी से बचना अगर तुम ने ऐसा किया तो याद रखो कि मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) शाम में होंगे।[1] (या'नी अगर तुम ने ऐसा करने की कोशिश की तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तुम्हें ऐसा नहीं करने देंगे।)

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया के तदब्बुर की ता'रीफ़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते : तुम क़ैसरो किस्रा और उन की अ़क़्ल व दानाई का तज़किरा करते हो जब कि मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) मौजूद हैं।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब हुकूमत की बागडोर संभाली तो मजमूई ए'तिबार से इस्लामी सल्त़नत कई मसाइल का शिकार थी जिस की वज्ह से फ़ुतूह़ात का सिलसिला भी रुक चुका था इस के इ़लावा इन्तिज़ामी मुआ़मलात भी इन ह़ालात की वज्ह से बहुत ज़ियादा मुतअस्सिर हुवे थे, ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन तमाम मुआ़मलात को अपनी फ़िरासत से ह़ल

1 ... تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔الخ، ۵۹/۱۲۴

2 ... تاریخ طبری، سنۃ ستین، ذکر بعض ماحضر نا من ذکر اخبارہ وسیرہ، ۳/۲۶۴

www.dawateislami.net

फ़रमाया जिस की बदौलत इस्लामी सल्त़नत का हर शो'बा ही तरक़्क़ी की मन्ज़िलें त़ै करता चला गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक दौर में बेशुमार फ़ुतूह़ात भी हुईं और इस्लामी सल्त़नत को दाख़िली व ख़ारिजी तमाम साज़िशों से भी नजात मिली।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हुकूमते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया के बुन्यादी उसूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कमो बेश चालीस साल तक हुकूमती मन्सब पर जल्वा अफ़रोज़ रहे, इस त़वील अ़र्से में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कामयाब त़र्ज़े हुकूमत की बुन्याद जिन उसूलों पर रखी वोह आज भी हमारे लिये ऐसे रौशन सितारे हैं कि जिन का नूर हमें इनफ़िरादी और इजतिमाई़ कामों में कामयाबी से हम किनार कर सकता है। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के त़र्ज़े हुकूमत से ह़ासिल होने वाले येह मदनी फूल दर अस्ल आप के ख़ुत़बात, फ़ैसलों और मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर की जाने वाली नसीह़तों को सामने रख कर पेश किये जा रहे हैं।

(1) नेकी की दा'वत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! मुआ़शरे से बुराई का ख़ातिमा करने के लिये नेकी की दा'वत सब से ज़ियादा मुअस्सिर ज़रीआ़ है इसी की बरकत से बुराइयों का ख़ातिमा होता और अच्छे आ'माल करने का जज़्बा मिलता है, ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक दौर में भी येह सिलसिला जारी था बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद भी नेकी की दा'वत दिया करते और बुराई से मन्अ़ फ़रमाया करते।

(2) अ़ह्द की पासदारी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़ह्द ख़्वाह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ हो या बन्दे के, सब ही को पूरा करना लाज़िम है येही वज्ह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी अ़ह्द का भरपूर लिह़ाज़ फ़रमाते, एक मरतबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बा'ज़ कुफ़्फ़ार ने मुआ़हदा किया कि वोह इतनी रक़म बत़ौरे जिज़्या अदा किया करेंगे लेकिन उन्हों ने अ़ह्द की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की इस के बा वुजूद **ह़ज़रते** सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन की जानिब पेश क़दमी नहीं फ़रमाई। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में इस बारे में अ़र्ज़ की गई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : धोके का बदला धोके से देने से बेहतर है कि धोके का बदला अ़ह्द पूरा कर के दिया जाए।[1]

(3) شَعَائِرُاللّٰہ से महब्बत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वोह तमाम चीज़ें जिन्हें किसी अल्लाह वाले से निस्बत ह़ासिल हो उन की बरकतों में से सब से बड़ी बरकत येह है कि इन से दिलों को तक़्वा ह़ासिल होता है। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाली

1 ... فتوح البلدان، القسم الثانی، امر السامرۃ، ص ۲۱۶ ملخصاً

www.dawateislami.net

चीज़ों का अदब और हिफ़ाज़त फ़रमाया करते नीज़ आख़िरी वक़्त में भी नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाली चीज़ों को अपने साथ दफ़्न करने की ख़ुसूसी वसिय्यत फ़रमाई।

(4) मसाइल का इद्राक और उन का हल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिला सोचे समझे किसी मस्अले को ह़ल करने से काम बिगड़ जाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हादी और मह्दी होने की दुआ़ फ़रमाई थी जिस की बरकत की झलक आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के फ़ह्मो फ़िरासत के ज़रीए़ ह़ल किये जाने वाले मसाइल में भी नज़र आती है और आप की इसी ख़ुसूसिय्यत की वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه भी आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के आ'ला फ़ह्मो तदब्बुर के क़ाइल थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की मुदब्बिराना सोच की बरकत से उठने वाले फ़ितनों की आग बुझी, फ़ुतूह़ात का सिलसिला दोबारा शुरूअ़ हुवा और अम्नो अमान की सूरते ह़ाल बेहतर हो गई जिस की वज्ह से तिजारत और नक़्ल व ह़रकत में बहुत आसानी हुई और लोगों की मआ़शी ह़ालत भी पहले से कई गुना ज़ियादा बेहतर हुई।

(5) दूसरों के तजरिबे से इस्तिफ़ादा

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पेशे नज़र ख़ुलफ़ाए राशिदीन رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का मुबारक दौर भी था लेकिन इस के साथ साथ आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه माज़ी में गुज़रने वाले बादशाहों, उन के तर्ज़े हुकूमत और तारीख़ को अपने मुत़ालए़ में

www.dawateislami.net

रखा करते यूं उन बादशाहों और उन के तर्ज़े हुकूमत की ख़ामियां और ख़ूबियां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने आ जातीं यूं दूसरों के तजरिबात से फ़ाएदा उठा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लामी हुकूमत को मज़बूत फ़रमाया।

(6) मश्वरे का ख़ैर मक़्दम

मश्वरे से मक़्सूद ऐसी राह मुतअ़य्यन करना होती है जिस पर चल कर इन्सान अपनी मन्ज़िल पर बा आसानी पहुंच सके और इस में बेहतरी ही है क्यूंकि फ़र्दे वाहिद के फ़ैसले में ख़ता का इमकान ज़ियादा रहता है जब के कई ज़ेहनों से सोचा जाने वाला नतीजा एक ह़द तक ग़लती से मह़फ़ूज़ होता है। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी हर अहम मुआ़मले में मुशावरत ही के ज़रीए़ फ़ैसला फ़रमाते और अगर कोई आप को मश्वरा पेश करता तो उस की ह़ौसला अफ़्ज़ाई भी फ़रमाते, यूं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में एक मुस्बत तअस्सुर पैदा हो जाता और सामने वाले को अपनी राए पेश करने में बहुत आसानी हो जाती इस त़रह़ किसी भी बड़ी मुश्किल को ह़ल करने में रुकावट पेश न आती।

(7) बिला तकल्लुफ़ इस्तिफ़ादा

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मसाइल को बर वक़्त ह़ल करने के लिये पैग़ाम रसानी के निज़ाम को मज़ीद बेहतर फ़रमा दिया था जिस की बदौलत आप शाम जैसे दूर दराज़ मुल्क में तशरीफ़ फ़रमा हो कर भी मक्का व मदीना में मौजूद सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से ब ज़रीअ़ए मक्तूब बर वक़्त इस्तिफ़ादा

www.dawateislami.net

फ़रमाया करते । ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह अ़मल इस बात की दलील है कि कामयाब हुक्मरानी का एक नुस्ख़ा येह भी है कि मुत्तक़ी और परहेज़गार ह़ज़रात से अहम मसाइल में बिला तकल्लुफ़ इस्तिफ़ादा किया जाए, इस की बरकत से मुश्किलात का ख़ातिमा किया जाए, इस की बरकत से मुश्किलात का ख़ातिमा करने में बेह़द आसानी पैदा होगी ।

(8) तक़्सीम कारी फ़रमाने वाले

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मरयम अ़म्र बिन मुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि "जिसे **अल्लाह** तआ़ला मुसलमानों की किसी चीज़ का वाली और ह़ाकिम बनाए फिर वोह मुसलमानों की ह़ाजत व ज़रूरत और मोह़ताजी के सामने ह़िजाब कर दे तो **अल्लाह** तआ़ला उस की ह़ाजत व ज़रूरत और मोह़ताजी के सामने आड़ फ़रमा देगा ।" चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों की ह़ाजत पर एक आदमी मुक़र्रर फ़रमा दिया ।(1)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उस वक़्त सुनाया जब कि वोह सुल्त़ान बन चुके थे ताकि वोह इस ह़दीस पर अ़मल करें । मजी़द फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना

(1) . . . ابوداؤد، کتاب الخراج۔۔۔الخ، باب فیما یلزم الامام من امر الرعیۃ الخ، ۳/۱۸۸، حدیث:۲۹۴۸ مختصراً

www.dawateislami.net

अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शहनशाहे कौनो मकान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान सुन कर एक महकमा (ع۔ک۔م) बना दिया जिस के मा तहत हर बस्ती में एक वोह अफ़्सर रखा गया, जो लोगों की मा'मूली ज़रूरतें ख़ुद पूरी करे और बड़ी ज़रूरतें ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तक पहुंचाए। फिर हमेशा उस अफ़्सर (ज़िम्मेदार) से बाज़पुर्स की, कि वोह अपने फ़राइज़ की अन्जाम दही में कोताही तो नहीं करता।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अव्वलन अपने कामों को तक़्सीम करते हुवे (1) शो'बा क़ाइम फ़रमाया (2) उस का ज़िम्मेदार बनाया (3) अपनी ज़िम्मेदारी वाले काम अलग किये (4) और फिर उन कामों की बाज़पुर्स या'नी पूछगछ का सिलसिला भी जारी रखा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तक़्सीम कारी भी फ़रमाई और उस के तक़ाज़े भी पूरे फ़रमाए बिलख़ुसूस बाज़पुर्स या'नी पूछगछ। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस सिलसिले में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" में कारकर्दगी फ़ोर्म और मदनी मश्वरों का एक बेहतरीन मदनी निज़ाम क़ाइम है।

(9) अ़वाम की ख़ैरख़्वाही

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी भी मन्सब पर रहते हुवे सब से ज़ियादा "ख़ैरख़्वाही" के जज़्बे की ज़रूरत रहती है क्यूंकि जज़्बए ख़ैरख़्वाही ही वोह वस्फ़ है जिस से इन्सान के दिल

1.....मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 374 बित्तसर्रुफ़

www.dawateislami.net

में दूसरों से भलाई से पेश आने, आ़जिज़ी इख़्तियार करने और मुश्किल वक़्त में लोगों की फ़रयाद रसी करने जैसे नेक जज़्बात दिल में पैदा होते हैं जिस की बरकत से मा तह़्त अफ़राद के दुख को सुख से बदलना आसान हो जाता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़यात के मुख़्तलिफ़ गोशे हैं और हर गोशा ही लाइक़े तह़सीन और क़ाबिले पैरवी है। इ़श्क़े रसूल के ख़ूब सूरत अन्दाज़, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों से वालिहाना मह़ब्बत, अह्ले बैत से अ़क़ीदतो मह़ब्बत और इ़ल्मी इस्तिफ़ादा करने के लिये मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की जानिब रुजूअ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत के चमकते पहलू हैं, यक़ीनन ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक ह़यात में हमारे लिये बेशुमार मदनी फूल हैं, जिन पर अ़मल करना दीनो दुन्या की भलाइयां पाना है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सुन्हरी दौर की चन्द झलकियां आप भी मुलाह़ज़ा कीजिये :

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़मानए ह़ुकूमत

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तक़रीबन चालीस साल ह़ुकूमत फ़रमाई। ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में चार साल दिमश्क़ के अमीर रहे, बारह साल सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में पूरे मुल्के शाम के वाली रहे, फिर तक़रीबन चार साल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के ज़मानए ख़िलाफ़त

www.dawateislami.net

में और छे माह ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सने मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में शाम के वाली रहे। इस के इ़लावा बीस साल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा रहे यूं तक़रीबन चालीस साल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हुकूमत रही।[1] ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़मानए ख़िलाफ़त में इस्लामी सल्त़नत ख़ुरासान से मग़रिब में वाक़ेअ़ अफ़्रीक़ी शहरों और क़ुबरुस से यमन तक फैल चुकी थी।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुकूमत जितनी फैलती जाती है मसाइल भी बढ़ते जाते हैं। इन मसाइल को ह़ल करने के लिये एक माहिर मुन्तज़िम, और ह़ाज़िर दिमाग़ ह़ाकिम की ज़रूरत होती है। ख़ुरासान से मग़रिब में वाक़ेअ़ अफ़्रीक़ी शहरों और क़ुबरुस से यमन तक के अ़लाक़ों का फ़त्ह़ हो जाना और इतनी बड़ी सल्त़नत के मुआ़मलात का अह़सन त़रीक़े से ह़ल हो जाना ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इन्तिज़ामी सलाह़िय्यत की रौशन दलील है। यक़ीनन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ात में कामयाब ह़ाकिम की तमाम तर सलाह़िय्यतें मौजूद थीं जिस की बदौलत इस्लाम को मज़ीद उ़रूज नसीब हुवा।

लोगों की भलाई का ख़याल फ़रमाते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ اَنْ يَّنْفَعَ اَخَاهُ فَلْيَنْفَعْهُ या'नी तुम में से जो दूसरों को नफ़्अ़ पहुंचाने की इस्तित़ाअ़त रखता हो उसे चाहिये कि वोह उसे नफ़्अ़ पहुंचाए।''[2]

1 ... اسد الغابۃ، معاویۃ بن صخر ابی سفیان، ۵/۲۲۲ ملخصاً

2 ... مسلم، کتاب السلام، باب استحباب الرقیۃ ـــ الخ، ص ۱۲۰۷، حدیث: ۲۱۹۹

www.dawateislami.net

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को जब भी मन्सबे हुकूमत मिलता तो इस ह़दीस की अ़मली तस्वीर बन जाया करते येही वज्ह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे हुकूमत में अ़वाम की ख़ैरख़्वाही के लिये कई काम सर अन्जाम दिये मसलन शाम और रूम के दरमियान वाक़ेअ़ एक मरअ़श नामी अ़लाक़ा ग़ैर आबाद था आप ने वहां फ़ौजी छावनी क़ाइम फ़रमा दी,[1] इसी त़रह़ अन्त़रतूस, मरक़िय्या जैसे ग़ैर आबाद अ़लाक़े भी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोबारा आबाद फ़रमाए[2] नीज़ नए आबाद होने वाले अ़लाक़ों में जिन जिन चीज़ों की ज़रूरत थी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन का भी इन्तिज़ाम फ़रमाया मसलन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को पानी फ़राहम करने के लिये नहरी निज़ाम क़ाइम फ़रमाया।[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने साहि़बज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और साहि़बज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अपनी ममलूका ज़मीन बेच कर क़र्ज़ अदा करने की वसिय्यत फ़रमाई थी लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मदीनए मुनव्वरा में वोह जगह ख़रीद कर उसे दारुल क़ज़ा के लिये वक़्फ़ फ़रमाया।[4]

---

1 ... فتوح البلدان، القسم الثالث، ملطية، ص ٢٦٥

2 ... فتوح البلدان، القسم الثانى، امر حمص، ص ١٨٢ ملخصاً

3 ... فتوح البلدان، القسم الرابع، تمصير البصرة، ص ٤٩٩ ملخصاً

4 ... تاريخ المدينة المنورة، دوربنى زهرة، ١/٢٣٣ ملتقطاً

www.dawateislami.net

रिआ़या की ख़बरगीरी का भी ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बेह़द मुनज़्ज़म निज़ाम बनाया चुनान्चे, जब मुल्के शाम के एक अ़लाक़े नसीबीन में बिच्छूओं की कसरत हो गई तो वहां के गवर्नर ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जानिब रुजूअ़ किया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तजवीज़ पर अ़मल करने की बरकत से बिच्छूओं की ता'दाद में कमी आई।[1]

मेहमान नवाज़ी और ख़ैरख़्वाही का अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में एक वफ़्द ह़ाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के लिये खाना मंगवाया फिर प्याज़ मंगवाई और इरशाद फ़रमाया : इस कुशादगी (या'नी ज़मीन से उगने वाली सब्ज़ियों) को खाओ क्यूंकि इस का इमकान बहुत कम है कि कोई क़ौम किसी ज़मीन (से उगने वाली सब्ज़ियां) खाए इस के बा वुजूद उस ज़मीन का पानी उसे नुक़्सान पहुंचाए।[2]

इल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मेहमान नवाज़ी का अन्दाज़ और ह़िक्मत से भरपूर नसीह़त में इल्मो ह़िक्मत के बे शुमार मदनी फूल हैं जिन में से तीन मदनी फूल मुलाह़ज़ा कीजिये :

---

1 ... معجم البلدان، باب النون والصاد، ۴/۳۹۰ ماخوذاً

2 ... بستان العارفین، الباب السادس والاربعون، فیما جاء فی الاطعمۃ، ص ۵۰

www.dawateislami.net

(1) बाहर से मुलाक़ात के लिये आने वाला शख़्स मेहमान होता है जैसा कि मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : हमारा मेहमान वोह है जो हम से मुलाक़ात के लिये बाहर से आए ख़्वाह उस से हमारी वाक़िफ़िय्यत पहले से हो या न हो। जो हमारे अपने ही मह़ल्ले या अपने शहर में से हम से मिलने आए दो चार मिनट के लिये वोह मुलाक़ाती है मेहमान नहीं, उस की ख़ात़िर तो करो मगर उस की दा'वत नहीं है और जो नावाक़िफ़ शख़्स अपने काम के लिये हमारे पास आए वोह मेहमान नहीं जैसे ह़ाकिम या मुफ़्ती के पास मुक़द्दमे वाले या फ़तवा (लेने) वाले आते हैं येह ह़ाकिम (या मुफ़्ती) के मेहमान नहीं।[1]

(2) किसी भी काम को करने से क़ब्ल अगर अच्छी अच्छी निय्यतें करने की आ़दत हो तो मक़्सद वाज़ेह़ होने की वज्ह से गुनाहों से बचने और सवाब ह़ासिल करने का ज़रीआ़ बन जाता है लिहाज़ा मेहमान नवाज़ी की अच्छी अच्छी निय्यतें फ़रमा लीजिये, मौक़अ़ की मुनासबत से येह निय्यतें भी की जा सकती हैं : (1) रिज़ाए इलाही के लिये मेहमान नवाज़ी करते हुवे पुर तपाक मुलाक़ात के साथ साथ ख़ुशदिली से खाना या चाए वग़ैरा पेश करूंगा (2) मेहमान से ख़िदमत नहीं लूंगा (3) जिस बात में मेहमान की दुन्या व आख़िरत का फ़ाएदा होगा उसे बयान करूंगा (4) गुफ़्तगू करते हुवे ज़बान को झूट, ग़ीबत, चुग़ली वग़ैरा गुनाहों से बचाऊंगा (5) इत्तिबाए़ सुन्नत में मेहमान को दरवाज़े तक रुख़्सत करने जाऊंगा।

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 54

www.dawateislami.net

(3) मेहमान के फ़ाएदे की बात को गुफ़्तगू का हिस्सा बनाइये ताकि मेहमान मानूस भी हो जाए और उस की दिलजूई करने का सवाब भी हाथ आए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुक़द्दस मक़ाम को मस्जिद में तब्दील फ़रमा दिया

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ियाम जब तक मक्कए मुकर्रमा में रहा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के मकान में सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई और ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا समेत तमाम औलाद की विलादत भी इसी मुबारक मकान में हुई नीज़ येही वोह मकान था कि जिस से नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मदीना की जानिब हिजरत फ़रमाई इस मकान को दारे ख़ुज़ैमा के नाम से शोहरत ह़ासिल रही। बा'द में येह मकान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़क़ील बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की तह़वील में था जिसे ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ख़रीद कर मस्जिद के लिये वक़्फ़ कर दिया, फिर ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की जाए विलादत होने की वज्ह से मौलिदे फ़ातिमा के नाम से मश्हूर हुवा, मस्जिदे ह़राम के बा'द येह मक़ाम मक्कए मुकर्रमा में सब से अफ़्ज़ल है।[1] अमीरे अह्ले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस मुतबर्रक व मुक़द्दस मक़ाम को

1 ... تاریخ الخمیس، وفاۃ الخدیجۃ الکبری، ۱/۳۰۲

www.dawateislami.net

मिटा देने पर अपने दुख का इज़हार फ़रमाते हुवे यूं तह़रीर फ़रमाते हैं : सद करोड़ बल्कि अरबों खरबों **अफ़्सोस ! कि अब इस मकाने वाला शान के निशान तक मिटा दिये गए हैं और लोगों के चलने के लिये यहां हमवार फ़र्श बना दिया गया है।** मर्वह की पहाड़ी के क़रीब वाक़ेअ़ बाबुल मर्वह से निकल कर बाईं तरफ़ (LEFT SIDE) ह़सरत भरी निगाहों से सिर्फ़ इस मकाने अ़र्श निशान की फ़ज़ाओं की ज़ियारत कर लीजिये।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़दीसे पाक पर अ़मल का जज़्बा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रिवायत बयान की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अपनी रिआ़या की ह़ाजत पूरी करे और उन से मोह़ताजी व तंगदस्ती दूर करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर तंगदस्ती व मोह़ताजी के दरवाज़े बन्द फ़रमा देगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह फ़रमाने आ़लीशान सुनते ही एक शख़्स को लोगों की ह़ाजतें और ज़रूरतें पूरी करने के लिये मुक़र्रर फ़रमा दिया।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन की मुबारक सीरत के भी क्या कहने ! ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जैसे ही फ़रमाने रिसालत सुना तो बिला ताख़ीर इस

1 .....आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 240

2 ... ترمذی، کتاب الاحکام، باب ماجاء فی امام الرعیۃ، ۳/۶۴، حدیث: ۱۳۳۷

www.dawateislami.net

पर अ़मल फ़रमा कर इस पर मिलने वाले अज्रे अ़ज़ीम का ख़ुद को ह़क़दार बना लिया। सीरते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर अ़मल करते हुवे हमें भी चाहिये कि जब कोई नेकी की बात सुनें तो शैत़ान के वार को नाकाम बनाते हुवे फ़ौरन अ़मल कर लें।

सय्यिदुना मिस्वर बिन मख़रमा का इत़मीनान

ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्वर बिन मख़रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक वफ़्द के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास तशरीफ़ लाए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : आप मुझे मेरे बारे में बताइये। ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्वर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुछ उ़यूब और ख़ामियों का ज़िक्र फ़रमाया जिन्हें सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : ख़ुद को ख़त़ाओं से बरी मत समझिये, क्या आप की ऐसी ख़त़ाएं नहीं कि बारगाहे इलाही से जिन के न बख़्शे जाने पर आप को हलाकत का ख़ौफ़ हो। ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्वर बिन मख़रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : बेशक मेरी वोह ख़त़ाएं हैं कि जिन की बख़्शिश न हुई तो मैं उन के सबब हलाक हो जाऊंगा। फिर सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मज़ीद वज़ाह़त करते हुवे फ़रमाया : तो फिर आप इस बात के ज़ियादा ह़क़दार नहीं हैं कि मुझ से ज़ियादा मग़फ़िरत की उम्मीद रखें, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम मेरे ज़िम्मे रिआ़या की इस्लाह़, ह़ुदूद क़ाइम करने, लोगों में सुल्ह़ करवाने, राहे ख़ुदा में जिहाद करने और वोह बड़े बड़े उमूर हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही शुमार कर सकता है और हम उन उमूर को आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के ज़िक्रकर्दा उ़यूब और ख़त़ाओं से ज़ाइद शुमार नहीं करते। बिलाशुबा

www.dawateislami.net

मैं ऐसे दीन पर हूं जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नेकियां क़बूल फ़रमाता है और गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमाता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और ग़ैरुल्लाह में से किसी एक को चुनने का इख़्तियार मिले तो मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ग़ैरुल्लाह पर तरजीह़ दूंगा। ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्वर बिन मख़रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह वज़ाह़त सुन कर मैं सोच में पड़ गया और इस बात से आगाह हुवा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझ पर ग़ालिब आ गए हैं।" इस वाक़िए़ के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये दुआ़ए ख़ैर फ़रमाते।[1] ह़ज़रते सय्यिदुना उ़रवा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्वर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तज़किरा दुआ़ए रह़मत ही के साथ सुना।[2] जब कि तारीख़े बग़दाद में है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत फ़रमाते।[3]

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया की दिन भर की मसरूफ़ियात

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दिन में पांच बार लोगों से मुलाक़ात फ़रमाते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़े फ़ज्र के बा'द कुरआने करीम की तिलावत फ़रमाते, फिर घर तशरीफ़

1 ... معجم الصحابة، معاوية بن ابی سفيان، ۵/۳۷۰ ملتقطاً، البداية والنهاية، سنة ستين من الهجرة النبوية، وهذه ترجمة معاوية۔۔۔الخ، ۵/۱۳۷ ملتقطاً

2 ... سير اعلام النبلاء، فصل من صغار الصحابة، ۴/۴۸۰

3 ... تاريخ بغداد، معاوية بن ابی سفيان، ۱/۲۲۳

www.dawateislami.net

ले जा कर घरेलू उमूर अन्जाम देते और उस से फ़राग़त के बा'द चार रक्अ़त (इशराक़, चाश्त की) नमाज़ अदा फ़रमाते, दिन भर में कई ज़रूरत मन्द आप की बारगाह में हाज़िर होते, कोई यूं अ़र्ज़ करता : "मुझ पर ज़ुल्म हुवा है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते : "इस की मदद करो।" कोई कहता : "मेरे साथ ना इन्साफ़ी की गई है।" इरशाद होता : "इस के मुआ़मले की तह़क़ीक़ करो।" मज़ीद येह भी इरशाद फ़रमाते : "जो लोग हम तक नहीं पहुंच सकते उन की ज़रूरिय्यात हम तक पहुंचाओ।" जिन अफ़राद को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों की ख़बरगीरी के लिये मुक़र्रर फ़रमाया हुवा था उन में से कोई यूं अ़र्ज़ करता : फ़ुलां शख़्स शहीद हो गया है। इरशाद फ़रमाते : "उस के बच्चों का वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दो।" कोई येह बताता : "फ़ुलां आदमी काफ़ी अ़र्से से अपने घर से ग़ाइब है।" फ़रमाते : "उस के घरवालों का ख़याल रखो और उन की ज़रूरिय्यात को पूरा करो।" यूं ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पूरा दिन लोगों की ख़ैरख़्वाही, दाद रसी और उन की बर वक़्त मदद करने में सर्फ़ होता।[1]

इन जैसा न पाओगे

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ाला बिन उ़बैद अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बैअ़ते रिज़वान में शरीक थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र बहुत कम थी। मिस्र की फ़त्ह़ में भी शरीक थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ैर मौजूदगी में नाइब

1 ... مروج الذهب، من اخلاق معاوية وعاداته، ۳/ ۱۳ ملخصاً

www.dawateislami.net

थे। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के जनाज़े में शरीक हुवे और जनाज़े को कन्धा देते हुवे अपने फ़रज़न्द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : मेरे पीछे चले आओ क्यूंकि फिर कभी इन जैसे के जनाज़े को कन्धा देने की सआ़दत नहीं पाओगे।[1] इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मुत्त़लिब बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जनाज़ा भी ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़ाया।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमानों की नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत बाइ़से सआ़दत और ह़ुसूले सवाब का ज़रीआ़ है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो नमाज़ अदा करने तक जनाज़े में शरीक रहा उस के लिये एक क़ीरात़ सवाब है और जो तदफ़ीन तक शरीक रहा उस के लिये दो क़ीरात़ सवाब है। पूछा गया : क़ीरात़ क्या है ? फ़रमाया : जबले उ़ह़ुद जितना है।[3]

इस फ़ज़ीलत को ह़ासिल करने के लिये हमें भी चाहिये कि जब भी किसी मुसलमान भाई की वफ़ात का सुनें तो कोशिश कर के उस की नमाज़े जनाज़ा में ज़रूर शिर्कत करें इस का मा'मूल

1 ... سیر اعلام النبلاء، فضالۃ بن عبید۔۔۔الخ، ۳/۲۸۰ ملخصاً
2 ... اسد الغابہ، عبد المطلب بن ربیعۃ، ۳/۵۲۶
3 ... مسلم، کتاب الجنائز، باب فضل الصلوۃ علی الجنازۃ۔۔۔الخ، ص ۴۷۲، حدیث: ۹۴۵

www.dawateislami.net

बनाने की बरकत से वुरसा की दिलजूई का सवाब भी हाथ आएगा और क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी का ज़ेहन भी बनेगा।

अमीरे अहले सुन्नत का मा'मूल

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हुसूले सवाब का कोई मौक़अ़ हाथ से जाने नहीं देते, जब हिफ़ाज़ती उमूर के मसाइल नहीं थे तो आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी बे पनाह मसरूफ़ियात के बा वुजूद कसरत के साथ जनाज़ों में शिर्कत फ़रमाते, मुर्दों को अपने हाथों से ग़ुस्ल देते, कफ़न पहनाते, नमाज़े जनाज़ा की इमामत फ़रमाते और ता'ज़िय्यत व ईसाले सवाब के ज़रीए़ उन की दिलजूई फ़रमाते। आप के हुस्ने अख़्लाक़ की कशिश नेकियों से दूर और गुनाहों में मुब्तला अफ़राद को क़रीब ले आती और वोह भी नेकी की दा'वत को आ़म करने के लिये आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के शरीके सफ़र बन जाते।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हिक्मत भरे मदनी फूल

हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से जारी होने वाले चश्मए इ़ल्मो हिक्मत से सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ख़ूब सैराब हुवे, और बा'दे अज़ां उम्मत को सैराब करने वाले बन गए, ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो इस मुक़द्दस जमाअ़त के चमकते दमकते सितारे हैं,

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से भी मुतअ़द्दिद हिक्मत भरे मदनी फूल मन्क़ूल हैं, जिन में से चन्द ज़ैल में ज़िक्र किये जाते हैं।

हासिद कब राज़ी होगा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी की दीनी या दुन्यावी ने'मत के ज़वाल (या'नी उस के छिन जाने) की तमन्ना करना या येह ख़्वाहिश करना कि फ़ुलां शख़्स को येह ने'मत न मिले, इस का नाम ह़सद है।[1] ह़सद वोह बात़िनी मरज़ है जो ह़ासिद का चैन व सुकून बरबाद कर देता है और जब तक वोह ने'मत मह़सूद (या'नी जिस से ह़सद किया जाए) से छिन नहीं जाती उसे किसी सूरत चैन नहीं आता चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मैं ह़ासिद के सिवा हर शख़्स को राज़ी कर सकता हूं क्यूंकि **ह़ासिद तो ज़वाले ने'मत से ही राज़ी होगा** !"[2] ह़सद से पैदा होने वाली येह बेचैनी ह़ासिद को मा'मूली शकर रंजी से ले कर क़त्लो ग़ारत गरी तक ले जाती है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़क़्लमन्द कौन ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी में आने वाली मुश्किलात से जो शख़्स सबक़ सीखता है और उन पर सब्र करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस की मदद फ़रमाता है और येह सबक़ आमोज़ वक़्ती आज़माइश उस के लिये कामयाबी का ज़ीना बन

1 . . . الحديقة الندية، الخلق الخامس عشر۔۔۔الخ، ١/٦٠٠

2 . . . الزواجر عن اقتراف الكبائر، الباب الاول في الكبائر الباطنة۔۔۔الخ، الكبيرة الثالثة۔۔۔الخ، ١/١١٢

www.dawateislami.net

जाती हैं, इसी लिये एक मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तीन मरतबा येह बात दोहराई : "तजरिबा कार शख़्स ही अ़क़्लमन्द दाना है।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म ने दुन्या को धुतकार दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने न तो दुन्या का इरादा फ़रमाया और न ही दुन्या ने आप का इरादा किया। लेकिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दुन्या ने तो इरादा किया लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे धुतकार दिया और (फिर बतौ़रे आ़जिज़ी फ़रमाया) हम तो दुन्या में पेट की ख़ाति़र पुश्त तक लत-पत हो चुके हैं।"(2)

बुर्दबारी इख़्तियार करने की नसीह़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बनू उमय्या को मुख़ात़ब कर के इरशाद फ़रमाया : ऐ बनू उमय्या ! हि़ल्म के ज़रीए़ कुरैश के साथ बरताव करो ! ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) की क़सम ! ज़मानए जाहिलिय्यत में मुझे कोई बुरा भला कहता तो मैं उस के साथ हि़ल्म व बुर्दबारी से पेश आता यूं वोह शख़्स मेरा ऐसा दोस्त बन जाता कि अगर मुझे उस की मदद की ज़रूरत पड़ती तो वोह मदद करता, अगर मैं किसी से लड़ाई करता तो वोह मेरा साथ देता। हि़ल्म किसी शरीफ़ आदमी से उस की शराफ़त नहीं छीनता, बल्कि

1 ... ادب المفرد، باب التجارب، ص ۱۴۸، حدیث: ۵۶۴

2 ... تاریخ ابن عساکر، عمر بن الخطاب۔۔۔الخ، ۴۴/۲۸۷

www.dawateislami.net

उस की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा ही करता है।(1)

ख़ुत़्बे के ज़रीए नेकी की दा'वत

ह़ज़रते यूनुस बिन ह़लबस رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि जुमुआ़ के दिन मिम्बर पर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को नसीह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! मेरी बात तवज्जोह से सुनो, तुम दुन्या व आख़िरत के बारे में मुझ से ज़ियादा जानने वाला किसी को न पाओगे। नमाज़ में अपने चेहरे और सफ़ें दुरुस्त रखो वरना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे दिलों में बाहमी मुख़ालफ़त पैदा फ़रमा देगा। ना समझ लोगों की गिरिफ़्त करो, वरना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे दुश्मन तुम पर मुसल्लत़ फ़रमा देगा जो तुम्हें सख़्त आज़्माइश से दो चार कर देंगे। सदक़ा व ख़ैरात किया करो, कोई येह न कहे कि मैं ग़रीब हूं बेशक ग़रीब का सदक़ा मालदार के सदक़े से अफ़्ज़ल है। पाक दामन औ़रतों पर तोह्मत लगाने से बचो, किसी ने ऐसा कहा या मुझे कोई ऐसी ख़बर पहुंची तो (याद रखो) अगर किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़माने की औ़रत पर भी तोह्मत लगाई तो कल बरोज़े क़ियामत इस बारे में पूछा जाएगा।(2)

उन आफ़ात से बचिये

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन उ़तबा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

---

1 . . . البداية والنهاية، سنة ستين من الهجرة النبوية، وهذه ترجمة معاوية ـ ـ ـ الخ، ٥/٦٣٩

2 . . . تاريخ ابن عساكر، معاوية بن صخر ـ ـ ـ الخ، ٥٩/١٦٣

www.dawateislami.net

❀.....آفۃُ العِلمِ اَلنِّسیَانُ या'नी भूलना इ़ल्म के लिये आफ़त है।

❀.....آفۃُ العِبَادَۃِ اَلرِّیَاءُ या'नी रियाकारी (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के इ़लावा किसी और इरादे से इ़बादत करना) इ़बादत के लिये आफ़त है।

❀.....آفۃُ النَّجَابَۃِ اَلْکِبْرُ या'नी तकब्बुर (या'नी ख़ुद को अफ़्ज़ल दूसरों को ह़क़ीर जानना) इ़ज़्ज़त व शराफ़त के लिये आफ़त है।

❀.....آفَۃُ اللُّبِّ اَلعُجُبُ या'नी ख़ुद पसन्दी (या'नी अपने कमाल मसलन इ़ल्म या अ़मल या माल को अपनी त़रफ़ निस्बत करना और इस बात का ख़ौफ़ न होना कि येह छिन जाएगा) अ़क़्लमन्दी के लिये आफ़त है।

❀.....آفَۃُ الِاصْلَاحِ اَلشُّحُّ या'नी लालच इस्लाह़ के लिये आफ़त है।

❀.....آفَۃُ السَّمَاحَۃِ اَلتَّبْذِیْرُ या'नी तबज़ीर (या'नी नाजाइज़ कामों में माल ख़र्च करना) **सख़ावत** के लिये आफ़त है।

❀.....آفَۃُ الجَلَدِ اَلفُحْشُ या'नी बे ह़याई त़ाक़त व हिम्मत के लिये आफ़त है।

❀.....آفَۃُ الحَیَاءِ اَلذُّلُّ या'नी ज़िल्लत ह़या के लिये आफ़त है।

❀.....آفَۃُ الظَّرْفِ الِاکْثَارُ या'नी ज़रूरत से ज़ाइद बरतन होना बरतनों के लिये आफ़त है।(1)

---

(1) . . . موسوعۃ لابن ابی الدنیا، کتاب اصلاح المال، باب اصلاح المال، ۷/۴۳۹، رقم: ۱۵۸ ملتقطاً

www.dawateislami.net

शरई हुक्म पर अ़मल करवाते

ज़मानए जाहिलिय्यत में येह रस्म थी एक शख़्स अपनी बेटी या बहन का निकाह़ किसी से कर देता और उस की बेटी या बहन से ख़ुद निकाह़ कर के उस निकाह़ को महर क़रार दे देता, चूंकि इस में महर न मिलने की वज्ह से औ़रत की ह़क़ तलफ़ी होती इसी लिये नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस त़रह़ निकाह़ करने से मन्अ़ फ़रमाया। जब ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के दौरे ह़ुकूमत में इस त़रह़ के निकाह़ का मुआ़मला पेश आया तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने वहां के गवर्नर को दोनों में तफ़रीक़ करवाने का ह़ुक्म इरशाद फ़रमाया और इस की वज्ह येह बयान फ़रमाई : "येह निकाहे शिग़ार है जिस से नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमाया है।[1]

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : (निकाहे शिग़ार वोह है जिस में) हर निकाह़ दूसरे का निकाह़ का महर हो इस के इ़लावा और कोई महर न हो, ख़याल रहे कि अगर येह निकाह़ आपस में एक दूसरे का महर न हों सिर्फ़ निकाह़ ब शर्ते निकाह़ हो तो बिल इत्तिफ़ाक़ जाइज़ है जैसा कि पंजाब में आ़म त़ौर पर होता है कि आमने सामने रिश्ता लिया जाता है, लेकिन अगर किसी निकाह़ का महर न हो, हर निकाह़ दूसरे निकाह़ का महर हो तो इमाम शाफ़ेई के हां दोनों निकाह़ फ़ासिद हैं, हमारे हां दोनों निकाह़ दुरुस्त हैं येह शर्ते फ़ासिद है हर लड़की को महरे मिस्ल मिलेगा।

1 ... ابوداؤد، کتاب النکاح، باب فی الشغار ۲/۳۳۰، حدیث: ۲۰۷۵ ملخصاً

www.dawateislami.net

मज़ीद फ़रमाते हैं ख़याल रहे कि अगर येह शर्त़ दुरुस्त रहती तो शिग़ार बनता जब अह़नाफ़ ने इस शर्त़ को बात़िल क़रार दिया और हर लड़की को मह्रे मिस्ल दिलवाया तो शिग़ार न रहा, लिहाज़ा येह ह़दीस अह़नाफ़ के ख़िलाफ़ नहीं जैसे दीगर फ़ासिद शुरूत़ से निकाह़ फ़ासिद नहीं होता बल्कि शर्त़ फ़ासिद हो जाती है ऐसे ही येह निकाह़ भी बिश्शर्त़ है, जिस में निकाह़ दुरुस्त और शर्त़ फ़ासिद है जैसे कोई शख़्स सूअर या शराब के इ़वज़ निकाह़ करे तो निकाह़ दुरुस्त है येह शर्त़ फ़ासिद है मह्रे मिस्ल दिया जाएगा।[1]

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया ने दिल जीत लिया

ह़ज़रते सय्यिदुना वाइल बिन ह़ुजर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम क़बूल फ़रमाने के बा'द बारगाहे रिसालत से रुख़्सत होने लगे तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन के साथ भेजा। ह़ज़रते सय्यिदुना वाइल बिन ह़ुजर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो सुवारी पर सुवार हो गए जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शदीद गर्मी के बा वुजूद पैदल चलते रहे। ह़ज़रते सय्यिदुना वाइल बिन ह़ुजर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को न तो अपने साथ सुवार किया और न ही जूता दिया। जब ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा बने तो ह़ज़रते सय्यिदुना वाइल बिन ह़ुजर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के पास तशरीफ़ लाए तो आप ने उन्हें अपने साथ मस्नद पर बिठाया और उन्हें माज़ी का

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, 5/34

www.dawateislami.net

वाक़िआ याद दिलाया, जिस पर ह़ज़रते सय्यिदुना वाइल बिन हुजर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : "आज हमारा शुमार अ़वाम में है जब कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बादशाह हैं ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना वाइल बिन हुजर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ निहायत ही इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के साथ पेश आए, येह देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इतने मुतअस्सिर हुवे कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में येह कलिमात जारी हो गए : "मेरी येह दिली ख़्वाहिश है कि मैं ह़ज़रते अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने आगे सुवार करूं ।"[1]

दिल जीतने का नुस्ख़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़ इन्तिक़ामी कारवाई करने के बजाए मुआफ़ फ़रमा कर दिल जीत लिया करते थे बल्कि अगर कोई शख़्स वक़्ती तक्लीफ़ का सबब भी बना होता तो बुज़ुर्गाने दीन इस के बदले उसे दाइमी राह़त पहुंचाने की कोशिश फ़रमाते क्यूंकि ह़दीसे पाक में है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा आ'माल येह हैं कि तुम किसी मुसलमान को ख़ुशी पहुंचाओ, या उस से तक्लीफ़ दूर कर दो या उस की त़रफ़ से क़र्ज़ अदा करो या उस से भूक मिटा दो ।[2] आप भी निय्यत कर लीजिये कि जो किसी भी क़िस्म की तक्लीफ़ का सबब बनेगा उसे

1 . . . معجم صغیر،من اسمہ یحیی، ۲/۱۴۳، مسندبزار،مسند وائل بن حجر، ۱۰/۳۴۵، حدیث:۴۴۷۵، تاریخ المدینۃ المنورۃ،وفاۃوائل بن حجر الحضرمی، ۲/۵۷۹، الاصابۃ،وائل بن حجر، ۶/۴۶۶، رقم:۹۱۲۰ ملخصاً

2 . . . معجم کبیر،عبداللہ بن عمر بن خطاب، ۱۲/۳۴۶، حدیث:۱۳۶۴۶

www.dawateislami.net

मुआ़फ़ करूंगा और जहां तक हो सका उसे राह़त पहुंचा कर दिलजूई भी करूंगा, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से तमाम रन्जिशें और नाचाक़ियां ख़त्म हो जाएंगी ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया का सुन्हरी दौर

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सुन्हरे दौर के बारे में اَلْبِدَایَہ وَالنِّھَایَہ में है : (ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में) दुश्मनों के शहरों में जिहाद जारी था, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कलिमे का बोलबाला था, हर त़रफ़ से ग़नीमतें समेट कर आती थीं, अ़द्लो इन्साफ़ का दौर दौरा था और आप के दौर में मुसलमान सुकून व राह़त में थे ।[1]

फ़ितनों का ख़ातिमा

इस्लामी शहरों में जो ख़वारिज साज़िशों के ज़रीए फ़ितने फैला रहे थे, ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन की सरकोबी फ़रमाई ह़त्ता कि येह फ़ितना मुकम्मल त़ौर पर ख़त्म हो गया ।[2] इस के इ़लावा जहां जहां फ़ितने सर उठाते आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उन की सरकोबी फ़रमाते, इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में इस्लामी मम्लुकत वसीअ़ से वसीअ़ तर होती चली गई ।

1 ... البدایۃ والنہایۃ، سنۃ ستین من الھجرۃ النبویۃ، وھذہ ترجمۃ معاویۃ۔۔۔الخ، ۵/۶۲۱

2 ... البدایۃ والنہایۃ، سنۃ احدی واربعین، خروج طائفۃ من الخوارج علیہ، ۵/۵۰۵ ماخوذًا

www.dawateislami.net

शहादते शेरे ख़ुदा पर कैफ़िय्यत

तीन बदतरीन शख़्स बर्क बिन अ़ब्दुल्लाह, अ़म्र बिन बक्र तमीमी और अ़ब्दुर्रहमान बिन मुल्जिम मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में जम्अ़ हुवे और लोगों के मुआ़मलात पर गुफ़्तगू और गवर्नरों पर नुक्ता चीनी करने लगे, जब अह्ले निहरवान (वोह गुमराह ख़वारिज जिन लोगों के ख़िलाफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जंग की और उन्हें हलाक किया) का तज़किरा हुवा तो उन का मुसलमानों से बुग़्ज़ो अ़दावत और उ़रूज पर पहुंचा जिस की वज्ह से उन्हों ने तीन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के क़त्ल का मन्सूबा बनाया लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद करने की ज़िम्मेदारी इब्ने मुल्जिम ने ली जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बर्क बिन अ़ब्दुल्लाह ने और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़म्र बिन बक्र तमीमी ने शहीद करने की ज़िम्मेदारी ली । इस भयानक मन्सूबे की तक्मील के लिये येह तीनों बद बात़िन अफ़राद अपनी अपनी नापाक मुहिम पर रवाना हो गए । एक रोज़ जब सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़े फ़ज्र के लिये मस्जिद तशरीफ़ ले जाने लगे तो बर्क बिन अ़ब्दुल्लाह (जो कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही की ताक में वहां बैठा था) ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर भरपूर ह़म्ला किया लेकिन इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फुर्ती से पीछे पलटे जिस की वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पुश्त ज़ख़्मी हो गई । जब बर्क बिन अ़ब्दुल्लाह ने अपना वार नाकाम होते देखा तो

www.dawateislami.net

अपनी जान बचाने के लिये उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में अ़र्ज़ की : मेरे पास एक ऐसी ख़बर है जो आप को ख़ुश कर देगी, अगर वोह मैं आप को बता दूं तो क्या मुझे कुछ फ़ाएदा होगा ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : वोह क्या है ? कहने लगा : "आज की रात मेरे भाई ने अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर दिया है।" सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मज़ीद तफ़्तीश के लिये उस से फ़रमाया : तेरे भाई का ज़ोर ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) पर नहीं चलेगा। उस ने बिगड़ कर येह राज़ उगला : क्यूं नहीं चलेगा ? अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़ के लिये जाते हुवे अपने साथ कोई मुह़ाफ़िज़ नहीं रखते। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के साथ किसी क़िस्म की रिआ़यत नहीं बरती और फ़ौरन उसे क़त्ल करने का हुक्म जारी फ़रमा दिया।[1]

रूमी बादशाह की सर्ज़निश

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बा'द जब बा'ज़ मुआ़मलात में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के माबैन इख़्तिलाफ़ हुवा तो रूमी बादशाह अ़ज़ीमुश्शान इस्लामी सल्त़नत को अपने मा तह़्त करने के ख़्वाब देखने लगा। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब रूमी बादशाह के नापाक अ़ज़ाइम की इत्तिलाअ़ मिली तो

1 ... معجم کبیر، مسند علی بن ابی طالب، ۱/۹۷، حدیث: ۱۲۸ ملخصاً

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ैरते ईमानी जोश में आई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे इन्तिहाई सख़्त अल्फ़ाज़ में ब ज़रीअए मक्तूब यूं मुख़ातब फ़रमाया : ऐ लईन ! अगर तू बाज़ न आया और अपने शहर को वापस न गया तो मैं और मेरा चचाज़ाद भाई (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) आपस में मिल जाएंगे और मैं ज़रूर तुझे तेरे मुल्क से निकाल दूंगा और ज़मीन को कुशादगी के बा वुजूद तुझ पर तंग कर दूंगा।[1]

अ़लिय्युल मुर्तज़ा के शहज़ादे पर ए'तिमाद

एक मरतबा रूम के बादशाह ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में अपनी फ़ौज के दो आदमियों को भेजा जिन में एक को वोह सब से ता़क़तवर और दूसरे को त़वील तरीन ख़याल करता था। रूमी बादशाह ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : अगर आप की क़ौम में इन दोनों से बढ़ कर कोई शख़्स है तो मैं आप की त़रफ़ इतने क़ैदी और इतने तह़ाइफ़ भेजूंगा और अगर ऐसा न हुवा तो आप तीन साल के लिये मुझ से मुसालह़त करेंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के बारे में मश्वरा किया तो लोगों ने कहा : उस के मुक़ाबले के सिर्फ़ दो शख़्स हैं, एक अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़नफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दूसरे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल

1 ... البدایۃ والنہایۃ، سنۃ ستین من الھجرۃ النبویۃ، وھذہ ترجمۃ معاویۃ۔۔۔الخ، ۵/۱۲۱ ملخصا

www.dawateislami.net

मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़नफ़िय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को उस के मुक़ाबले के लिये पेश किया : ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़नफ़िय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने उस त़ाक़तवर रूमी से फ़रमाया : तुम बैठ जाओ और अपना हाथ मुझे पकड़ा दो या मैं बैठ जाता हूं और अपना हाथ तुम्हें पकड़ा देता हूं। हम में से जो दूसरे को उस की जगह से उठा देगा वोह ग़ालिब होगा और दूसरा मग़्लूब होगा। फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : क्या चाहता है ? तू बैठेगा या मैं बैठूं ? रूमी ने कहा : आप बैठिये। ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़नफ़िय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बैठ गए और रूमी को हाथ पकड़ा दिया, रूमी ने पूरी क़ुव्वत के साथ आप को अपनी जगह से हटाने और उठाने की कोशिश की मगर वोह ऐसा न कर सका और मग़्लूब हो गया फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने खड़े हो कर रूमी से फ़रमाया : अब तू बैठ। वोह बैठा और अपना हाथ आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को पकड़ाया। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने पलक झपकते ही न सिर्फ़ उसे उस की जगह से हिला दिया बल्कि ऊपर उठा कर ज़मीन पर पटख़ दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه येह मन्ज़र देख कर बहुत ख़ुश हुवे। रूमी शख़्स ने अपने मग़्लूब होने का ए'तिराफ़ कर लिया और उन के बादशाह ने जो चीज़ें अपने ऊपर लाज़िम की थीं वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को भेज दीं।[1]

मैं तुम से बेहतर नहीं हूं

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने लोगों से फ़रमाया : ऐ लोगो ! मैं तुम से बेहतर नहीं हूं, तुम में ह़ज़रते

1 ... البداية والنهاية، سنة تسع وخمسين، قيس بن سعد بن عبادة، ٥/٢٠٢

www.dawateislami.net

अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र वग़ैरा जैसे अफ़ाज़िल लोग मौजूद हैं लेकिन उम्मीद है कि मैं तुम्हारे लिये हुकूमत के ए'तिबार से ज़ियादा नफ़्अ़ मन्द हूं और दुश्मन को ज़ेर करने में सब से ज़ियादा कार आमद रहूं और तुम्हें फ़ाएदा पहुंचाने में सब से आगे रहूं।[1]

लोगों की ज़रूरियात पूरी फ़रमाते

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों की ज़रूरियात का बेह़द ख़याल फ़रमाते और ज़रूरत मन्दों की ख़बर गीरी के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुछ मक़ामात पर लोगों को मुतअ़य्यन फ़रमा दिया था, बल्कि आ़मिले मदीना जब कोई पैग़ाम ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जानिब भेजना चाहता तो पहले वोह लोगों में यूं ए'लान करवाता : जिसे कोई ह़ाजत हो वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिख कर भेज दे।[2]

बच्चों की दिलजूई फ़रमाते

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बच्चों से मह़ब्बत फ़रमाते, उन्हें ख़ुश रखते और दिलजूई फ़रमाते चुनान्चे, एक रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना जबला बिन सुहैम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे।

1 ... طبقات ابن سعد، معاویة بن ابی سفیان، ۱۹/۶ مکتبة الخانجی، البدایة والنهایة، سنة ستین من الهجرة النبویة، و هذه ترجمة معاویة۔۔۔الخ، ۶۳۷/۵ واللفظ له

2 ... تاریخ طبری، ثم دخلت سنة ستین، ذکر بعض ما حضر نا من ذکر اخباره وسیره، ۲۶۸/۳

www.dawateislami.net

उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के गले में रस्सी थी और एक बच्चा उसे खींच रहा था। ह़ज़रते सय्यिदुना जबला बिन सुह़ैम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस अ़मल पर ह़ैरत करते हुवे अ़र्ज़ की : अमीरुल मोमिनीन ! आप इस त़रह़ बच्चों के साथ खेल रहे हैं ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : बे वुक़ूफ़ ! चुप हो जा, क्यूंकि मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है : "जिस का कोई बच्चा हो तो वोह उस के साथ बच्चा बन जाए।"(1) एक रिवायत में येह भी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान क़ितबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कमर के बल लेटे थे और आप के सीने पर एक बच्चा या बच्ची थी जिसे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खिला रहे थे। मैं ने येह देख कर अ़र्ज़ की : अमीरुल मोमिनीन ! इस बच्चे को हटा दें। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है : "जिस का कोई बच्चा हो तो वोह उस के साथ बच्चा बन जाए।"(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बच्चों की दिलजूई की अहम्मिय्यत

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे

1 ... تاریخ ابن عساکر، جبلۃ بن سحیم، ۷/۳۸ ملخصاً
2 ... فیض القدیر، حرف المیم، ۶/۲۷۱، تحت الحدیث: ۸۹۷۵

www.dawateislami.net

अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक जन्नत में एक घर है जिसे "दारुल फ़रह़" कहा जाता है, उस में वोही लोग दाख़िल होंगे जो बच्चों को ख़ुश करते हैं।"(1)

आ'ला ह़ज़रत इमामे अह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن एक सुवाल के जवाब में बाप पर औलाद के हुक़ूक़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं कि बाप ख़ुदा की उन अमानतों के साथ मह्र व लुत्फ़ (शफ़्क़त व मह़ब्बत) का बरताव रखे, उन्हें प्यार करे, बदन से लिपटाए, कन्धे पर चढ़ाए। उन के हंसने, खेलने, बहलने की बातें करे, उन की दिलजूई, दिलदारी, रिआ़यत व मुह़ाफ़ज़त हर वक़्त ह़त्ता कि नमाज़ व ख़ुत़बे में भी मल्हूज़ रखे। नया मेवा, नया फल पहले उन्हीं को दे कि वोह भी ताज़े फल हैं नए को नया मुनासिब है। कभी कभी ह़स्बे मक़्दूर (ह़स्बे इस्तित़ाअ़त) उन्हें शीरीनी वग़ैरा खाने, पहनने, खेलने की अच्छी चीज़ (जो) शरअ़न जाइज़ है, देता रहे। बहलाने के लिये झूटा वा'दा न करे बल्कि बच्चे से भी वा'दा वोही जाइज़ है जिस को पूरा करने का क़स्द (इरादा) रखता हो। अपने चन्द बच्चे हों तो जो चीज़ दे सब को बराबर व यक्सां दे, एक को दूसरे पर बे फ़ज़ीलते दीनी (दीनी फ़ज़ीलत के बिग़ैर) तरजीह़ न दे।"(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 ... جامع صغیر، حرف الھمزۃ، ص ۱۴۰، حدیث: ۲۳۲۱

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 24/453

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक ह़यात के जो पहलू आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाए उन में ख़ौफ़े ख़ुदा और इत़ाअ़ते रसूल का वस्फ़ बहुत नुमायां है यक़ीनन येही एक बेहतरीन हुक्मरान, कामयाब सिपह सालार और मुआ़शरे के आ़म फ़र्द की दुन्यवी व उख़रवी कामयाबी की वाज़ेह़ अ़लामत है। अगर आप भी येह कामयाबी ह़ासिल करना चाहते हैं तो अपने अन्दर ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा कीजिये, सुन्नतों के सांचे में ख़ुद को ढाल लीजिये और इन दोनों ख़ूबियों को अपने अन्दर पैदा करने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, मदनी माह़ोल की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, नेकियां करने और गुनाहों से बचने का ज़ेह्न बनेगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बच्चों से ज़ियादा मज़ाक़ न करो

... ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "बच्चों से ज़ियादा मज़ाक़ न किया करो वरना उन के नज़दीक तुम्हारी क़द्रो मन्ज़िलत कम हो जाएगी और वोह तुम्हारे ह़क़ को हल्का समझेंगे।"

(حلیۃ الاولیاء، محمد بن المنکدر، ۳/۱۷۹، رقم: ۳۶۲۱)

www.dawateislami.net

पांचवां बाब

अ़ह्दे अमीरे मुआ़विया की इ़ल्मी सरगर्मियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इ़ल्म इन्सान की वोह ख़ूबी है जिस की बदौलत उसे अशरफ़ुल मख़्लूक़ात होने का शरफ़ है। ख़ुलफ़ाए राशिदीन की त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दौर भी इ़ल्म के नूर से जगमग जगमग करता रहा और ऐसा क्यूं न होता कि इ़ल्म की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इरशादात और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन से भी वाज़ेह़ है और इ़ल्म ही ताईद व नुस्रते इलाही ह़ासिल करने का बेहतरीन ज़रीआ़ है। उस मुबारक दौर में होने वाली इ़ल्म की तरक़्क़ी के चन्द वाक़िआ़त मुलाह़ज़ा कीजिये :

ह़दीस बयान करने में एह़तियात़

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मौक़अ़ पर इरशाद फ़रमाया : "वोही अह़ादीस बयान करो जो अ़ह्दे फ़ारूक़ी में रिवायत की जाती थीं क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सब से ज़ियादा डरने वाले थे।" फिर सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मरवी एक ह़दीस बयान फ़रमाई : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस से भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन की समझ अ़त़ा फ़रमाता है।[1]

---

1 ... مسند احمد، حدیث معاویۃ بن ابی سفیان، ۲۸/۶، حدیث: ۱۶۹۱۰

www.dawateislami.net

मुझे एक ह़दीस लिख दीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़ल्म में जो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم होते, आप न सिर्फ़ उन पर अ़मल फ़रमाते बल्कि मज़ीद अह़ादीसे करीमा ह़ासिल करने के लिये कोशिश फ़रमाते चुनान्चे, सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कातिब ह़ज़रते सय्यिदुना वर्राद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जानिब मक्तूब भेजा, जिस में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस ख़्वाहिश का इज़्हार फ़रमाया : ''मुझे एक ह़दीसे मुबारका लिख दीजिये, जिसे आप ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना हो ।'' ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाबी ख़त में येह ह़दीस इरसाल फ़रमाई : ''एक बार जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे तो मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह कलिमात इरशाद फ़रमाते हुवे सुना لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ، لَہُ الْمُلْکُ، وَلَہُ الْحَمْدُ، وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये बादशाही है और उसी के लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है ।) तीन मरतबा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह कलिमात दोहराए फिर फ़रमाया : आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ुज़ूल गोई, कसरत से सुवाल करने, माल ज़ाएअ़ करने, हुक़ूक़ की अदाएगी में कोताही बरतने,

www.dawateislami.net

औ़रतों के साथ बुरा सुलूक करने और बेटियों को ज़िन्दा दरगोर करने से मन्अ़ फ़रमाते थे।''(1)

दूसरी रिवायत में है : नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर फ़र्ज़ नमाज़ के आख़िर में येह कलिमात इरशाद फ़रमाते थे :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ، وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ

(या'नी अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये बादशाही है और उसी के लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिसे तू अ़ता करे उसे रोकने वाला कोई नहीं और जिस से तू रोके उसे कोई अ़ता करने वाला नहीं, और तेरे हुज़ूर मालदार को उस का माल नफ़्अ़ नहीं देगा)।(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रिवायते ह़दीस की तह़क़ीक़

एक दफ़्आ़ **ह़ज़रते** सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने **ह़ज़रते** सय्यिदुना मस्लमा बिन मुख़ल्लद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को ब ज़रीअ़ए मक्तूब येह हुक्म इरशाद फ़रमाया : **ह़ज़रते** अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से पूछिये कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान ''उस उम्मत को ख़ैरो बरकत अ़ता नहीं की जाती जिस का कमज़ोर शख़्स मग़लूब न होने के बा वुजूद त़ाक़तवर से अपना ह़क़ न ले सके'' सुना है ?

(1) ... بخاری، کتاب الرقاق، باب مایکرہ من قیل وقال، ۴/۲۴۰، حدیث: ۶۴۷۳

(2) ... بخاری، کتاب الاذان، باب الذکر بعد الصلاۃ، ۱/۲۹۴، حدیث: ۸۴۴

www.dawateislami.net

अगर वोह "हां" कहें तो मुझे ब ज़रीअ़ए मक्तूब इत्तिलाअ़ दें। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में जब येह सुवाल पहुंचा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस ह़दीस शरीफ़ की तस्दीक़ फ़रमाई फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मस्लमा बिन मुख़ल्लद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ासिद के ज़रीए़ मिस्र से शाम पैग़ाम रवाना फ़रमाया, जब ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस ह़दीस की तस्दीक़ पहुंची तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "येह ह़दीस मैं ने भी नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी थी लेकिन मुझे येह पसन्द था कि मज़ीद तह़क़ीक़ कर लूं।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सीरते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मुबारक गोशे से हमें येह सीखने को मिला कि जो इ़ल्मे दीन हमें ह़ासिल हो उस पर अ़मल करना चाहिये और मज़ीद इ़ल्मे दीन की जुस्तजू में भी लगे रहना चाहिये, ताकि हमारे इ़ल्मो अ़मल में इज़ाफ़ा हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी का भी सामान हो।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में ह़ुसूले इ़ल्मे दीन का ज़ेह़न दिया जाता है। मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त, मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ और मदनी चैनल व मदनी मुज़ाकरे इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने का बेहतरीन और आसान ज़रीआ़ हैं। आप भी मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये इस की बरकत से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्मे दीन का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा।

---

1 ... معجم الزوائد، کتاب الخلافۃ، باب اخذ حق الضعیف من القوی، ۵/۳۷۷، حدیث: ۹۰۵۸

www.dawateislami.net

कुरैश को कुरैश कहने की वज्ह

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : कुरैश को कुरैश क्यूं कहते हैं ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : कुरैश एक समन्दरी चौपाया (जानवर) है जो दीगर समन्दरी जानवरों से बहुत त़ाक़तवर होता है और इसे क़रश भी कहते हैं और येह छोटे बड़े हर त़रह़ के समन्दरी जानवरों को खा जाता है । ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : इस की ताईद में मुझे शे'र सुनाइये, तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने ताईद में जुमह़ी शाइ़र के अश्आ़र सुनाए ।[1]

तारीख़ की पहली किताब

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन शरिय्या जुर्हमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यमन के शहर सन्आ़ से बुलवाया उन से माज़ी में रूनुमा होने वाले वाक़िआ़त, अ़रबो अ़जम के बादशाहों और लोगों के शहरों में फैलने का सबब दरयाफ़्त फ़रमाया तो ह़ज़रते उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन तमाम उमूर की तफ़्सीलात आप की बारगाह में पेश कर दीं इस मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तारीख़ मुदव्वन (जम्अ़) करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया । येही वज्ह है कि ह़ज़रते

1 ... دلائل النبوۃ للبیھقی، باب ذکر شرف اصل رسول اللہ۔۔۔الخ، ۱/۱۸۰

www.dawateislami.net

सय्यिदुना उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तारीख़ की तदवीन का कारनामा अन्जाम दिया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने "کِتَابُ الْمُلُوك وَ اَخْبَارُ الْمَاضِین" लिखी जो तारीख़ की पहली किताब है और फिर "کِتَابُ الْاَمْثَال" तस्नीफ़ फ़रमाई।(1) ह़ज़रते सय्यिदुना दग़्फ़ल बिन ह़न्ज़ला ज़ुहली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जैसे माहिरे नसब का भी ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आना जाना था।(2) इस से भी ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़ल्मी ज़ौक़ का पता चलता है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में होने वाली इ़ल्मी सरगर्मियों से इस बात का ब ख़ूबी अन्दाज़ा होता है कि मुसलमान जहां भी हो इ़ल्म की रौशनी से जहालत के अंधेरों को दूर करता है और इस की बरकत से मुआ़शरे में रहने वाले हर फ़र्द को इस के फ़वाइद व समरात पहुंचते हैं। आज के इस पुर फ़ितन दौर में दा'वते इस्लामी के कई शो'बाजात इ़ल्म का नूर फैलाने में रात दिन मसरूफ़े अ़मल हैं। आप से भी मदनी इल्तिजा है कि इस कारे ख़ैर में ह़िस्सा लेने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 . . . التراتیب الاداریۃ، القسم العاشر فی تشخیص ۔۔۔ الخ، باب ھل کانوا یدونون فی صدر الاسلام الخ، ۲/۳۲۲

2 . . . الفھرست لابن الندیم، المقالۃ الثالثۃ فی اخبار الاخباریین ۔۔۔ الخ، الفن الاول، ص ۱۰۱

www.dawateislami.net

छटा बाब

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया और इन्तिज़ामी उमूर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी भी इदारे या हुकूमत की कामयाबी और नाकामी का तमाम तर दारो मदार "इन्तिज़ामी उमूर" पर होता है, इन्तिज़ामी उमूर की बुन्याद जिस क़दर मज़बूत और मुस्तह़कम होती है इदारा या हुकूमत की तरक़्क़ी में ह़ाइल रुकावटें खुद ही दूर होती चली जाती हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बिलखुसूस ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन्तिज़ामी उमूर का ह़िस्सा रहे इसी लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को निज़ामे हुकूमत चलाने का वसीअ़ तजरिबा था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे हुकूमत में इन्ही उसूल को नाफ़िज़ किया और इसी की बरकत से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में बेशुमार फ़ुतूह़ात हुईं।

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का निज़ामे एह़तिसाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी भी निज़ाम की बक़ा का दारो मदार ख़ूबियों में इज़ाफ़े पर भरपूर तवज्जोह देने और ख़ामियों की इस्लाह़ करने में है, यक़ीनन इस के ज़रीए़ तरबिय्यत भी होती रहती है और ह़ौसला अफ़ज़ाई का सिलसिला भी जारी रहता है और येह दोनों ही चीज़ें किसी भी निज़ाम को कामयाबी से हमकिनार करने के लिये बहुत ही ज़रूरी है। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ह़िल्म तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में ज़रबुल मसल था।[1]

1 ... التراتیب الاداریۃ، باب فی من یضرب بہ المثل ـــ الخ، باب فیمن عرف بالدھاء ـــ الخ ۲/۴۲۸

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी ज़ात के लिये किसी से भी बदला न लिया करते लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे हुकूमत का निज़ामे एह़तिसाब निहायत मज़बूत़ था बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने अ़मल का एह़तिसाब ख़ुद फ़रमाया करते चुनान्चे, एक मरतबा फ़िलिस्त़ीन के आ़मिल सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राशिद अज़दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुवे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन का मुह़ासबा फ़रमाने लगे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राशिद अज़दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंखों से आंसू बहने लगे। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रोने की वज्ह पूछी तो फ़रमाया : मेरे आंसू मुह़ासबे की वज्ह से नहीं बह रहे बल्कि मुझे क़ियामत का दिन याद आया है।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुन्तख़ब कर्दा गवर्नरों से बाज़पुर्स भी फ़रमाया करते थे, यूं ख़ामी और ग़लती भी वाज़ेह़ हो जाती और हाथों हाथ इस्लाह़ की तरकीब भी बन जाती।

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़िरासत की तस्दीक़ ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस वक़्त भी फ़रमाई जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुल्के शाम तशरीफ़ लाए और इस्तिक़्बाल का शाहाना अन्दाज़ देखा जो ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़बीअ़त के सरासर ख़िलाफ़ था,

1 ... تاریخ ابن عساکر، عبدالرحمٰن بن عبید۔۔۔الخ، ۳۵/۹۴ ملخصاً

www.dawateislami.net

जब बाज़पुर्स करने पर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वज़ाह़त पेश फ़रमाई तो उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म ने फ़रमाया : न हम ऐसा करने का हुक्म देते हैं और न ही इस से रोकते हैं या'नी तुम्हें अपनी ह़ालत ज़ियादा बेहतर मा'लूम है अगर येह सब करने की ह़ाजत है तो बहुत अच्छा है और अगर ह़ाजत नहीं तो येह बुरा है।[1]

बद अख़्लाक़ी की बिना पर भांजे को मा'ज़ूल कर दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का भांजा इब्ने उम्मे ह़कम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में कूफ़ा का गवर्नर था लेकिन जब उस की बद अख़्लाक़ी में इज़ाफ़ा हुवा और लोगों के साथ बुरे त़रीक़े से पेश आने लगा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे फ़ौरन मा'ज़ूल फ़रमा कर ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कूफ़ा का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गवर्नरी वोह ओ़ह्दा है कि जिसे ह़ासिल हो उस के पास ज़रूरत मन्दों का हुजूम लगा रहता है ऐसे में अगर गवर्नर ही सब्रो तह़म्मुल और ख़ुश अख़्लाक़ी का मुज़ाहरा न करे बल्कि बद अख़्लाक़ी से पेश आए तो लोगों की ज़रूरियात बर वक़्त पूरी नहीं होंगी जिस की वज्ह से पूरे निज़ाम में ख़लल वाक़ेअ़ होगा। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़िक्मते अ़मली पर क़ुरबान ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने गवर्नर को

1 ... التراتیب الاداریۃ، القسم الاول فی الخلافۃ والوزارۃ۔۔۔الخ، البواب، ۱/۱۵۱

www.dawateislami.net

मा'ज़ूल करते हुवे क़राबत दारी का लिहाज़ न किया बल्कि मुसलमानों की बर वक़्त दाद रसी न होने की वज्ह से अपने भांजे को मा'ज़ूल फ़रमा कर जलीलुल क़द्र अन्सारी सहाबी ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कूफ़ा का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़ह्दे सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ में ओ़ह्दए क़ज़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! ख़ूब सूरत मुआ़शरे का ह़ुस्न दर अस्ल एक दूसरे के ह़ुक़ूक़ का तह़फ़्फ़ुज़ करते हुवे मिल जुल कर रहने में है लेकिन बा'ज़ औक़ात ऐसे मुआ़मलात पेश आ जाते हैं जिन की बिना पर फ़रीक़ैन को किसी तीसरे से फ़ैसला करवाने की ज़रूरत पेश आती है और इस ज़रूरत से दर ह़क़ीक़त इन्सान की जान, माल, इ़ज़्ज़त और बा'ज़ औक़ात नसब का तअ़ल्लुक़ भी जुड़ा होता है नीज़ उस से मुआ़शरे के अम्नो अमान का गहरा तअ़ल्लुक़ होता है येही वज्ह है कि इस्लाम में अ़द्लो इन्साफ़ को बे पनाह अहम्मिय्यत ह़ासिल है। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक दौर में भी अ़द्लो इन्साफ़ को बहुत ज़ियादा अहम्मिय्यत ह़ासिल थी और इस का बा क़ाइ़दा शो'बा क़ाइम था और ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ाला बिन उ़बैद अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ओ़ह्दए क़ज़ा पर फ़ाइज़ थे। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इदरीस ख़ौलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस मन्सब पर फ़ाइज़ रहे।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ... البدایۃ والنہایۃ، سنۃ تسع وخمسین، ۵/۵۹۳

2 ... الکامل فی التاریخ، سنۃ ستین، ذکر بعض سیرتہ واخبارہ۔ الخ، ۳/۳۷۲

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और जेलख़ाना जात

सय्यिदुना अमीरे मुआविया का क़ैदियों से रवय्या

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से क़ब्ल भी क़ैदियों के लिये खाने और मौसिम के ए'तिबार से लिबास का इन्तिज़ाम हुवा करता था। सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इराक़ में और फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शाम में इस सिलसिले को जारी रखा।[1]

मजलिसे इस्लाह़ बराए क़ैदियान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का मुश्कबार मदनी माह़ोल अच्छी सोह़बत फ़राहम करता है, इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर लाखों लोग गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े दीन के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त मुसलमान क़ैदियों की सुन्नतों भरी तरबिय्यत के लिये दुन्या के कई जेलख़ानों में दा'वते इस्लामी की मजलिस "इस्लाह़ बराए क़ैदियान" के ज़रीए़ मदनी काम की तरकीब है। पाकिस्तान की मुतअ़द्दिद जेलों में ता'लीमे क़ुरआन के लिये मद्रसे क़ाइम हो चुके हैं, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तमाम जेलों में येह मदारिस क़ाइम किये जाएंगे।

1 ... التراتیب الاداریۃ، القسم الرابع فی العملیات ۔۔۔ الخ، ھل کانوایجرون علی المساجین ارزاقا، ۱/۲۹۶ مختصراً

www.dawateislami.net

कई जेलों में रोज़ाना शैख़े त़रीक़त अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कुतुबो रसाइल से दर्स दिया जाता है, नीज़ कई जेलों में माहाना व हफ़्तावार इजतिमाए ज़िक्रो ना'त का भी सिलसिला है। दुख्यारे क़ैदियों को दा'वते इस्लामी की मजलिस मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के दिये हुवे ता'वीज़ात फ़ी सबीलिल्लाह पहुंचाए जाते हैं। रिहाई पाने वालों की तरबिय्यत के लिये मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ मसलन 41 दिन का मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स, 63 दिन का मदनी तरबिय्यती कोर्स, इमामत और मुदर्रिस कोर्स वग़ैरा का भी सिलसिला है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رضی اللہ عنہ और निज़ामे मालियात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी भी मुल्क या इदारे की ता'मीर व तरक़्क़ी में सब से बड़ा किरदार ज़राइए आमदनी और अख़राजात का होता है, इसी की बदौलत मुल्की सन्अ़तें फलती फूलती हैं और लोगों को ख़ुशह़ाली नसीब होती है। इस्लामी ममलुकत की आमदनी के भी मुख़्तलिफ़ ज़राएअ़ होते थे जिन से मुल्क के इन्तिज़ामी मुआ़मलात चलाए जाते। **ह़ज़रते** सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के दौरे हुकूमत में भी मुख़्तलिफ़ वसाइल से आमदनी ह़ासिल की जाती थी जिस में वाज़ेह़ बरकत महसूस की जाती, यहां इस आमदनी का मुख़्तसरन तज़किरा किया गया है :

www.dawateislami.net

दिमश्क़ से हासिल होने वाली माली मुआ़वनत

दिमश्क़ से ह़ासिल होने वाली आमदनी से फ़ौजियों और क़ाज़ियों की तनख़्वाहें अदा की जातीं और फ़ुक़हा व मुअज़्ज़िनीन की ख़िदमत भी इसी माल से की जाती थी। इन तमाम अख़राजात के बा'द जो रक़म बच जाती उस की मिक़्दार चार लाख दीनार थी जिसे बैतुल माल में जम्अ़ करवा दिया जाता था।[1]

इराक़ से हासिल होने वाली माली मुआ़वनत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन दर्राज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब इराक़ के ख़िराज का वाली मुक़र्रर फ़रमाया तो उस वक़्त ज़मीनों से ह़ासिल होने वाले ख़िराज की रक़म पचास लाख दिरहम थी।[2]

मिस्र से हासिल होने वाली माली मुआ़वनत

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में मिस्र के गवर्नर मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان रहे इस ए'तिबार से यहां से ह़ासिल होने वाली आमदनी की मिक़्दार भी वक़्त के साथ साथ बढ़ती रही। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब तक गवर्नर रहे उस वक़्त तक मिस्र से ह़ासिल होने वाली आमदनी नौ लाख दीनार थी।[3] इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना मस्लमा बिन मुख़ल्लद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में

1 ... تاریخ ابن عساکر، باب ما نقل۔۔۔الخ، ۱/۲۵۳
2 ... فتوح البلدان، امر البطائح، ص ۴۱۱
3 ... معجم البلدان، حرف المیم، ۴/۲۷۸

www.dawateislami.net

बैतुल माल से मसारिफ़ पूरे करने के बा'द जो रक़म ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेजी जाती उस की मिक़्दार छे लाख दीनार थी ।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक दौर में किस क़दर ख़ुशह़ाली थी इस का अन्दाज़ा मालियात के इन आ'दाद व शुमार और मसारिफ़ से लगाया जा सकता है, यक़ीनन इस की कामयाबी में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की मालियाती निज़ाम के बारे में बेहतरीन ह़िक्मते अ़मली और उ़म्दा तदाबीर शामिल थीं ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رضی اللہ عنہ और ह़िफ़ाज़ती उमूर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे हुकूमत में जिस त़रह़ इस्लाम का पैग़ाम तेज़ी के साथ फैल रहा था उसी त़रह़ अम्नो अमान के क़ियाम और जानो माल की ह़िफ़ाज़त का मुआ़मला भी बहुत ही अहम्मिय्यत इख़्तियार करता चला जा रहा था इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़िफ़ाज़ती उमूर को इतना मज़बूत़ फ़रमा दिया कि लोग बहुत ही सुकून व चैन की ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे ।

चूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे हुकूमत में बह़री जंगें अपने उ़रूज पर थीं लिहाज़ा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस ज़रूरत को मह़सूस फ़रमा कर बह़री जहाज़ बनाने के लिये 49 सिने हिजरी में कारख़ाने क़ाइम फ़रमाए, उस वक़्त सिर्फ़ मिस्र ही में येह कारख़ाना मौजूद था इस के बा'द उर्दुन के

1 . . . المواعظ والاعتبار للمقریزی، ذکر ما عملہ المسلمون ــــ الخ، ۱/ ۲۳۰

www.dawateislami.net

मक़ाम "अ़क्का" में एक कारख़ाना क़ाइम किया गया जिस में इस शो'बे से तअ़ल्लुक़ रखने वाले तमाम कारीगरों को जम्अ़ कर दिया गया और साहिल पर ही उन की रिहाइश वग़ैरा का इन्तिज़ाम कर दिया गया ताकि बह़री जहाज़ बनाने के अहम काम में ख़लल वाक़ेअ़ न हो।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस किन्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बह़री ग़ज़वात पर अमीर मुक़र्रर फ़रमाया था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पचास बह़री ग़ज़वात में शरीक हुवे और उन तमाम जंगों में एक मुसलमान का भी जानी नुक़्सान नहीं हुवा।(2)

यूं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक दौर में दिफ़ाई निज़ाम निहायत मज़बूत रहा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इन्ही बेहतरीन तदाबीर और ह़िक्मते अ़मलियों की बिना पर तमाम रियासत दाख़िली और ख़ारिजी ख़त़रात से मह़फ़ूज़ रही और यूं फ़ुतूह़ात का दाइरा वसीअ़ होता चला गया।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया के दौ२ में पैग़ाम २सानी का निज़ाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! जिस त़रह़ अ़ह्दे फ़ारूक़ी में पैग़ाम रसानी का निज़ाम (Communication System) निहायत

1 ... فتوح البلدان، امر الاردن، ص ۱۲۱

2 ... الاصابۃ، عبداللہ بن قیس الکندی، ۵/۷۴

www.dawateislami.net

मज़बूत़ था और बर वक़्त इत्तिलाअ़ के ज़रीए़ हर जगह के अह़वाल से आगाही ह़ासिल हो जाती थी, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस निज़ाम को इतना मज़बूत़ तरीन बना दिया था कि बारह मील के फ़ासिले पर एक चौकी क़ाइम फ़रमा दी जिस में "अल बरीद" के नाम से एक मुस्तक़िल शो'बा क़ाइम था। उस चौकी में हर वक़्त एक तेज़ रफ़्तार और ताज़ादम घोड़ा मौजूद रहता जब क़ासिद का घोड़ा थक जाता तो वोह उस चौकी से घोड़ा तब्दील कर लेता, यूं कम वक़्त में बहुत जल्दी पैग़ाम पहुंच जाया करता था। इस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दूरो दराज़ अ़लाक़ों पर मुक़र्रर गवर्नरों को अह़कामात भी पहुंचाते और वहां के ह़ालात से भी भरपूर आगाही ह़ासिल फ़रमाया करते।[1]

ख़ुतूत़ पर मोहर और नक़्श महफ़ूज़ रखने का निज़ाम राइज फ़रमाया

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुतूत़ पर मोहर लगाने का त़रीक़ा भी राइज फ़रमाया इस का सबब येह बना कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स के लिये एक लाख दिरहम बैतुल माल से देने का हुक्म तह़रीर फ़रमाया लेकिन उस शख़्स ने तसर्रुफ़ कर के उसे एक लाख के बजाए दो लाख कर दिया, जब इस ख़ियानत का इ़ल्म ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुवा तो आप ने उस शख़्स का

1 ... الآداب السلطانیۃ للفخری، معاویۃ امیر المومنین، کلام فی معنی البرید، ص ۱۰۲

www.dawateislami.net

मुहासबा फ़रमाया फिर इस के बा'द ख़ुतूत पर मोहर लगाने का निज़ाम नाफ़िज़ फ़रमा दिया।[1] इस के इलावा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुतूत की नक़्ल महफ़ूज़ रखने का भी एहतिमाम फ़रमाया।[2]

एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना हरम बिन ह़बान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में हुवा। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तदफ़ीन के बा'द आप की क़ब्र मुबारक पर एक बादल आ गया और उसी वक़्त आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की क़ब्र पर घास उग गई।[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़सद और फ़क़्र की आफ़ात

... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "كَادَ الْفَقْرُ اَنْ يَّكُوْنَ كُفْرًا وَّكَادَ الْحَسَدُ اَنْ يَّغْلِبَ الْقَدَرَ" या'नी फ़क़ीरी क़रीब है कि कुफ़्र हो जाए और ह़सद क़रीब है कि तक़्दीर पर ग़ालिब आ जाए।"

(شعب الایمان، باب فی الحث علی ترک الغل والحسد، ۲۶۷/۵، حدیث: ۶۶۱۲)

---

1 ... تاریخ الخلفاء، معاویۃ بن ابی سفیان، ص ۱۶۰

2 ... تاریخ یعقوبی، وفاۃ الحسن بن علی، ۲۷۶/۲

3 ... البدایۃ والنہایۃ، سنۃ ست واربعین، سراقۃ بن کعب۔۔۔الخ، ۵۱۷/۵

www.dawateislami.net

सातवां बाब

अल्लाह वालों से महब्बत व अक़ीदत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों से महब्बत रखना और उन के मनाक़िब बयान कर के उन की अ़ज़मत और बुलन्द मक़ामो मर्तबे का डंका बजाना मुसलमानों का मा'मूल है और येह त़रीक़ा हमें सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मुबारक सीरत से मिला है। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से अपनी महब्बत व अ़क़ीदत का इज़हार फ़रमाते, कभी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के मनाक़िब बयान करने का हुक्म इरशाद फ़रमाते, कभी ख़ुद उन की अ़ज़मत बयान करते, कभी उन के वसीले से दुआ़ मांगते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते मुबारका से सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की अ़ज़मतो शान और उन के औसाफ़े ह़मीदा बयान करने और सुनने के चन्द वाक़िआ़त मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के औसाफ़ बयान करो

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'सआ़ बिन सूह़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَيْہ से फ़रमाया : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के औसाफ़ बयान करो।" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिआ़या के अह़वाल जानने वाले, रिआ़या के माबैन अ़द्लो इन्साफ़ करने वाले, आ़जिज़ी फ़रमाने वाले और उ़ज़्र क़बूल फ़रमाने वाले थे, ह़ाजतमन्दों के लिये आप के दरवाज़े हर वक़्त खुले रहते थे। ह़क़ बात के लिये जिद्दो जह्द करना और बुरे

www.dawateislami.net

अ़मल से दूर रहना आप की सिफ़ात थीं, और आप कमज़ोरों पर शफ़्क़त फ़रमाने वाले, धीमे लह्जे वाले, निहायत कम गो और ऐ़ब से बेह़द दूर रहने वाले थे।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जो औसाफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने बयान किये गए यक़ीनन येह कामिल मुसलमान की सिफ़ात हैं जो उसे दुन्या व आख़िरत में कामयाबी से हमकिनार करवाती है। हमें भी फ़िक्रे मदीना करते हुवे वक़्तन फ़ वक़्तन अपनी ज़ात से ख़राबियों को दूर कर के अच्छाइयों को अपनाना चाहिये ताकि हमें भी दुन्या व आख़िरत की कामयाबियां नसीब हों।

बारिश के लिये बुज़ुर्ग का वसीला

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैम बिन आ़मिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है : एक मरतबा बारिशें न होने की वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अह्ले दिमश्क़ नमाज़े इस्तिस्क़ा अदा करने निकले, नमाज़ से फ़राग़त के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मिम्बर पर जल्वा फ़रमा हो कर इरशाद फ़रमाया : यज़ीद बिन अस्वद कहां हैं ? तो लोगों ने उन्हें आवाज़ दी। ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अस्वद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें मिम्बर पर तशरीफ़ रखने का हुक्म फ़रमाया तो ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अस्वद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हुक्म की ता'मील करते हुवे मिम्बर पर आए और ह़ज़रते सय्यिदुना

1 ... المجالسة وجواهر العلم، الجزء الخامس والعشرون، ۲۲۸/۳

www.dawateislami.net

अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़दमों में बैठ गए। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में यूं दुआ़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! आज हमारे दरमियान जो सब से बेहतर और अफ़्ज़ल बन्दा है हम उस के वसीले से तुझ से सुवाल करते हैं, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! आज हम तुझ से यज़ीद बिन अस्वद के वसीले से दुआ़ करते हैं," ऐ यज़ीद बिन अस्वद ! आप भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ कीजिये। तो ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अस्वद رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने हाथ दुआ़ के लिये उठा दिये। कुछ ही देर में मग़रिब की जानिब से बादलों की गहरी घटाएं छा गईं, ठन्डी ठन्डी हवाएं चलने लगीं और अभी लोग अपने घरों को भी न पहुंचे थे कि रह़मते इलाही से भरपूर बारिश बरसना शुरूअ़ हो गई।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह वालों से मह़ब्बत ईमान की अ़लामत है, इन के सदक़े अ़ज़ाबात टलते और ने'मतें मिलती हैं। इन की सोह़बत क़ुर्बे इलाही पाने का ज़रीआ़ होती है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों को बारगाहे इलाही में वसीला बनाने का अ़मल रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक ज़माने से आज तक चला आ रहा है। विलादते बा सआ़दत से क़ब्ल यहूदी ह़ुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वसीले की बरकत से जंगों में फ़त्ह़याब होते थे,(2) ह़ुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने भी ब ज़ाते

1 . . . طبقات ابن سعد، الطبقة الاولی من اهل الشام۔۔الخ، یزید بن الاسود الجرشی، ۷/۳۰۹، سیر اعلام النبلاء، الجرشی یزید بن الاسود، ۵/۱۵۷

2 . . . خزائن العرفان، پ ۱، البقرة، تحت الآیة: ۸۹

www.dawateislami.net

ख़ुद मुहाजिरीन फ़ुक़रा के वसीले से दुआ़ मांगी,[1] इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वसीले से बारिश की दुआ़ की[2] एक नाबीना सह़ाबी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को वसीला बना कर बीना हुवे[3], इसी त़रह़ नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पर्दा फ़रमाने के बा'द सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तल्क़ीन के मुत़ाबिक़ एक शख़्स ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी दुआ़ में वसीला बनाया।[4] येह भी मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ़जिज़ी के पैकर थे और ब ज़ाते ख़ुद जलीलुल क़द्र सह़ाबी होने के बा वुजूद ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अस्वद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वसीले से दुआ़ मांगी और उन से भी दुआ़ के त़लबगार हुवे।

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رضی اللہ عنہ की आ़जिज़ी

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़रमान है : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुन्या की जुस्त्जू की न दुन्या उन की त़रफ़ माइल हुई

1 ... مشکاۃ المصابیح، کتاب الرقاق، باب فضل الفقراء۔۔۔الخ، الفصل الثانی، ۲/۲۵۵، حدیث: ۵۲۴۷
2 ... بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب ذکر العباس بن عبد المطلب، ۲/۵۳۷، حدیث: ۳۷۱۰
3 ... ترمذی، کتاب الدعوات، احادیث شتی، ۵/۳۳۶، حدیث: ۳۵۸۹ ماخوذاً
4 ... معجم کبیر، ما اسند عثمان بن حنیف، ۹/۳۰، حدیث: ۸۳۱۱ ماخوذاً

www.dawateislami.net

और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ दुन्या तो आई मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की त़रफ़ तवज्जोह न की, (फिर बत़ौरे आ़जिज़ी फ़रमाया) जब कि हम तो दुन्या में डूब गए।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन येह ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़जिज़ी व इन्किसारी थी क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद भी इबादतो रियाज़त, ज़ोह्दो तक़्वा के पैकर थे।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सात बातों की मुमानअ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **ह़िम्स** में ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चन्द चीज़ों से मन्अ़ फ़रमाया है, मैं तुम्हें वोह चीज़ें बताता हूं और उन से रुकने का हुक्म देता हूं (1) नौह़ा (2) शे'र (3) तसावीर (4) बे पर्दगी (5) दरिन्दों की खाल (6) सोना और (7) रेशम।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

उम्मुल मोमिनीन की ख़ैरख़्वाही

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत का भी एहतिमाम फ़रमाया करते थे चुनान्चे, एक मरतबा

1 ... تاریخ ابن عساکر، عمر بن الخطاب، ۴۴/۲۸۸ ملتقطاً

2 ... معجم اوسط، من اسمہ محمد، ۴/۳۹۶ حدیث: ۶۳۹۶

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की जानिब से अठ्ठारह हज़ार दीनार का क़र्ज़ अदा फ़रमाया ।(1)

बेश क़ीमत हार का तोहफ़ा

हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ लाईं तो हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें एक बेश क़ीमत हार जिस की क़ीमत एक लाख रूपे थी पेश किया जिसे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने क़बूल फ़रमा लिया ।(2)

सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा की सख़ावत

हज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की बारगाह में एक लाख दिरहम भेजे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! शाम होने से पहले ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने वोह तमाम रक़म (ह़ाजत मन्दों में) तक़्सीम फ़रमा दी ।(3)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सालिहीन का दुन्या से चले जाना आज़माइश है

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भतीजे का इन्तिक़ाल हुवा तो लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ता'ज़ियत

---

1 ... سیر اعلام النبلاء، عائشۃ ام المؤمنین۔۔۔الخ، ۳/ ۴۶۲

2 ... البدایۃ والنھایۃ، سنۃ ستین من الھجرۃ النبویۃ، وھذہ ترجمۃ معاویۃ۔۔۔الخ، ۵/ ۶۴۰

3 ... سیر اعلام النبلاء، عائشۃ ام المؤمنین۔۔۔الخ، ۳/ ۴۶۲

www.dawateislami.net

के लिये हाज़िर होने लगे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों से इरशाद फ़रमाया : अबू सुफ़्यान की आल में से एक लड़के का इन्तिक़ाल इतनी बड़ी आज़माइश नहीं है, सब से बड़ी आज़माइश तो अबू मुस्लिम ख़ौलानी और कुरैब बिन सैफ़ अज़दी (رَحِمَہُمَا اللّٰہُ تَعَالٰی) की मौत है।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

महब्बते रसूल की उ़म्दा मिसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ह़द दरजा महब्बत की एक मिसाल वोह है जिस को ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी इ़याज़ ने शिफ़ा शरीफ़ में ज़िक्र किया है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना काबिस बिन रबीआ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात के लिये हाज़िर हुवे तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से मुआ़नक़ा किया (या'नी गले मिले), उन की पेशानी को बोसा दिया और **मिरआ़ब** नामी अ़लाक़े की ज़मीन उन को अ़त़ा फ़रमाई, येह अ़त़ा व इकराम सिर्फ़ इस लिये था कि ह़ज़रते सय्यिदुना काबिस बिन रबीआ़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बहुत मुशाबहत रखते थे।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ... تاریخ ابن عساکر، عبداللہ بن ثوب، ۲۷/۲۳۲

2 ... الشفاء، الباب الثالث فی تعظیم امرہ۔۔۔الخ، فصل ومن توقیرہ۔۔۔الخ، ۲/۵۱

www.dawateislami.net

आठवां बाब

सय्यिदुना अमीरे मुआविया के फ़ज़ाइल

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सहाबिय्यत का शरफ़ पाने वाले ख़ुश नसीब अफ़राद बा'द वालों तक दा'वते इस्लाम पहुंचाने का अहम ज़रीआ़ और वसीला हैं क्यूंकि येही वोह ख़ुशबख़्त हस्तियां हैं कि जिन्हों ने बारगाहे रिसालत में रह कर तरबिय्यत के तमाम मराहिल तै़ किये, बराहे रास्त कलामे नबवी सुनने की सआ़दत ह़ासिल की और अह़ादीसे रसूल से भलाई, हिदायत और नूर ह़ासिल फ़रमा कर ता क़ियामत आने वाले लोगों के लिये अ़मली नमूना पेश किया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को "رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ"[1] की ईमान अफ़रोज़ बिशारत से नवाज़ा फिर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन "मदीने अ़रबो अ़जम" को नज्म (या'नी सितारे)[2] फ़रमा कर मुमताज़ फ़रमाया। उन के फ़ज़ाइल ख़ुद सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़बान से अदा हुवे इसी लिये सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के फ़ज़ाइलो कमालात पढ़ना, सुनना ईमान की ताज़गी का सबब भी है और बद अ़क़ीदगी से बचने का मुअस्सिर त़रीक़ा भी है।

---

1 ... پ۱۱، التوبۃ: ۱۰۰

2 .....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे सह़ाबा की मिसाल सितारों की सी है, जिन से राह तलाश की जाती है, तुम उन में से जिस के क़ौल पर अ़मल करोगे हिदायत पा जाओगे।" (مسند عبد بن حمید، احادیث ابن عمر، ۱/۲۵۰، حدیث: ۷۸۳)

www.dawateislami.net

सह़ाबए किराम की फ़ज़ीलत क़ुरआन से

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ूब ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये : किसी भी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इ़ज़्ज़तो एह़तिराम और अ़ज़मतो फ़ज़ीलत के लिये येह हरगिज़ ज़रूरी नहीं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नाम ले कर उन की कोई फ़ज़ीलत इरशाद फ़रमाई हो । क्यूंकि **मर्तबए सह़ाबिय्यत** वोह ए'ज़ाज़ है जो किसी भी इबादतो रियाज़त से ह़ासिल नहीं हो सकता लिहाज़ा अगर हमें किसी सह़ाबिये रसूल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की फ़ज़ीलत के बारे में कोई रिवायत न भी मिले तब भी बिला शको शुबा वोह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मोह़तरम व मुकर्रम और अ़ज़मत व फ़ज़ीलत के बुलन्द मर्तबे पर फ़ाइज़ हैं क्यूंकि काइनात में मर्तबए नबुव्वत के बा'द सब से अफ़्ज़लो आ'ला मक़ामो मर्तबा सह़ाबी होना है । साह़िबे नबरास उस्ताज़ुल उ़लमा ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ पिरहारवी चिश्ती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : याद रहे हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की ता'दाद साबिक़ा अम्बियाए किराम की ता'दाद के मुवाफ़िक़ (कमो बेश) एक लाख चौबीस हज़ार है[1] मगर जिन के फ़ज़ाइल में अह़ादीस मौजूद हैं वोह चन्द ह़ज़रात हैं और बाक़ी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की फ़ज़ीलत में नबिय्ये करीम

1.....अम्बिया की कोई ता'दाद मुअ़य्यन करना जाइज़ नहीं, कि ख़बरें इस बाब में मुख़्तलिफ़ हैं और ता'दादे मुअ़य्यन पर ईमान रखने में नबी को नबुव्वत से ख़ारिज मानने, या ग़ैरे नबी को नबी जानने का एह़तिमाल है और येह दोनों बातें कुफ़्र हैं, लिहाज़ा येह ए'तिक़ाद चाहिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हर नबी पर हमारा ईमान है। (बहारे शरीअ़त, 1/52)

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सह़ाबी होना ही काफ़ी है क्यूंकि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बते मुबारका की फ़ज़ीलते अ़ज़ीमा के बारे में क़ुरआने मजीद की आयात और अ़ह़ादीसे मुबारका नातिक़ हैं, पस अगर किसी सह़ाबी के फ़ज़ाइल में अ़ह़ादीस न भी हों या कम हों तो येह उन की फ़ज़ीलत व अ़ज़मत में कमी की दलील नहीं है।[1] सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की फ़ज़ीलत के लिये येह ही एक आयत काफ़ी है :

وَ السّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِیْنَ وَ الْاَنْصَارِ وَ الَّذِیْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍۙ رَّضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ وَ اَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًاؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ[2]

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और सब में अगले पहले मुहाजिर और अन्सार जो भलाई के साथ उन के पैरू (पैरवी करने वाले) हुवे* ***अल्लाह*** *उन से राज़ी और वोह* ***अल्लाह*** *से राज़ी और उन के लिये तय्यार कर रखे हैं बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा उन में रहें येही बड़ी कामयाबी है।*

इस आयत के तह़्त तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, जिल्द 4, सफ़ह़ा, 219 पर है : इस से मा'लूम हुवा कि सारे सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم आ़दिल हैं और जन्नती हैं इन में कोई गुनहगार और फ़ासिक़ नहीं लिहाज़ा जो बदबख़्त किसी तारीख़ी वाक़िआ़ या रिवायत की वज्ह से सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में से किसी को

1 ... الناهية، فصل فی فضائل معاوية رضی الله عنه، ص ۳۸

2 ... پ ۱۱، التوبة: ۱۰۰

www.dawateislami.net

फ़ासिक़ साबित करे, वोह मर्दूद है कि इस आयत के ख़िलाफ़ है और ऐसे शख़्स को चाहिये कि वोह दर्जे ज़ैल ह़दीसे पाक को दिल की नज़र से पढ़ कर इ़ब्रत ह़ासिल करने की कोशिश करे, चुनान्चे, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मग़फ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो। मेरे बा'द इन्हें निशाना न बनाना क्यूंकि जिस ने इन से मह़ब्बत की तो उस ने मेरी मह़ब्बत की वज्ह से इन से मह़ब्बत की और जिस ने इन से बुग़्ज़ रखा तो उस ने मेरे बुग़्ज़ की वज्ह से इन से बुग़्ज़ रखा और जिस ने इन्हें सताया उस ने मुझे सताया और जिस ने मुझे सताया उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी तो क़रीब है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की पकड़ फ़रमा ले।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के आ़म तौ़र पर दो त़रह़ के फ़ज़ाइल हैं। (1) उ़मूमी (2) ख़ुसूसी

सह़ाबए किराम के उ़मूमी फ़ज़ाइल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के उ़मूमी फ़ज़ाइल से मुराद क़ुरआने मजीद की वोह आयात और अह़ादीसे मुबारका हैं कि जिन में किसी का नाम लिये बिग़ैर सिर्फ़

1 ... ترمذی، کتاب المناقب، باب فی من سبّ اصحاب النبیّ صلی اللہ علیہ وسلم، ۵/۴۲۳، حدیث: ۳۸۸۸

www.dawateislami.net

सह़ाबी होने की फ़ज़ीलत बयान की गई है। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइलो कमालात भी बे शुमार हैं जिन में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह से मिलने वाली हर एक फ़ज़ीलत ही हमारे दिल में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मह़ब्बत और अ़क़ीदत में मज़ीद इज़ाफ़े का सबब है। येह बाब तीन ह़िस्सों पर मुश्तमिल होगा :

(1) फ़ज़ाइले अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने मुस्त़फ़ा (2) फ़ज़ाइले अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने अह्ले बैत व सह़ाबा (3) फ़ज़ाइले अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने उ़लमा व औलियाए उम्मत

(1) फ़ज़ाइले अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने मुस्त़फ़ा

ग़ुलाम तो आक़ा की इनायतों और एह़सानात को तस्लीम करते हुवे उस की ता'रीफ़ व मद्ह़ में कोई कसर नहीं छोड़ता लेकिन ग़ुलाम का इम्तियाज़ी वस्फ़ तो येह है कि उस की ख़ूबियों पर आक़ा दादो तह़सीन दे कर सराहे, उस के लिये अपने ख़ुसूसी जज़्बात का इज़ह़ार करे। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार भी उन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में होता है जिन्हें आक़ाए दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह से परवानए मह़ब्बत भी अ़त़ा हुवा और इल्मो ह़िल्म और हिदायत याफ़्ता होने की बेश क़ीमत सनद भी। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم यक़ीनन हमारे ईमान व अ़क़ीदे की ताज़गी और दिलो दिमाग़ को मुअ़त्त़र करने का सबब बनेंगे। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

(1) हादी व महदी बना दे

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी अ़मीरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَللّٰھُمَّ اجْعَلْہُ ھَادِیًا مَّھْدِیًّا، وَاھْدِ بِہٖ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन्हें (या'नी ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को) हादी (या'नी हिदायत देने वाला) महदी (हिदायत याफ़्ता) बना दे और इन के ज़रीए़ से लोगों को हिदायत दे।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : सादिक़ो मस्दूक़ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस दुआ़ में ग़ौर कीजिये क्यूंकि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अपनी उम्मत के ह़क़ में ख़ास त़ौर पर की जाने वाली दुआ़एं बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में इतनी मक़्बूल हैं कि रद किये जाने का इमकान तक नहीं, येह नुक्ता भी ज़ेह्न में रखिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह दुआ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में इस त़रह़ क़बूल फ़रमाई कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को महदी (हिदायत याफ़्ता) और लोगों के लिये हादी बनाया और येह दोनों सिफ़ात जिस में जम्अ़ हो जाएं तो किस त़रह़ उस शख़्सिय्यत के बारे में बदगो और

1 ... ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب معاویۃ بن ابی سفیان، ۵/۴۵۵، حدیث: ۳۸۶۸

www.dawateislami.net

बुग़्ज़ो इ़नाद रखने वालों के अक़्वाल की जानिब ध्यान दिया जा सकता है ?"[1] ह़ज़रते शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को हिदायत याफ़्ता और ज़रीअ़ए हिदायत फ़रमाया क्यूंकि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मा'लूम था कि येह मुसलमानों के ख़लीफ़ा बनेंगे ।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) किताब व ह़िक्मत सिख़ा दे

ह़ज़रते सय्यिदुना इ़रबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुआ़विया को किताब का इ़ल्म और ह़िक्मत सिख़ा और इसे अ़ज़ाब से बचा ।[3]

(3) दुन्या व आख़िरत में मग़्फ़िरत याफ़्ता

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास जल्वा फ़रमा थे, किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : देखो कौन है ?

1 ... تطہیر الجنان، الفصل الثانی فی فضائلہ۔۔۔الخ، ص ۱۱

2 ... ازالۃ الخفاء، مقصد اول، فصل پنجم، بیان فتن، ۱/ ۵۷۲ ملخصاً

3 ... معجم کبیر، مسلمۃ بن مخلد، ۱۹/ ۴۳۹، حدیث: ۱۰۲۶ ملتقطاً، مجمع الزوائد، کتاب المناقب، باب ماجاء فی معاویۃ بن ابی سفیان، ۹/ ۵۹۴، حدیث: ۱۵۹۱۷ واللفظ لہ

www.dawateislami.net

अ़र्ज़ की : मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) हैं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उन्हें बुला लो । ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कान पर क़लम रखा हुवा था जिस से आप किताबत फ़रमाया करते थे । नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुआ़विया ! तुम्हारे कान पर क़लम कैसा है ? ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : मैं इस क़लम को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये तय्यार रखता हूं । नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे नबी की त़रफ़ से तुम्हें जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए, मेरी ख़्वाहिश है कि तुम सिर्फ़ वह्य की किताबत किया करो और मैं हर छोटा बड़ा काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वह्य से ही करता हूं तुम कैसा मह़सूस करोगे जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें पोशाक पहनाएगा । या'नी ख़िलाफ़त अ़त़ा फ़रमाएगा । (येह बात सुन कर) ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उठीं और ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रू बरू बैठ कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे भाई को ख़िलाफ़त अ़त़ा फ़रमाएगा ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हां ! लेकिन इस में आज़माइश है, आज़माइश है, आज़माइश है । उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप इन के लिये दुआ़ फ़रमा दीजिये । नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

www.dawateislami.net

दुआ़ की : "اَللّٰهُمَّ اهْدِهٖ بِالْهُدٰى، وَجَنِّبْهُ الرَّدٰى، وَاغْفِرْ لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ وَالْاُولٰى" या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को हिदायत पर साबित क़दमी अ़ता फ़रमा, इन्हें हलाकत से महफ़ूज़ फ़रमा और दुन्या व आख़िरत में इन की मग़फ़िरत फ़रमा।"[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) इसे इ़ल्म व हिल्म से भर दे

ह़ज़रते सय्यिदुना वह़्शी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सुवारी पर पीछे बैठे हुवे थे। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम्हारे जिस्म का कौन सा ह़िस्सा मेरे जिस्म से मस हो रहा है ? ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : मेरा पेट। नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे इ़ल्म व ह़िल्म से मा'मूर फ़रमा दे।[2]

(5) अल्लाह व रसूल मुआ़विया से महब्बत करते हैं

एक रोज़ नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के

1 ... معجم اوسط، من اسمہ احمد، ۱/۴۹۷، حدیث: ۱۸۳۸

2 ... خصائص کبری، ذکر المعجزات فی إجابۃ الدعوات۔۔الخ، باب جامع من دعواتہ۔۔الخ، ۲/۲۹۳، التاریخ الکبیر، باب الواو، وحشی، ۸/۶۸، رقم: ۲۶۲۴، الشریعۃ، الجزء الثالث والعشرون، کتاب فضائل معاویۃ بن ابی سفیان۔۔۔الخ، ۵/۲۴۳۱

www.dawateislami.net

यहां तशरीफ़ लाए, तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अपने भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बालों में कंघी करते देखा। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम मुआ़विया से मह़ब्बत करती हो ? अ़र्ज़ की : "येह मेरे भाई हैं, इन से मह़ब्बत क्यूं न होगी ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** व रसूल भी मुआ़विया से मह़ब्बत करते हैं।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(6) हैं जिब्रील के भी प्यारे अमीरे मुआ़विया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक दिन उम्मुल मोमिनीन **ह़ज़रते** सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर तशरीफ़ लाए तो **ह़ज़रते** अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चारपाई पर सो रहे थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : येह कौन है ? सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : येह मेरे भाई मुआ़विया हैं। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम इन से मह़ब्बत करती हो ? सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : यक़ीनन मैं इन से मह़ब्बत करती हूं। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इन से मह़ब्बत करो, बेशक मैं मुआ़विया से मह़ब्बत करता हूं

1 ... تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔الخ، ۵۹/۸۹ ملخصاً

www.dawateislami.net

और उस शख़्स से भी महब्बत करता हूं जो मुआ़विया से महब्बत रखता है और जिब्रील व मीकाईल भी मुआ़विया से महब्बत रखते हैं, ऐ उम्मे ह़बीबा ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिब्रील व मीकाईल (علیہما السلام) से भी बढ़ कर मुआ़विया से महब्बत फ़रमाता है।"[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(7) मुआ़विया ! तुम मुझ से हो

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत फ़रमाते हैं : एक रोज़ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अभी तुम्हारे दरमियान एक शख़्स आएगा वोह जन्नती है तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दाख़िल हुवे । प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुआ़विया मैं तुम से हूं और तुम मुझ से हो फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दो उंगलियां (दरमियानी और इस के साथ वाली) हिला कर फ़रमाया : तुम जन्नत के दरवाज़े पर मेरे साथ इस त़रह़ होगे।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ... تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔الخ، ۵۹/۸۹

2 ... الشریعۃ، الجزء الثالث والعشرون، کتاب فضائل معاویۃ۔۔الخ، بشارۃ النبی۔۔الخ، ۵/۲۴۴۴، حدیث: ۱۹۲۵، مسند الفردوس، باب الیاء، ۵/۳۹۳، حدیث: ۸۵۳۰، لسان المیزان، عبدالعزیز بن بحر المروزی، ۴/۳۷۹، رقم: ۵۲۱۱، السنۃ للخلال، ذکر ابی عبدالرحمن معاویۃ بن ابی سفیان۔۔الخ، ۱/۴۵۴، رقم: ۷۰۴، تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔۔الخ، ۵۹/۹۸

www.dawateislami.net

(8) उ़मूमी फ़ज़ीलत में ख़ुसूसी ए' ज़ाज़

ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़िराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : मेरी उम्मत का पहला लश्कर जो समन्दर में जिहाद करेगा, उन (मुजाहिदीन) के लिये (जन्नत) वाजिब है।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना मुहल्लब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : इस रिवायत से ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ज़ीलत ज़ाहिर होती है क्यूंकि उन्हों ने समन्दरी रास्ते से पहला जिहाद किया था, जिस की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में बिशारत दी थी और जिन लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के परचम तले जिहाद किया था उन को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अव्वलीन क़रार दिया, उ़लमाए सीरत ने लिखा है कि येह मुजाहिदीन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़माने में थे। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अबी बक्र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त में ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुसलमानों की क़ियादत करते हुवे क़ुबरुस में जिहाद किया था और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदतुना

1 ... بخاری، کتاب الجهاد والسیر، باب ما قیل فی قتال روم، ۲/۲۸۸، حدیث: ۲۹۲۴

www.dawateislami.net

उम्मे ह़िराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी उन के साथ थीं। जब वोह समन्दरी सफ़र से वापसी में बह़री जहाज़ से उतरीं तो ख़च्चर पर सुवार हुईं और उस से गिर कर शहीद हो गईं। इब्नुल कल्बी ने बयान किया है कि येह ग़ज़वा अठ्ठाईस हिजरी में हुवा था।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(9) रसूलुल्लाह के राज़दार

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक दिन नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़शरए मुबश्शरा के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए और ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का भी यूं ज़िक्र फ़रमाया : मुआ़विया बिन अबी सुफ़्यान मेरे राज़दारों में से हैं जिस ने इन तमाम से मह़ब्बत की वोह नजात पा गया और जिस ने इन से बुग़्ज़ रखा हलाक हो गया।(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(10) सल्तनत की बिशारत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब अ़लील हुवे तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप से वोह बरतन ले लिया जिस से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

1 ... شرح ابن بطال، کتاب الجهاد والسیر، باب الدعاء بالجهاد والشهادة الخ، ۵/ ۱۱، تحت الحدیث: ۲۹۲۴

2 ... شرف المصطفی، جامع ابواب الفضائل والمناقب، باب فضائل الاربعة وسائر الصحابة اجمعین، فصل ومن فضائل بعض الصّحابة مجتمعین، ۶/ ۸۹، ریاض النضرة، الباب الثانی، الفصل الرابع، فی وصف کل واحد۔۔۔الخ، ۱/ ۳۶ مختصراً

www.dawateislami.net

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को वुज़ू करवाया करते थे। एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को वुज़ू करवा रहे थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दौराने वुज़ू एक दो मरतबा अपना सर उठा कर देखा फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुख़ात़ब कर के इरशाद फ़रमाया : अगर तुझे कोई ज़िम्मेदारी सोंपी जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरना और अ़द्ल करना। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : सरकारे बह़रो बर, ग़ैबों से बा ख़बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान के सबब मुझे इस आज़माइश में मुब्तला होने का यक़ीन हो गया था और आख़िरकार मैं (ह़ाकिम बनने के सबब) इस आज़माइश में मुब्तला हो गया।[1]

वोह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(11) अमीरे मुआ़विया क़वी व अमीन हैं

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को किसी काम से मुतअ़ल्लिक़ मश्वरा करने के लिये त़लब फ़रमाया लेकिन दोनों ने अ़र्ज़ किया : اَللّٰہُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

1 ... مسند احمد، حدیث معاویۃ بن ابی سفیان، ۶/۳۲، حدیث: ۱۶۹۳۱

www.dawateislami.net

और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को बुलाओ, और मुआ़मला उन के सामने रखो क्यूंकि वोह क़वी और अमीन हैं ।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(12) नूर की चादर की बिशारत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत (आप के भाई) मुआ़विया को इस त़रह़ उठाएगा कि उन पर नूर की चादर होगी ।(2)

(13) किताबुल्लाह के अमीन

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अमीरे मुआ़विया को मेरा सलाम कहिये और उन से हुस्ने सुलूक फ़रमाइये क्यूंकि वोह किताबुल्लाह और

1 . . . مسند بزار، مسند عبد اللہ بن بسر، ۸/۴۳۳، حدیث: ۳۵۰۷، تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر ـ ـ الخ، ۵۹/۸۶ ملخصاً، البدایۃ والنہایۃ، سنۃ ستین من الھجرۃ النبویۃ، و ھذہ ترجمۃ معاویۃ ـ ـ الخ، ۵/۶۲۴ ملخصاً، سیر اعلام النبلاء، معاویۃ بن ابی سفیان، ۴/۲۹۰، تاریخ الاسلام للذھبی، ۴/۳۱۰

2 . . . تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر ـ ـ الخ، ۵۹/۹۲ مختصراً

www.dawateislami.net

वह्ये इलाही पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अमीन हैं और वोह बहुत अच्छे अमीन हैं।[1]

(14) मैं अ़ली से महब्बत करता हूं

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : मैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर था, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी और ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن भी मौजूद थे। अचानक ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم तशरीफ़ लाए। नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : ऐ मुआ़विया ! क्या तुम अ़ली से महब्बत करते हो ? ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : उस ज़ात की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इन से बहुत महब्बत करता हूं। आक़ाए दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक अ़न क़रीब तुम दोनों के दरमियान आज़माइश होगी। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस के बा'द क्या होगा ? शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : (इस के बा'द) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुआ़फ़ी, उस की रिज़ामन्दी और जन्नत में दाख़िला। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

1 ... معجم اوسط، من اسمه علی، ۳/۷۳، حدیث: ۳۹۰۲، البدایة والنهایة، سنة ستین من الهجرة النبویة، و هذه ترجمة معاویة، ۵/۶۲۲، الآلی المصنوعة، کتاب المناقب، ۱/۳۸۳ واللفظ له

www.dawateislami.net

ने अ़र्ज़ की : हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ैसले पर राज़ी हैं और उस वक़्त येह आयत नाज़िल हुई :

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ (1)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और* **अल्लाह** *चाहता तो वोह न लड़ते मगर* **अल्लाह** *जो चाहे करे ।*(2)

(15) आग के तौ़क़ की वईद

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ मुआ़विया ! (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) जो तेरी फ़ज़ीलत में शक करे वोह क़ियामत के रोज़ यूं उठाया जाएगा कि उस के गले में आग का तौ़क़ होगा ।(3)

(16) अमीरे मुआ़विया जन्नती हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अभी तुम्हारे पास एक जन्नती शख़्स आएगा, तो ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ह़ाज़िर हुवे । दूसरे दिन फिर इरशाद फ़रमाया : अभी तुम्हारे पास एक जन्नती शख़्स आएगा, तो फिर ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ह़ाज़िर हुवे । तीसरे दिन

---

1 ... پ۳، البقرۃ: ۲۵۳

2 ... تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔۔الخ، ۵۹/۱۳۹

3 ... تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔۔الخ، ۵۹/۹۰

www.dawateislami.net

भी येही इरशाद फ़रमाया तो ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही ह़ाज़िर हुवे ।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(17) सब से ह़लीम व सख़ी

ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مُعَاوِیَۃُ بْنُ اَبِیْ سُفْیَانَ اَحْلَمُ اُمَّتِیْ وَاَجْوَدُھَا या'नी मेरी उम्मत में मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान सब से बुर्दबार और सख़ी हैं ।(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़िल्म व बुर्दबारी और सख़ावत निहायत उ़म्दा सिफ़ात हैं । हमें भी ऐसे आ'माल को अपनाना चाहिये कि जिस से हमारे अन्दर भी येह सिफ़ात पैदा हो जाएं चुनान्चे,

बुर्दबार बनने का आसान अ़मल

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِعْتَمُّوْا تَزْدَادُوْا حِلْمًا या'नी इ़मामा बांधो तुम्हारा ह़िल्म बढ़ेगा ।(3)

1 ... شرح اصول اعتقاد اهل السنة، سياق ما روى عن النبي في فضائل ابي عبدالرحمن معاوية بن ابي سفيان، ۲/۱۲۶۰، رقم: ۲۷۷۹، حلية الاولياء، ابراهيم بن عيسى، ۱۰/۴۲۶، رقم: ۱۵۷۳۴، الفردوس بماثور الخطاب، باب الياء، ۵/۴۸۲، حديث: ۸۸۳۰

2 ... بغية الباحث، كتاب المناقب، باب فيما اشترك فيه أبو بكر ـ الخ، ۱/۸۹۲، حديث: ۹۶۵، السنة للخلال، ذكر ابي عبدالرحمن معاوية بن ابي سفيان، ۱/۴۵۲، رقم: ۷۰۱، المطالب العالية، كتاب المناقب، باب فيما اشترك فيه جماعة من الصحابة، ۷/۱۶۶، حديث: ۸۸۴۷

3 ... معجم كبير، وما اسند عبدالله بن العباس، ۱۲/۱۷۱، حديث: ۱۲۹۴۶

www.dawateislami.net

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : (इमामा बांधो) तुम्हारा ह़िल्म बढ़ेगा और तुम्हारा सीना कुशादा होगा क्यूंकि ज़ाहिरी वज़्अ़ क़त़्अ़ का अच्छा होना इन्सान को सन्जीदा और बा वक़ार बना देता है नीज़ ग़ुस्से, जज़्बाती पन और बुरी ह़रकात से बचाता है।(1)

ह़िल्म एक बे बहा दौलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिलाशुबा ह़िल्म (बुर्दबारी) एक ऐसी बे बहा दौलत है कि लाखों बल्कि अरबों रूपे में भी ख़रीदी नहीं जा सकती लेकिन नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत पर शफ़्क़त व एह़सान फ़रमाते हुवे इन्तिहाई आसान अ़मल इरशाद फ़रमा दिया कि जिस की बदौलत हम ग़ुस्से और जज़्बाती पन से नजात पा कर अपने अन्दर क़ुव्वते बरदाश्त पैदा कर सकते हैं। जैसा कि ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन जा'फ़र कत्तानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی ह़दीस नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन उ़मैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरफ़ूअ़न रिवायत है وَاعْتَمُّوا تَحْلِمُوا या'नी इमामे बांधो बुर्दबार हो जाओगे।(2)

---

1 ... فیض القدیر، حرف الهمزة، ۱/۷۰۹، تحت الحدیث: ۱۱۴۲

2 ... الدعامة فی احکام سنة العمامة، ص ۱۰ مختصراً

www.dawateislami.net

मोमिनों के मामूं

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे हबीबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मोहतरमा हैं और उम्मुल मोमिनीन होने की वज्ह से तमाम मोमिनीन की मुक़द्दस मां हैं। इस लिये जलीलुल क़द्र उलमा व मुहद्दिसीने किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام ने हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को "**ख़ालुल मोमिनीन**" या'नी मोमिनों के मामूं लिखा है।[(1)]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कातिबे वहूय

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को न सिर्फ़ येह शरफ़ हासिल था कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बादशाहों के नाम ख़ुतूत लिखा करते थे[(2)] बल्कि बसा औक़ात बादशाहों के ख़ुतूत नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पढ़ कर भी सुनाया करते थे जैसा कि

1 . . . درمنثور، پ ۲۸، الممتحنة، تحت الاية:۷، ۱۳۰/۸، مرقاة المفاتيح، كتاب الرقاق، الفصل الثالث، ۵۸/۹، تحت الحديث:۵۲۰۳، السنة للخلال، ذكر ابى عبدالرحمن معاوية بن ابى سفيان، ۴۳۳/۱، رقم:۶۵۷، لمعة الاعتقاد، ص ۳۱، تاريخ ابن عساكر، باب ذكر بنيه وبناته، ۲۰۸/۳، البداية والنهاية، سنة احدى واربعين، فضل معاوية بن ابى سفيان، ۵۰۴/۵، الشريعة، الجزء الثالث والعشرون، فضائل معاوية بن ابى سفيان، ۲۴۳۱/۵

2 . . . اسد الغابه، معاوية بن صخر بن ابى سفيان، ۲۲۱/۵، تاريخ الاسلام للذهبى، ۳۰۹/۴، الاصابة، معاوية بن ابى سفيان، ۱۲۱/۶

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन अबी राशिद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मुझे क़ैसरे रूम के क़ासिद ने बताया कि जब मैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया तो उन्हों ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क़ैसर का ख़त़ पढ़ कर सुनाया।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह फ़ज़ीलत भी ह़ासिल है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर नाज़िल होने वाली वह़्य भी लिखते थे या'नी कातिबे वह़्य थे।(2)

जिन्हें मुस्त़फ़ा लिखना सिखाएं

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक दिन मैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने लिख रहा था। सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दवात में सूफ़ (कपड़ा) डालो और क़लम को टेढ़ा काटो और بِسمِ الله की "ب" खड़ी लिखो और "س" के दन्दाने जुदा जुदा रखो और "میم" के दाइरे को बन्द न करो और लफ़्ज़ **अल्लाह** ख़ूब सूरत लिखो,

1 . . . معجم الصحابة، معاوية بن ابی سفیان، ۳۶۸/۵

2 . . . دلائل النبوة للبیھقی، جماع ابواب دعوات نبینا صلی اللہ علیه وسلم المستجابة فی الاطعمة، باب ماجاء علی من اکل بشماله الخ، ۲۴۳/۲ ملتقطا، تاریخ الخلفاء، معاوية بن ابی سفیان، ص ۱۵۵، تاریخ ابن عساکر، معاوية بن صخر۔۔۔الخ، ۵۵/۵۹، البداية والنهاية، سنة احدی واربعین، فضل معاوية بن ابی سفیان، ۵۰۴/۵، الشریعة، الجزء الثالث والعشرون، فضائل معاوية بن ابی سفیان، ۲۴۳۱/۵، سمط النجوم العوالی، المقصد الرابع، الباب الاوّل فی الدولة الاموية، ذکر مناقبه، ۱۵۴/۳

www.dawateislami.net

लफ़्ज़ रह़मान भी वाज़ेह़ और ख़ूब सूरत कर के लिखो और लफ़्ज़ रह़ीम भी उ़म्दा और अच्छा लिखो।(1)

बिशारते फ़त्ह़े शाम ब ज़बाने शाहे ख़ैरुल अनाम

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ तशरीफ़ ले जा रहे थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुल्के शाम का ज़िक्र किया गया और एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! हम मुल्के शाम कैसे फ़त्ह़ कर सकते हैं ? वोह तो "रूम" में है ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना मुबारक अ़सा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कन्धे पर रखते हुवे फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इस (या'नी अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के ज़रीए़ काफ़ी होगा। (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़रीए़ शाम पर फ़त्ह़ अ़ता फ़रमाएगा)(2)

ऐसों से दूर रहिये

ह़ज़रते अबुल ह़ारिस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में एक ख़त भेजा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए ! आप ऐसे शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ क्या फ़रमाते हैं जो

---

1 ... الشفاء الباب الرابع، فصل و من معجزاته الباهرة، ۱/۳۵۷ واللفظ له، الفردوس بماثور الخطاب، باب الیاء، ۵/۳۹۴، حدیث: ۸۵۳۳

2 ... تاریخ ابن عساکر، معاویة بن صخر۔۔۔الخ، ۵۹/۹۲، سیر اعلام النبلاء، معاویة بن ابی سفیان، ۴/۲۹۰

www.dawateislami.net

कहता है कि (ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे) मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) न तो ख़ालुल मोमिनीन (या'नी मोमिनों के मामूं) हैं और न ही कातिबे वह्य बल्कि उन्हों ने तल्वार से ख़िलाफ़त ग़सब की थी (مَعَاذَاللّٰہ) ? ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : येह बहुत बुरा और रद्दी क़ौल है । ऐसों से दूर रहा जाए, उन की सोह़बत इख़्तियार न की जाए ।[1]

(2) फ़ज़ाइले अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने सह़ाबा व अह्ले बैत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी शख़्सिय्यत की पहचान का ज़रीआ़ उस के ज़माने में मौजूद लोगों के तअस्सुरात भी होते हैं क्यूंकि उन ही लोगों के सामने उस शख़्सिय्यत के सुब्ह़ो शाम, ख़ल्वत व जल्वत होते हैं और इन्ही को देख कर वोह कोई अच्छी या बुरी राए क़ाइम करते हैं जिसे सनद का दरजा ह़ासिल होता है । सह़ाबए किराम व अह्ले बैत عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की ह़क़गोई तो यक़ीनन बे मिसाल है लिहाज़ा इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या से किसी लालच या दुन्यवी मफ़ाद की बिना पर किसी की ता'रीफ़ करने का अदना सा गुमान भी हमारे ईमान के लिये बेह़द ख़त़रनाक है । ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में सह़ाबए किराम व अह्ले बैते अत़्हार رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के फ़रामीन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ज़ीमुल मर्तबत होने की एक और रौशन दलील

1 ... السنۃ للخلال، ذکر ابی عبدالرحمن معاویۃ بن ابی سفیان، ۱/۴۳۴، رقم: ۶۵۹ مختصراً

www.dawateislami.net

हैं। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में सह़ाबए किराम व अह्ले बैते अत़्हार رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के अक़्वाल मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

(1) ह़क़ के साथ फ़ैसला करने वाले

फ़ातेह़े मिस्र ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द ह़क़ के साथ फ़ैसला करने वाला ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बेहतर नहीं देखा।[1]

(2) ऐसा सरदार नहीं देखा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसा कोई सरदार नहीं देखा।[2]

(3) नमाज़ में सब से ज़ियादा मुशाबहत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़लावा कोई ऐसा शख़्स नहीं देखा जिस की नमाज़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नमाज़ से ज़ियादा मुशाबहत रखती हो।[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ... تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔۔الخ، ۵۹/۱۶۱

2 ... معجم کبیر، ومما اسند عبداللہ بن عمر۔۔۔الخ، ۱۲/۳۸۷، حدیث: ۱۳۴۳۲

3 ... مجمع الزوائد، کتاب المناقب، باب ماجاء فی معاویۃ۔۔الخ، ۹/۵۹۵، حدیث: ۱۵۹۲۰

www.dawateislami.net

(4) हुकूमते मुआ़विया को बुरा न समझो

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जंगे सिफ़्फ़ीन से वापसी पर फ़रमाया : (ह़ज़रते) मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की हुकूमत को बुरा न समझो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब वोह नहीं होंगे तो सर कट कट कर अन्दराइन के फूलों की त़रह़ ज़मीन पर गिरेंगे ।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(5) वोह सह़ाबिये रसूल और फ़क़ीह हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जिन अल्फ़ाज़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मद्ह़ फ़रमाई है उन से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़ज़मत का इज़्हार होता है चुनान्चे, एक मौक़अ़ पर आप की फ़क़ाहत का ए'तिराफ़ करते हुवे इरशाद फ़रमाया : ''ह़ज़रते मुआ़विया फ़क़ीह हैं ।''[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ... دلائل النبوۃ للبیہقی، جماع ابواب اخبار النبی صلی اللہ علیہ وسلم بالکوائن بعدہ۔۔۔الخ، باب ما جاء فی إخبار النبي صلی اللہ علیہ وسلم بالفتن التی الخ، ۶/۴۲۶، طبقات ابن سعد، معاویۃ بن ابی سفیان، ۶/۲۰ مکتبۃ الخانجی، سیر اعلام النبلاء، معاویۃ بن ابی سفیان، ۳/۳۰۲، البدایۃ والنہایۃ، سنۃ ستین من الھجرۃ النبویۃ، وھذہ ترجمۃ معاویۃ۔۔۔الخ، ۵/۶۳۴، تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔۔الخ، ۵۹/۱۵۲

2 ... بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب ذکر معاویۃ، ۲/۵۵۰، حدیث: ۳۷۶۵ ملتقطاً

www.dawateislami.net

(6) मुनासिब तरीन शख़्सय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : मैं ने (ख़ुलफ़ाए राशिदीन के बा'द) ह़ज़रते मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ज़ियादा ह़ुकूमत के मुनासिब कोई नहीं देखा।[1]

(7) अमीरे मुआ़विया जन्नती हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक अश्जई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं अरीह़ा के एक ऐसे गिरजा में क़ैलूला कर रहा था कि जो अब मस्जिद में तब्दील हो चुका है। मैं अचानक घबरा कर उठ बैठा। मैं ने देखा वहां एक शेर मौजूद था जो मेरी जानिब बढ़ रहा था, मैं ने हथयार उठाने का इरादा किया तो शेर ने कहा : "रुक जाइये मैं तो आप को एक पैग़ाम देने आया हूं।" मैं ने पूछा : तुझे किस ने भेजा है ? शेर ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे आप के पास भेजा है कि आप को ख़बर दूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जन्नती हैं।" मैं ने पूछा : कौन मुआ़विया ? तो शेर ने कहा : ह़ज़रते मुआ़विया बिन अबी सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।[2]

---

1 ... مصنف عبدالرزاق، الجامع للامام معمر، باب ذکر الحسن، ۱۰/۳۷۱، حدیث: ۲۱۱۵۱، سیر اعلام النبلاء، معاویة بن ابی سفیان، ۳/۳۰۸، التاریخ الکبیر، باب معاویة، معاویة بن ابي سفیان..الخ، ۷/۲۰۴، رقم: ۱۴۰۵

2 ... معجم کبیر، من اسمه معاویه، ۱۹/۳۰۷، حدیث: ۶۸۶، معجم الصحابة، من روی عن النبی من اسمه معاویة، معاویة بن ابی سفیان، ۵/۳۶۷، رقم: ۲۱۹۱

www.dawateislami.net

(8) मुस्त़फ़ा करीम के सामने लिखने वाले

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने बैठ कर लिखा करते थे ।[1]

(9) ऐसी हुकूमत कोई नहीं करेगा

ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जैसी हुक्मरानी ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने की है वैसी हुकूमत इस उम्मत का कोई भी फ़र्द नहीं करेगा ।[2]

(10) अमीरे मुआ़विया का ज़िक्र ख़ैर से ही करो

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : لَاتَذْکُرُوا مُعَاوِیَۃَ اِلَّا بِخَیر या'नी ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्र सिर्फ़ ख़ैरो भलाई से ही करो ।[3]

---

1 ... مجمع الزوائد، کتاب المناقب، باب ماجاء فی معاویۃ۔۔۔الخ، ۹/۵۹۶، حدیث: ۱۵۹۲۴

2 ... طبقات ابن سعد، معاویۃ بن ابی سفیان، ۶/۲۰ مکتبۃ الخانجی، سیر اعلام النبلاء، معاویۃ بن ابی سفیان ۔۔۔الخ، ۴/۳۰۸

3 ... ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب معاویۃ بن ابی سفیان، ۵/۴۵۵، حدیث: ۳۸۶۹ مختصراً، التاریخ الکبیر، باب معاویۃ، معاویۃ بن ابی سفیان۔۔۔الخ، ۷/۲۰۴، رقم: ۱۴۰۵

www.dawateislami.net

(11) सब से ज़ियादा ह़लीम व बुर्दबार

एक मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इरशाद फ़रमाया : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों में सब से ज़ियादा ह़लीम व बुर्दबार थे ।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने उ़लमा व औलिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की शान जलीलुल क़द्र उ़लमा व औलिया ने बयान फ़रमाई है इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान का इज़्हार भी अपने क़ौल और अ़मल दोनों से फ़रमाया है बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में बदगोई करने वाले को सज़ा दे कर बद मज़्हबिय्यत के नासूर का मुकम्मल सद्दे बाब फ़रमाया है । यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा और इन्आ़म याफ़्ता बन्दों के फ़रामीन हमारे लिये मीनारए नूर भी हैं और राहे नजात भी ।

(1) आप का बे मिसाल अ़द्लो इन्साफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सामने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के अ़द्लो इन्साफ़ का ज़िक्र हुवा तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया :

1 ... السنۃ للخلال، ذکر ابی عبدالرحمن۔۔۔الخ، ۱/۴۴۳، رقم: ۶۸۱

www.dawateislami.net

काश ! आप लोग ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़माना देख लेते।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "क्या आप उन के ह़िल्म की बात कर रहे हैं ? आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : नहीं ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उन के अ़द्ल की बात कर रहा हूं।" (या'नी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अ़द्लो इन्साफ़ भी बे मिसाल था)[(1)]

(2) अगर तुम सय्यिदुना अमीरे मुआविया को देख लेते....

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد ने फ़रमाया : अगर तुम ह़ज़रते मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखते तो कहते येही महदी या'नी हिदायत याफ़्ता हैं।[(2)]

(3) ता'न की जुरअत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू तौबह रबीअ़ बिन नाफ़ेअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के दरमियान पर्दा हैं जो येह पर्दा चाक करेगा वोह दूसरे सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم पर ए'तिराज़ात करने में जरी हो जाएगा।[(3)]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 . . . السنة للخلال، ذكر ابى عبدالرحمن معاوية بن ابى سفيان۔۔۔الخ، ١/٤٣٧، رقم: ٦٦٧

2 . . . السنة للخلال، ذكر ابى عبدالرحمن معاوية بن ابى سفيان۔۔۔الخ، ١/٤٣٨، رقم: ٦٦٩

3 . . . البداية والنهاية، سنة ستين من الهجرة النبوية، وهذه ترجمة معاوية۔۔۔الخ، ٥/٦٤٣

www.dawateislami.net

(4) शातिमे सहाबी को सज़ा

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन मैसरह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने नहीं देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे हुकूमत में ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुरा भला कहने वाले के इलावा किसी और को भी कोड़े लगाए हों।[1] ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ख़ुद उस शख़्स को तीन कोड़े मारे जिस ने आप के सामने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर सबो शतम किया।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(5) ताबेई का सहाबी से मुक़ाबला करते हो ?

हज़रते सय्यिदुना मुआ़फ़ा बिन इमरान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में किसी ने सुवाल किया : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अफ़्ज़ल हैं या ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ? येह सुवाल सुनते ही आप के चेहरे पर जलाल के आसार नुमूदार हुवे और निहायत सख़्ती से इरशाद फ़रमाया : क्या तुम एक ताबेई का सहाबी से मुक़ाबला करते हो ? ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

1 ... شرح اصول اعتقاداهل السنّة،باب جماع فضائل الصحابة،سیاق ماروی عن السلف فی اجناس العقوبات۔۔۔الخ، ۲/۱۰۸۴، رقم:۲۳۸۵

2 ... الاستیعاب، معاویة بن ابی سفیان، ۳/۴۷۵

www.dawateislami.net

तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबी, आप के सुसराली रिश्तेदार, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कातिब और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अ़त़ाकर्दा वह़्य के अमीन थे[1]

(6) साह़िबे फ़ज़ीलत सह़ाबी

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शरफ़ुद्दीन नववी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार आ़दिल, साह़िबे फ़ज़ीलत और मुमताज़ सिफ़ात के ह़ामिल सह़ाबा में होता है ।[2]

(7) ह़ुक़ूक़ पूरा करने वाले ख़लीफ़ा

इमामे रब्बानी मुजद्दिदे अल्फ़े सानी ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद सरहिन्दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का फ़रमान है : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ुक़ूक़ुल्लाह और ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद के पूरा करने में ख़लीफ़ए आ़दिल हैं ।[3]

(8) मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी गई

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब देखा, ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) बारगाहे

1 ... البداية والنهاية، سنة ستين من الهجرة النبوية، وهذه ترجمة معاوية۔۔۔الخ، ۵/۲۴۳

2 ... شرح مسلم للنووی، کتاب فضائل الصحابة، الجز: ۸، ۱۵/۱۴۹

3 ... مکتوبات امام ربانی، دفتر اول، حصہ چہارم، مکتوب دوصد وپنجاہ ویکم، ۱/۵۸

www.dawateislami.net

रिसालत में तशरीफ़ फ़रमा हैं। मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ किया और बैठ गया। मेरे बैठते ही ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लाया गया और आप दोनों एक घर में दाख़िल हुवे और उस का दरवाज़ा बन्द हो गया, मैं ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तेज़ी से येह कहते हुवे घर से निकले : रब्बे का'बा की क़सम ! मेरा फ़ैसला हो गया है। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पीछे पीछे ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह कहते हुवे तेज़ी से तशरीफ़ लाए : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(9) ज़बान बन्द रखी जाए

पीराने पीर रौशन ज़मीर ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान जो इख़्तिलाफ़ात हुवे उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत समझ कर ज़बान बन्द रखी जाए।[2]

1 ... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/ ۸۱، رقم: ۱۲۴

2 ... الغنیۃ، القسم الثانی، العقائد والفرق الاسلامیۃ، فی فضل الامۃ المحمدیۃ۔۔الخ، ۱/ ۱۶۱ ملخصاً

www.dawateislami.net

(10) अह्ले बैत के ख़िदमतगार

ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श सय्यिद अ़ली हिजवेरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ऐसी मह़ब्बत थी कि आप को बेश क़ीमत नज़राने पेश करने के बा वुजूद उन से मा'ज़िरत फ़रमाया करते : "फ़िलह़ाल मैं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सह़ीह़ ख़िदमत नहीं कर सका, आइन्दा मज़ीद नज़राना पेश करूंगा।"(1)

(11) जलीलुल क़द्र सह़ाबी और मुज्तहिद

उस्ताज़ुल उ़लमा अ़ल्लामा अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ पिरहारवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत जलीलुल क़द्र सह़ाबी, नजीब और मुज्तहिद थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में कई अह़ादीस मरवी हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बदगोई और बद ज़बानी करने पर हमारे अकाबिरीन ह़द दरजा जलाल का इज़्हार फ़रमाया करते हैं।(2)

(12) सब से पहले फ़ज़ाइले अमीरे मुआ़विया पढ़ाते

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वाह़िद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मनाक़िब पर

1 ... کشف المحجوب، باب فی ذکر ائمتهم من اهل البیت، ص ۷۷ ماخوذاً
2 ... النبراس، اختلاف الفقهاء فی حکم من سب الصحابة، ص ۵۵۰

www.dawateislami.net

अह़ादीस किताबी सूरत में जम्अ़ कर रखी थीं लिहाज़ा जो त़ालिबे इल्म आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में ह़ाज़िर होता सब से पहले उसे आप वोह मजमूअ़ए ह़दीस पढ़ाते फिर उस के बा'द त़ालिबे इल्म की मरज़ी के मुत़ाबिक़ कुतुबो अस्बाक़ पढ़ाया करते।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4) शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने बुज़ुर्गाने दीन

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते गिरामी बुलन्द पाया औसाफ़ की वज्ह से एक तारीख़ साज़ शख़्सिय्यत है और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक ज़िन्दगी का हर पहलू ही आप की अ़ज़मत को वाज़ेह़ करने के लिये काफ़ी है, येही वज्ह है कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से आज तक बुज़ुर्गाने दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल बयान करते आए हैं चुनान्चे,

शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने क़ुबैसा बिन जाबिर ताबेई

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुबैसा बिन जाबिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बढ़ कर दर गुज़र करने वाला, जहालत से बेह़द दूर और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बढ़ कर बा वक़ार किसी और को नहीं देखा।"[2]

1 . . . تاریخ بغداد، محمد بن عبد الواحد۔۔۔الخ، ۱۲۰/۳

2 . . . سیر اعلام النبلاء، معاویۃ بن ابی سفیان، ۳۰۸/۴

www.dawateislami.net

शाने अमीरे मुआविया ब ज़बाने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बेहतर हैं या ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ? आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हमराही में ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की नाक में दाख़िल होने वाला गुबार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से अफ़्ज़ल है।(1)

शाने अमीरे मुआविया ब ज़बाने सय्यिदुना अह़मद बिन ह़म्बल

एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में अ़र्ज़ की : ऐ अ़ब्दुल्लाह ! मेरा मामूं ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बदगोई करता है और बा'ज़ औक़ात मुझे उस के साथ खाना पड़ता है। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़ौरन इरशाद फ़रमाया : उस के साथ खाना मत खाया करो।(2)

ऐसे शख़्स से तअ़ल्लुक़ न रखो

एक दफ़्आ़ आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में अ़र्ज़ की गई : "यहां एक शख़्स ऐसा भी है जो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया

1 . . . الشریعة، الجزء الثالث والعشرون، فضائل معاویة بن ابی سفیان، ۲۴۶۶/۵

2 . . . السنة للخلال، ذکر ابی عبدالرحمن ـــ الخ، ۴۳۸/۱، رقم: ۶۹۳

www.dawateislami.net

رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर फ़ज़ीलत देता है।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : "न ऐसे शख़्स की सोहबत इख़्तियार करो, न ही उस के साथ खाओ पियो और जब वोह बीमार हो जाए तो उस की इयादत भी न करो।"(1)

शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने सय्यिदुना मुआ़फ़ा बिन इमरान

हज़रते सय्यिदुना मुआ़फ़ा बिन इमरान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जैसे छे सौ बुज़ुर्गों से भी अफ़्ज़ल हैं।(2)

शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जिस ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की इ़ज़्ज़त पर ह़म्ला किया यक़ीनन उस ने अपने ईमान पर ह़म्ला किया, इसी लिये उस का सद्दे बाब लाज़िम है ख़ास तौ़र पर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़वाले से येह ज़ियादा अहम है।(3)

---

1 ... ذیل طبقات الحنابلۃ، وفیات المائۃ السادسۃ، یحیی بن عبد الوھاب بن محمد۔۔۔الخ، ۳/۱۱۱

2 ... السنۃ للخلال، ذکر ابی عبد الرحمن۔۔۔الخ، ۱/۴۳۵، رقم: ۶۶۴

3 ... الیواقیت والجواھر، المبحث الرابع والاربعون۔۔۔الخ، ص ۳۳۴

www.dawateislami.net

शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने सय्यिदुना अ़ली बिन सुल्तान क़ारी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा नूरुद्दीन मुल्ला अ़ली बिन सुल्तान क़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार आ़दिल, फ़ाज़िल और किबार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में होता है ।[1]

शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने सय्यिदुना यूसुफ़ नब्हानी

ह़ज़रते अ़ल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तमाम ताबेईन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से अफ़्ज़ल हैं क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबी होने का शरफ़ ह़ासिल रहा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किताबते वह़्य का अहम काम भी अन्जाम दिया और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हमराही में मुशरिकीन और सर्कशों से जिहाद भी किया, येह शरफ़ उन फ़ज़ाइल के इ़लावा हैं जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ात में मौजूद थे । इन में वोह दीनी ख़िदमात शामिल नहीं जो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुन्या से तशरीफ़ ले जाने के बा'द अन्जाम दीं ।[2]

---

1 ... مرقاۃ المفاتیح، کتاب مناقب الصحابۃ، باب مناقب الصحابۃ، الفصل الاوّل، ۱۰/۳۵۵

2 ... شواھد الحق ویلیہ الاسالیب البدیعۃ، فی فضل الصحابۃ الخ، القسم الثانی، فصل فی شؤون الخ، ص ۳۹۹ ملخصاً

www.dawateislami.net

शाने अमीरे मुआविया ब ज़बाने इमामे अहले सुन्नत

आ'ला हज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह्मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाते हैं : बा'ज़ जाहिल बोल उठते हैं कि अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ज़ीलत में कोई ह़दीस सह़ीह़ नहीं, येह उन की नादानी है। उ़लमाए मुह़द्दिसीन अपनी इस्तिलाह़ पर कलाम फ़रमाते हैं, येह बे समझे ख़ुदा जाने कहां से कहां ले जाते हैं ? अ़ज़ीज़ व मुस्लिम की सिह़ह़त नहीं फिर ह़सन क्या कम है ? ह़सन भी न सही यहां ज़ईफ़ भी मुस्तह़कम है।[1]

शाने अमीरे मुआविया ब ज़बाने सदरुश्शरीआ़

सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अव्वल मुलूके इस्लाम हैं, इसी की त़रफ़ तौराते मुक़द्दस में इशारा है कि : مَوْلِدُہٗ بِمَکَّۃَ وَمُھَاجَرُہٗ بِطَیْبَۃَ وَمُلْکُہٗ بِالشَّامِ वोह नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) मक्का में पैदा होगा और मदीना को हिजरत फ़रमाएगा और उस की सल्त़नत शाम में होगी। तो अमीरे मुआविया की बादशाही अगर्चे सल्त़नत है, मगर किस की ? मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सल्त़नत है ![2]

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 5 / 478

2 .....बहारे शरीअ़त, 1 / 258

www.dawateislami.net

शाने अमीरे मुआविया ब ज़बाने मुफ़्ती अहमद यार ख़ान

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी علیہ رحمۃ اللہ القوی **हज़रते** सय्यिदुना अमीरे मुआविया رضی اللہ تعالٰی عنہ की लियाक़त व क़ाबिलिय्यत बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : अमीरे मुआविया (رضی اللہ تعالٰی عنہ) निहायत दियानत दार, सख़ी, सियासतदान, क़ाबिल हुक्मरान, वजिया सहाबी थे। आप ने अहदे फ़ारूक़ी व अहदे उस्मानी में निहायत क़ाबिलिय्यत से हुक्मरानी की, आप की हुकूमत में निहायत आसानी से मालिया वुसूल हो जाता था जो मदीनए मुनव्वरा पहुंचा दिया जाता था। उमर फ़ारूक़ व उस्माने ग़नी (رضی اللہ تعالٰی عنہما) आप से निहायत ख़ुश रहे। उमर फ़ारूक़ (رضی اللہ تعالٰی عنہ) निहायत मोहतात और हुक्काम पर सख़्तगीर थे, ज़रा से क़ुसूर पर हुक्काम को मा'ज़ूल फ़रमा देते थे, मा'मूली सी गिरिफ़्त पर हज़रते ख़ालिद बिन वलीद (رضی اللہ تعالٰی عنہ) जैसे जर्नल को मा'ज़ूल फ़रमा दिया मगर इस के बा वुजूद अमीरे मुआविया (رضی اللہ تعالٰی عنہ) को बरक़रार रखा जिस से मा'लूम हुवा कि आप से इतनी दराज़ मुद्दत हुकूमत में कोई लग़्ज़िश सरज़द न हुई।(1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गर्दन में सांप लिपटा हुवा था

हज़रते सय्यिदुना अबू इस्हाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : मुझे एक मय्यित को ग़ुस्ल देने के लिये बुलाया गया, जब मैं ने उस के चेहरे से कपड़ा हटाया तो उस की गर्दन में सांप लिपटा हुवा था, लोगों ने बताया कि येह (مَعَاذَ الله) सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को गालियां देता था। (شرح الصدور، ص ۷۳)

1.....अमीरे मुआविया, स. 45

www.dawateislami.net

नवां बाब

मुशाजराते सहाबा और हम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सच्चे जां निसार और मुख़्लिस इताअ़त गुज़ार थे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें न सिर्फ़ बे शुमार अ़ज़मतों और रिफ़अ़तों से नवाज़ा, बल्कि हर एक से भलाई का वा'दा भी फ़रमाया है । आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के फ़रामीन का ख़ुलासा है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की दो क़िस्में फ़रमाईं : एक वोह कि जिन्हों ने फ़त्हे मक्का से क़ब्ल राहे ख़ुदा में ख़र्च व क़िताल किया । दूसरे वोह जिन्हों ने बा'दे फ़त्ह (राहे ख़ुदा में ख़र्च व क़िताल किया) । फिर फ़रमा दिया कि दोनों फ़रीक़ों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने भलाई का वा'दा फ़रमाया और साथ ही फ़रमा दिया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को तुम्हारे कामों की ख़ूब ख़बर है कि तुम क्या क्या करने वाले हो इस के बा वुजूद उस ने तुम सब से हुस्ना (या'नी भलाई) का वा'दा फ़रमाया । यहां कुरआने अ़ज़ीम ने उन बेबाकों, बे अदब नापाकों के मुंह में पथ्थर दे दिया जो सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के अफ़्आ़ल से उन पर त़ा'न (या'नी ए'तिराज़ करना) चाहते हैं वोह (अफ़्आ़ल) बशर्ते सिह्ह़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मा'लूम थे फिर भी उन सब से हुस्ना (या'नी भलाई) का वा'दा फ़रमाया, तो अब जो ए'तिराज़ करता है वोह **अल्लाह** वाह़िदे क़ह्हार पर ए'तिराज़ करता है, जन्नत और मदारिजे आ़लिया (या'नी बुलन्द दरजात) उस ए'तिराज़ करने वाले के हाथ में नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हाथ हैं । मो'तरिज़ अपना सर खाता रहेगा और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने

www.dawateislami.net

जो हुस्ना का वा'दा उन से फ़रमाया है ज़रूर पूरा फ़रमाएगा और (सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर) ए'तिराज़ करने वाला जहन्नम में सज़ा पाएगा। कुरआने मजीद में है :

لَا يَسْتَوِیْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ قٰتَلَ ؕ اُولٰٓىِٕكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِیْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْا ؕ وَ كُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ (1)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम में बराबर नहीं वोह जिन्हों ने फ़त्ह़े मक्का से क़ब्ल ख़र्च और जिहाद किया वोह मर्तबे में उन से बड़े हैं जिन्हों ने बा'दे फ़त्ह़ के ख़र्च और जिहाद किया और उन सब से* **अल्लाह** *जन्नत का वा'दा फ़रमा चुका और* **अल्लाह** *को तुम्हारे कामों की ख़बर है।*

अब जिन के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुस्ना का वा'दा फ़रमाया उन का ह़ाल भी कुरआने अ़ज़ीम से सुनिये :

اِنَّ الَّذِیْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰۤى ۙ اُولٰٓىِٕكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ۙ﴿۱۰۱﴾ لَا یَسْمَعُوْنَ حَسِیْسَهَا ۚ وَ هُمْ فِیْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ۚ﴿۱۰۲﴾ لَا یَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَ تَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓىِٕكَةُ ؕ هٰذَا یَوْمُكُمُ الَّذِیْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ (2)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जिन के लिये हमारा वा'दा भलाई का हो चुका वोह जहन्नम से दूर रखे गए हैं वोह उस की भनक (हल्की सी आवाज़ भी) न सुनेंगे और वोह अपनी मन मानती ख़्वाहिशों में हमेशा रहेंगे उन्हें ग़म में न डालेगी वोह सब से बड़ी घबराहट और फ़िरिश्ते उन की पेशवाई को आएंगे कि येह है तुम्हारा वोह दिन जिस का तुम से वा'दा था।*

1 ... پ۲۷، الحدید: ۱۰ 2 ... پ۱۷، الانبیاء: ۱۰۱ تا ۱۰۳

www.dawateislami.net

येह है नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के लिये क़ुरआने करीम की शहादत। अमीरुल मोमिनीन, मौलुल मुस्लिमीन, अ़लिय्युल मुर्तज़ा मुश्किल कुशा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم क़िस्मे अव्वल में दाख़िल हैं जिन को फ़रमाया : اُولٰٓئِکَ اَعْظَمُ دَرَجَۃً उन के मर्तबे क़िस्मे दुवुम वालों से बड़े हैं। और अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़िस्मे दुवुम में हैं वोह हुस्ना का वा'दा और येह तमाम बिशारतें सब को शामिल। इब्ने अ़साकिर ने अमीरुल मोमिनीन मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ह़दीस रिवायत फ़रमाई है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरे बा'द मेरे अस्ह़ाब से लग़ज़िश होगी जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी सोह़बत के सबब मुआ़फ़ फ़रमाएगा फिर उन के बा'द कुछ लोग आएंगे कि उन्हें **अल्लाह** तआ़ला उन के मुंह के बल जहन्नम में औंधा करेगा।[1] येह वोह लोग हैं कि जो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की लग़ज़िशों पर गिरिफ़्त करेंगे। इसी लिये अ़ल्लामा शहाबुद्दीन ख़फ़ाजी وَمَنْ یَّکُنْ یَّطْعَنُ فِیْ مُعَوِیَۃَ فَذَاکَ کَلْبٌ مِنْ کِلَابِ الْھَاوِیَۃ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने नक़्ल फ़रमाया : या'नी जो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर त़ा'न करे वोह जहन्नम के कुत्तों से एक कुत्ता है।[2][3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ... معجم اوسط، من اسمہ بکر، ۲/۲۶۰، حدیث ۳۲۱۹

2 ... نسیم الریاض، القسم الثانی فیما یجب علی الانام الخ، الباب الثالث فی تعظیم اسرہ، فصل ومن توقیرہ الخ، ۴/۵۲۵

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 29 / 279 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

अ़ज़मते सहाबा और तारीख़ी रिवायात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बसा औक़ात शैत़ान मन घड़त और ना क़ाबिले ए'तिमाद तारीख़ी वाक़िआ़त के ज़रीए सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की अ़ज़मतो शान कम करवाने की कोशिश करता है लिहाज़ा इमामे अहले सुन्नत शाह अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن के अ़त़ाकर्दा मदनी फूलों को दिल के गुलदस्ते में सजा लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ शैत़ान के वस्वसों से नजात ह़ासिल होगी और दिल में सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की अ़ज़मत मज़ीद बढ़ जाएगी। चुनान्चे, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बयान का ख़ुलासा है : मुशाजराते सहाबा में सीरत व तारीख़ की बे सरो पा ह़िकायतें क़त़्अ़न मर्दूद हैं। आज कल के बद मज़हब मरीज़ुल क़ल्ब मुनाफ़िक़ इन सीरत व तारीख़ की बे तुकी रिवायात से ह़ज़रते आ़लिया ख़ुलफ़ाए राशिदीन, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, सय्यिदुना त़लह़ा, सय्यिदुना ज़ुबैर, सय्यिदुना मुआ़विया, सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स और सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा (رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) नीज़ अहले बैत व सहाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم के मुतअ़ल्लिक़ मर्दूद इल्ज़ामात और इन के बाहमी मुशाजरात में ऐसी फ़ुज़ूल व बेहूदा ह़िकायात जिन में अक्सर तो सिरे से झूटी व बे बुन्याद हैं और बहुत सी ख़ुद साख़्ता नाज़ेबा इ़बारात और रवाफ़िज़ छांट लाते हैं और उन इ़बारात के ज़रीए कुरआने अ़ज़ीम, इरशादे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इजमाए उम्मत और जलीलुल क़द्र अइम्मए किराम का मुक़ाबला करना चाहते हैं। बे इ़ल्म लोग इन्हें सुन कर परेशान होते या जवाब देने की फ़िक्र में पड़ जाते हैं। उन का पहला जवाब येही है कि ऐसी

www.dawateislami.net

बे तुकी रिवायात किसी अदना मुसलमान को भी गुनहगार ठहराने के लिये मसमूअ़ (या'नी क़ाबिले क़बूल) नहीं तो उन महबूबाने ख़ुदा पर इन फ़ुज़ूल रिवायात से ए'तिराज़ कैसे क़ाबिले क़बूल होगा कि जिन की इजमाली व तफ़्सीली ता'रीफ़ों और महासिन से कलामुल्लाह और कलामे रसूलुल्लाह माला माल हैं। इमाम हुज्जतुल इस्लाम मुर्शिदुल अनाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली قُدِّسَ سِرُّہُ الْعَالِی इह्याउल उ़लूम शरीफ़ में फ़रमाते हैं : बिग़ैर तह़क़ीक़ किसी मुसलमान को किसी कबीरा गुनाह की त़रफ़ मन्सूब करना जाइज़ नहीं, हां येह कहना जाइज़ है कि इब्ने मुल्जम बदबख़्त ख़ारिजी ने अमीरुल मोमिनीन मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को शहीद किया कि येह ब तवातुर साबित है।[1]

حَاشَ لِلّٰہ अगर मुअर्रिख़ीन वग़ैरा की ऐसी हिकायात को ज़रा भी क़बूल किया जाए तो अह्ले बैत व सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان तो दर किनार ख़ुद ह़ज़राते आ़लिया अम्बिया व मुर्सलीन और मलाइकए मुक़र्रबीन صَلَوَاتُ اللّٰہِ تَعَالٰی وَسَلَامُہ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से हाथ धो बैठना है। क्यूंकि इन ग़ैर मो'तबर नाम निहाद मुअर्रिख़ीन ने ह़ज़राते अम्बियाए किराम आदम सफ़ियुल्लाह, दावूद ख़लीफ़तुल्लाह, सुलैमान नबिय्युल्लाह और यूसुफ़ रसूलुल्लाह से सय्यिदुल मुर्सलीन मुहम्मद ह़बीबुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक सब के बारे में वोह वोह नापाक व बेहूदा हिकायात नक़्ल की हैं कि अगर अपने ज़ाहिरी मा'ना पर तस्लीम की जाएं तो مَعَاذَاللّٰہ अस्ले ईमान को रो बैठना है। इन हौलनाक रिवायात का बात़िल होना इमाम क़ाज़ी इ़याज़ मालिकी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की किताबे मुस्तत़ाब शिफ़ा शरीफ़ और उस की शुरूह़ात

1 ... احیاء علوم الدین، کتاب آفات اللسان، الآفۃ الثامنۃ اللعن، ۳/۱۵۴

www.dawateislami.net

वग़ैरा से ज़ाहिर है। ला जरम अइम्मए मिल्लत व नासिहाने उम्मत ने तसरीहें फ़रमा दीं कि इन जाहिल व गुमराह मुअर्रिख़ीन की बयान कर्दा सीरत व तारीख़ की इन बे तुकी हिकायात पर हरगिज़ कान न रखा जाए। शिफ़ा, शुरूहे शिफ़ा, मवाहिबुल्लदुन्निय्या, शर्हे मवाहिब और मदारिजुन्नबुव्वत वग़ैरा में बिल इत्तिफ़ाक़ फ़रमाया। जिसे मैं सिर्फ़ मदारिजुन्नबुव्वत से नक़्ल करूंगा, शैख़ मुहक़्क़िक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व एहतिराम दर हक़ीक़त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का एहतिराम और उन के साथ नेकी है। उन की अच्छी ता'रीफ़ और रिआयत करनी चाहिये और उन के लिये दुआ व तलबे मग़फ़िरत करनी चाहिये, बिलख़ुसूस जिस जिस की **अल्लाह** तआला ने ता'रीफ़ फ़रमाई है और उस से राज़ी हुवा। इस ए'ज़ाज़ की वज्ह से वोह इस बात के मुस्तहिक़ हैं कि उन की ता'रीफ़ की जाए पस अगर येह बुरा भला कहने वाला दलाइले क़त्इया का मुन्किर है तो काफ़िर, वरना बिदअ़ती व फ़ासिक़ है। इसी तरह उन के दरमियान जो इख़्तिलाफ़ात या झगड़े या वाक़िआ़त हुवे हैं उन पर ख़ामोशी इख़्तियार करना ज़रूरी है और उन रिवायात व वाक़िआ़त से ए'राज़ किया जाए जो मुअर्रिख़ीन, जाहिल रावियों, गुमराह और बे दीनों ने बयान किये हैं और बिदअ़ती लोगों के उन उ़यूब और बुराइयों से जो उन्हों ने ख़ुद ईजाद कर के उन की तरफ़ मन्सूब कर दिये क्यूंकि वोह किज़्ब बयानी और इफ़्तरा है। उन के दरमियान जो जंगे और मुशाजरात मन्क़ूल हैं उन की बेहतर तौजीह व तावील की जाए और

www.dawateislami.net

उन में से किसी पर ऐ़ब या बुराई का इल्ज़ाम न लगाया जाए बल्कि उन के फ़ज़ाइल, कमालात और उ़म्दा सिफ़ात का ज़िक्र किया जाए क्यूंकि हुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام के साथ उन की मह़ब्बत यक़ीनी है और इस के इ़लावा बाक़ी मुआ़मलात ज़न्नी हैं और हमारे लिये येही काफ़ी है कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें अपने ह़बीब عَلَیْہِ السَّلَام की मह़ब्बत के लिये मुन्तख़ब कर लिया है। अह़्ले सुन्नत व जमाअ़त का सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के बारे में येही अ़क़ीदा है। इसी लिये अ़क़ाइद में तह़रीर है कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से हर किसी का ज़िक्र ख़ैर के साथ ही किया जाए और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के फ़ज़ाइल में जो आयात व अह़ादीस उ़मूमन या ख़ुसूसन वारिद हैं वोह इस सिलसिले में काफ़ी हैं।[1]

शाने अमीरे मुआ़विया के बारे में ग़लत फ़ह्मियों का इज़ाला

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैत़ान मर्दूद बा'ज़ लोगों को नबिय्ये रह़मत शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के प्यारे सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में त़रह़ त़रह़ की बद गुमानियां और वस्वसे पैदा कर के गुमराह करने की कोशिश करता है उन को समझाने की कोशिश का सवाब कमाने की अच्छी अच्छी निय्यतों से चन्द सुवाल जवाब पेश किये जाते हैं, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से न सिर्फ़ वस्वसों की काट होगी बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मह़ब्बत में भी कई गुना इज़ाफ़ा होगा।

1.....फ़तावा रज़विय्या, 5 / 582 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

वस्वसा : एक मरतबा नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया और वोह न आए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये बद दुआ़ फ़रमाई ।

जवाब : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वस्वसे को अपने दिल में जगह न दीजिये, ज़रा सोचिये ! क्या हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने किसी मुख़्लिस सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़िलाफ़ दुआ़ कर सकते हैं ? और जो कातिबे वह्य भी हों, जिन की बहन मोमिनीन की मां हों, जिन का नाम ले कर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़ज़ाबे नार से मह़फ़ूज़ रहने की दुआ़ फ़रमाई हो । हमारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमा की तो येह शान है कि आप पथ्थर मारने वालों को भी दुआ़ओं से नवाज़ते तो फिर येह कैसे हो सकता है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सह़ाबी के ख़िलाफ़ दुआ़ फ़रमाएं । इस वस्वसे का सबब दुरुस्त वाक़िए़ से ला इ़ल्मी है लिहाज़ा पहले ह़दीस शरीफ़ मुलाह़ज़ा कीजिये : चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : जाओ मुआ़विया को बुला लाओ, मैं वापस आया और अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! वोह खाना खा रहे हैं । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जाओ और मुआ़विया को बुला लाओ । ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने वापस आ कर अ़र्ज़ की : हुज़ूर वोह खाना खा रहे हैं, तो

www.dawateislami.net

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का पेट न भरे।"(1)

इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में ईमान अफ़रोज़ अक़्वाल मुलाह़ज़ा कीजिये :

(1) **ह़ज़रते** अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र बिन फ़ारिस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते यूनुस बिन ह़बीब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत करते हुवे फ़रमाते हैं : इस का मा'ना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है : इस ह़दीस का मत़लब येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या में उन का पेट न भरे ताकि वोह जो लोग क़ियामत में भूके होंगे ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार उन में न हो क्यूंकि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "दुन्या में जो जिस क़दर सैर होगा बरोज़े क़ियामत वोह उतना ही भूका होगा।"(2)

(2) **ह़ज़रते** इमाम अबू ज़करिय्या यह़या बिन शरफ़ नववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی एक ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : अह़ले अ़रब की आ़दत है कि वोह वस्ले कलाम के लिये बिग़ैर निय्यत के इस त़रह़ के जुम्ले अदा करते हैं जैसे "عَقْرِیْ حَلْقِی" "تَرِبَتْ یَمِیْنُکَ" इन से दुआ़ या बद दुआ़ मक़्सूद नहीं होती। और येह "لَااَشْبَعَ اللّٰہُ بَطْنَہٗ" भी इसी क़बील से है।"(3)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़दीसे पाक की शर्ह़ से मा'लूम हुवा कि मज़्कूरा ह़दीसे पाक में "لَااَشْبَعَ اللّٰہُ بَطْنَہٗ"

1 ... مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب من لعنہ النبی، ص ۱۴۰۳، حدیث: ۲۶۰۴
2 ... مسند الطیالسی، وما اسند عبد اللہ ابن عباس، ابو حمزۃ القصاب، ۴/۲۶۵، حدیث: ۲۸۶۹
3 ... شرح مسلم للنووی، کتاب البر والصلۃ، باب من لعنہ النبی الخ، جزء: ۱۶، ۸/۱۵۲ ملخصاً

www.dawateislami.net

के अल्फ़ाज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में दुआ़ए ज़रर (नुक़्सान) नहीं बल्कि दुआ़ए रह़मत हैं। नीज़ देर तक खाना खाना शरअ़न जुर्म है न क़ानूनन, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से येह भी न कहा कि आप को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बुला रहे हैं, जब ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तक येह बात ही न पहुंची तो उस में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क्या ख़ता ! अब ऐसी सूरते ह़ाल में जब कि सामने वाला बे क़ुसूर हो और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बद दुआ़ दे दें येह ना मुमकिन है।

वस्वसा : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बाग़ी हैं क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से जंग कर के बग़ावत की।

जवाब : किसी सह़ाबी को बाग़ी कहना या इस क़िस्म का कोई अ़क़ीदए फ़ासिदा रखना बहुत बड़ी गुमराही और जुरअत की बात है। उ़लमाए किराम ने इस क़िस्म का अ़क़ीदा रखने से सख़्ती से मन्अ़ फ़रमाया है। बा'ज़ कुतुब में जो इन के लिये बग़ावत का लफ़्ज़ इस्ति'माल हुवा तो वोह लुग़्वी ए'तिबार से है न कि इस्ति़लाही़ ! और लुग़्वी मा'ना में बग़ावत का लफ़्ज़ गुनाह व इ़स्यान को लाज़िम नहीं जैसा कि सदरुश्शरीआ़ बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : गुरौहे अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ह़स्बे इस्ति़लाहे़ शरअ़ इत़लाक़ فِرْقَہ بَاغِیَہ (बाग़ी गुरौह) आया है, मगर अब कि बाग़ी ब मा'ना मुफ़्सिद (फ़साद करने

www.dawateislami.net

वाला) व मुआ़निद व सर्कश (दुश्मन, ना फ़रमान) हो गया और दुशनाम (गाली) समझा जाता है, अब किसी सह़ाबी पर इस का इत़्लाक़ (या'नी उन्हें बाग़ी कहना) जाइज़ नहीं।[1] इसी त़रह़ ताजुल फ़ुहूल ह़ज़रते शाह अ़ब्दुल क़ादिर बदायूनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ता'ज़ीम व तकरीम शरफ़े सह़ाबिय्यत की वज्ह से ज़रूरी व लाज़िमी है इस लिये शरअ़न वोह बग़ावत व ख़त़ा जो अ़मदन (जान बूझ कर) वाक़ेअ़ न हुई हो फ़िस्क़ व इ़स्यान (गुनाह) को मुस्तलज़म (लाज़िम) नहीं, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी رُفِعَ عَنْ اُمَّتِی الْخَطَاءُ وَالنِّسْیَانُ (मेरी उम्मत से ख़त़ा व निस्यान को उठा लिया गया है) इस पर शाहिद (गवाह) है और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की ख़त़ाएं मुआ़फ़ हैं, क्यूंकि येह ह़ज़रात न तो मा'सूम हैं और न ही मा'ज़ूर बल्कि عِنْدَاللّٰہ माजूर (सवाब दिये गए) हैं, इस ख़त़ा की वज्ह से उन की शान में बे अदबी करना और उन की ता'ज़ीम व तकरीम से रुकना अह्ले सुन्नत से ख़ारिज होना है और मज़्हबे अह्ले सुन्नत में येह है कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि اِخْوَانُنَا بَغَوْا عَلَیْنَا (हमारे भाइयों ने हम पर बग़ावत की) इस से ज़ियादा त़ा'ने जनाबे मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर त़ा'न (ला'नत व मलामत करना) है।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 .....बहारे शरीअ़त, 1 / 260

2 .....दिफ़ाए़ सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया, स. 28 बित्तसर्रुफ़

www.dawateislami.net

वस्वसा : येह बात तो समझ आ गई कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बाग़ी कहना जाइज़ नहीं लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के माबैन होने वाली जंग के बारे में क्या अ़क़ीदा रखना चाहिये ?

जवाब : सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के माबैन जो जंगें हुईं उन पर गुफ़्तगू करने के बजाए ख़ामोश रहने ही में आ़फ़िय्यत है कि अगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के बारे में बद गुमानी पैदा हुई तो इस का भी ह़िसाब लिया जाएगा नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से जो जंगें लड़ीं वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़िसास की त़लब के लिये थी न कि ह़ुसूले ख़िलाफ़त के लिये और न ही ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने आप को ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बेहतर समझते थे जैसा कि ताजुल फ़ुहूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर बदायूनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस बात का ए'तिक़ाद रखना भी वाजिब है कि वोह عندالله माजूर हैं (या'नी उन्हें बारगाहे इलाही से अज्र दिया जाएगा) और ब इत्तिफ़ाक़े अह्ले सुन्नत तमाम सह़ाबा आ़दिल व मुनसिफ़ (इन्साफ़ करने वाले) हैं जो उन फ़ितनों में शरीक हुवे या किनाराकश रहे और उन के तमाम झगड़ों को इजतिहाद पर मह़मूल किया जाए वरना उन के बारे में बुरे गुमान का ह़िसाब लिया जाएगा, इस लिये कि इन उमूर का मन्शा (मक़्सद) उन ह़ज़रात पर ऐ़बजूई करना है और येह बात

www.dawateislami.net

भी है कि हर मुज्तहिद मुसीब (दुरुस्त फ़ैसला करने वाला) दो अज्र पाएगा और मुख़्ती (ख़ता करनेवाला) मा'ज़ूर व माजूर (सवाब याफ़्ता) होगा।

अगर कोई ऐसी चीज़ हमारे इ़ल्म में आए जिस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن की अ़दालत (आ़दिल होने) पर ऐ़ब लग रहा हो तो हमें चाहिये कि हम इन की सोह़बते रसूल को याद करें और बा'ज़ सीरत निगारों ने जो लिखा है वोह क़ाबिले इल्तिफ़ात नहीं है, इस लिये कि वोह रिवायात सह़ीह़ नहीं हैं और अगर सह़ीह़ भी हों तो इन की मा'क़ूल तावील भी हो सकती है। **येह मक़ामे ग़ौर** है कि येह कैसे जाइज़ हो सकता है कि हम अपने दीन के ह़ामिलीन (या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दीन ले कर हम तक पहुंचाने वालों) पर त़ा'न करें, हमें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जो कुछ भी मिला उन के वासित़े और ज़रीए़ से मिला तो जिस ने सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان पर त़ा'नो तश्नीअ़ (ला'नत और बुरी बात) की गोया कि उस ने ख़ुद अपने दीन पर त़ा'नो तश्नीअ़ की, सिर्फ़ ह़ज़रते मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में नहीं बल्कि तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان के बारे में ज़बाने त़ा'नो तश्नीअ़ दराज़ न की जाए। ह़ज़रते अ़ल्लामा कमाल इब्ने अबी शरीफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के माबैन इख़्तिलाफ़ का मक़्सद हुकूमत व अमारत का इस्तिह़्क़ाक़ (मुस्तह़िक़ होना) नहीं था, बल्कि इख़्तिलाफ़े मुनाज़अ़त (झगड़े) का सबब क़त्ले उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़िसास था।

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़िसास में ताख़ीर को ज़ियादा मुनासिब समझते थे और इन का ख़याल था जल्दी करने से हुकूमत में इन्तिशार व इज़्तिराब पड़ेगा और ह़ज़रते मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़िसास में ता'जील (जल्दी) ज़ियादा मुनासिब समझते थे, दोनों मुज्तहिद عندالله माजूर व मुसाब (सवाब दिये गए) हैं, इन दोनों बुज़ुर्गों का मन्शाए इख़्तिलाफ़ येही था।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा तह़रीर से येह बात रोज़े रौशन की त़रह़ वाज़ेह़ हो गई कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के तनाज़ुआ़त (झगड़ों) में ख़ामोशी बेहतर है और सब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان मग़्फ़ूर व माजूर (मुआ़फ़ किये गए और सवाब दिये गए) हैं और इन तनाज़ुआ़त की वज्ह से इन के फ़ज़ाइल और मरातिब में कोई फ़र्क़ नहीं आएगा। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के बारे में हमारा ए'तिक़ाद बिल्कुल साफ़ शफ़्फ़ाफ़ और हर क़िस्म की बद गुमानी से पाक होना चाहिये। आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी नसीह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के बाब में याद रखना चाहिये कि वोह ह़ज़रात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم अम्बिया न थे, फ़िरिश्ते न थे कि मा'सूम हों, उन में से बा'ज़ ह़ज़रात से लग़्ज़िशें सादिर हुईं मगर उन की किसी बात पर गिरिफ़्त **अल्लाह** रसूल के अह़काम के ख़िलाफ़ है।

1.....दिफ़ाए सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया, स. 31 बित्तसर्रुफ़

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सूरए ह़दीद में सह़ाबए सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दो क़िस्में फ़रमाईं :

(1) مَنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ؕ

(2) اَلَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ؕ [1]

या'नी **एक वोह** कि क़ब्ले फ़त्ह़े मक्का मुशर्रफ़ ब ईमान हुवे राहे ख़ुदा में माल ख़र्च किया और जिहाद किया जब कि उन की ता'दाद भी बहुत क़लील थी और वोह हर त़रह़ ज़ईफ़ व दरमांदा भी थे, उन्हों ने अपने ऊपर जैसे जैसे शदीद मुजाहदे गवारा कर के और अपनी जानों को ख़त़रों में डाल डाल कर , बे दरेग़ अपना सरमाया इस्लाम की ख़िदमत की नज़्र कर दिया। येह ह़ज़रात मुहाजिरीन व अन्सार में से साबिक़ीने अव्वलीन हैं, इन के मरातिब का क्या पूछना।

दूसरे वोह कि बा'दे फ़त्ह़े मक्का ईमान लाए, राहे मौला में ख़र्च किया और जिहाद में ह़िस्सा लिया। उन अह्ले ईमान ने इस इख़्लास का सुबूत जिहादे माली व क़िताली से दिया, जब इस्लामी सल्त़नत की जड़ मज़्बूत़ हो चुकी थी और मुसलमान कसरते ता'दाद और जाहो माल हर लिह़ाज़ से बढ़ चुके थे, अज्र इन का भी अ़ज़ीम है लेकिन ज़ाहिर है कि उन **साबिक़ूने अव्वलीन** वालों के दरजे का नहीं। इसी लिये क़ुरआने अ़ज़ीम ने इन पहलों को उन पिछलों पर तफ़्ज़ील (फ़ज़ीलत) दी।

और फिर फ़रमाया : وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ [2] उन सब से **अल्लाह** तआ़ला ने भलाई का वा'दा फ़रमाया कि अपने अपने मर्तबे के लिह़ाज़ से अज्र मिलेगा सब ही को, महरूम कोई न रहेगा

1 ...پ۲۷، الحدید: ۱۰ 2 ...پ۲۷، الحدید: ۱۰

www.dawateislami.net

और जिन से भलाई का वा'दा किया उन के ह़क़ में फ़रमाता है : "لَا یَسْمَعُوْنَ حَسِیْسَهَا" "اُولٰٓىٕكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ"[1] वोह जहन्नम से दूर रखे गए हैं। वोह जहन्नम की भनक तक न सुनेंगे। "وَهُمْ فِیْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ"[2] वोह हमेशा अपनी मन मानती जी भाती मुरादों में रहेंगे। "لَا یَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ" क़ियामत की वोह सब से बड़ी घबराहट उन्हें ग़मगीन न करेगी। "تَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓىٕكَةُ" फ़िरिश्ते उन का इस्तिक़बाल करेंगे। "هٰذَا یَوْمُكُمُ الَّذِیْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ"[3] "येह कहते हुवे कि येह है तुम्हारा वोह दिन जिस का तुम से वा'दा था।

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हर सह़ाबी की येह शान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बताता है तो जो किसी सह़ाबी पर त़ा'न करे **अल्लाह** वाह़िदे क़ह्हार को झुटलाता है। और उन के बा'ज़ मुआ़मलात जिन में अक्सर ह़िकायाते काज़िबा (झूटी ह़िकायात) हैं इरशादे इलाही के मुक़ाबिल पेश करना अह्ले इस्लाम का काम नहीं। रब عَزَّوَجَلَّ ने इसी आयत सूरए ह़दीद में इस का मुंह भी बन्द कर दिया कि दोनों फ़रीक़ सह़ाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم से भलाई का वा'दा कर के साथ ही इरशाद फ़रमा दिया। "وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ"[4] "और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ख़ूब ख़बर है जो तुम करोगे।

बई हमा (इस के बा वुजूद) उस ने तुम्हारे आ'माल जान कर हुक्म फ़रमा दिया कि वोह तुम सब से जन्नत, बे अ़ज़ाब व

1 ...پ۱۷، الانبیاء: ۱۰۱ 2 ...پ۱۷، الانبیاء: ۱۰۲
3 ...پ۱۷، الانبیاء: ۱۰۳ 4 ...پ۲۷، الحدید: ۱۰

www.dawateislami.net

करामात व सवाब बे हिसाब का वा'दा फ़रमा चुका है। तो अब दूसरे को क्या ह़क़ रहा कि उन की किसी बात पर त़ा'न करे, क्या त़ा'न करने वाला, **अल्लाह** तआ़ला से जुदा अपनी मुस्तक़िल हुकूमत क़ाइम करना चाहता है, इस के बा'द जो कोई कुछ बके वोह अपना सर खाए और ख़ुद जहन्नम में जाए।[1]

वस्वसा : एक रिवायत में यहां तक मौजूद है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुक्म दिया कि वोह **مَعَاذَاللّٰہ** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को गालियां दें ?

जवाब : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बे पनाह मह़ब्बत फ़रमाते इसी लिये बारहा आप ने अपने दरबार में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल सुनने की फ़रमाइश की। बा'ज़ औक़ात येह फ़ज़ाइल ख़ुद भी सुनते और लोगों को भी सुनवाते ताकि लोगों के दिलों में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मह़ब्बत में मज़ीद इज़ाफ़ा हो चुनान्चे,

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : अबू तुराब (ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को बुरा भला कहने से तुम्हें किस बात ने रोक रखा है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : वोह तीन बातें जो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते

1.....फ़तावा रज़विय्या, 29 / 361 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में इरशाद फ़रमाई थीं जब तक मुझे वोह याद हैं मैं हरगिज़ उन्हें बुरा नहीं कहूंगा क्यूंकि उन में से हर एक मुझे सुर्ख़ ऊंटों से भी ज़ियादा पसन्दीदा है (1) एक ग़ज़वे में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपना नाइब बना कर पीछे रोक दिया (जंग में शरीक न किया) तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! आप मुझे औ़रतों और बच्चों के पास छोड़ कर जा रहे हैं ? नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि जो मक़ाम ह़ज़रते हारून عَلَیْہِ السَّلَام का ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के लिये था तुम्हारा मेरे नज़दीक भी वोही मक़ाम हो ? मगर येह कि मेरे बा'द कोई नया नबी नहीं आएगा। (2) और मैं ने ग़ज़वए ख़ैबर के दिन नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : मैं येह झन्डा उस शख़्स को दूंगा जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल से मह़ब्बत रखता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल भी उसे मह़बूब रखते हैं। वोह फ़रमाते हैं कि मेरा इन्तिज़ार त़वील हो गया तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़ली को मेरे पास बुलाओ, उन को बुलाया गया ह़ालांकि उन की आंख में तक्लीफ़ थी। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की आंख में लुआ़बे दहन डाला और झन्डा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इ़नायत फ़रमाया पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के हाथ पर फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाई। (3) जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ[1] तो

1 ...پ۳، اٰلِ عمرٰن: ۶۱

www.dawateislami.net

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली, फ़ातिमा ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को बुलाया और फ़रमाया : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह मेरे अह्ल हैं ।(1)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीस की वज्ह बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को गाली देने का हुक्म न दिया बल्कि वज्ह पूछी कि तुम अ़लिय्युल मुर्तज़ा की कोई ग़लती या ख़ता क्यूं नहीं बयान करते ? और मन्शा येह था कि ह़ज़रते सा'द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ह़ज़रते अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के फ़ज़ाइल बयान करें और ह़ज़रते अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को बुरा कहने वाले लोग सुनें और आइन्दा इस से बाज़ रहें इसी लिये ह़ज़रते सा'द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने जब ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल बयान किये तो आप ख़ामोश रहे । अगर बुरा कहलवाना मक़्सूद होता तो कुछ उ़यूब सच्चे झूटे बना कर आप ही बयान कर देते मगर आप ने ऐसा न किया ।(2)

मज़कूरा वज़ाह़त से मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़िलाफ़ कोई बुग़्ज़ व कीना न था वरना आप ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल सुनना पसन्द न फ़रमाते ।(3) तो जब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आपस में एक

---

1 ... ترمذی کتاب المناقب، باب مناقب علی بن ابی طالب، ۵/۴۰۷، حدیث: ۳۷۲۴

2 .....अमीरे मुआ़विया, स. 82 बतसर्रुफ़

3 .....सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कैसी मह़ब्बत फ़रमाते और आप के फ़ज़ाइल सुन कर इन्आ़म से भी नवाज़ते थे, तफ़्सील के लिये सफ़ह़ा 72 ता 85 मुलाह़ज़ा फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

दूसरे के ख़िलाफ़ कोई बद गुमानी नहीं करते थे तो हमारी क्या मजाल कि हम किसी सह़ाबी के बारे में बद गुमानी करें ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें तमाम गुमराहों और शैत़ानी वस्वसों और गुमराहों से महफ़ूज़ फ़रमाए । اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वस्वसा : ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे यज़ीद को जानशीन मुक़र्रर फ़रमाया और अपने बेटे को ख़लीफ़ा मुक़र्रर करना दुरुस्त नहीं ।

जवाब : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस त़रह़ के ए'तिराज़ और शैत़ानी वस्वसे मकड़ी के जाले से भी ज़ियादा कमज़ोर हैं क्यूंकि पहले ख़लीफ़ा का दूसरे को अपनी ज़िन्दगी में ख़लीफ़ा करना दुरुस्त है चुनान्चे, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस वस्वसे की काट करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : ख़िलाफ़त की सिपुर्दगी के चन्द त़रीक़े हैं : (1) राए आ़म्मा से ख़लीफ़ा बनना जैसे अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त (2) पहले ख़लीफ़ा के इन्तिख़ाब से ख़िलाफ़त जैसे ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त (3) ख़ास अह्ले ह़ल व अ़क़्द के इन्तिख़ाब से ख़िलाफ़त जैसे ह़ज़रते उ़स्मान व अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की ख़िलाफ़त । अगर मज़कूरा ए'तिराज़ की वज्ह से (ह़ज़रते) अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) क़ुसूर वार हैं तो येही ए'तिराज़ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) पर भी आएगा ।

www.dawateislami.net

अपने बेटे को अपना जानशीन करना किसी आयत या ह़दीस की रू से ममनूअ़ नहीं अगर ममनूअ़ है तो वोह आयत या ह़दीस पेश करो। आज आ़म तौ़र पर सूफ़िया मशाइख़ सलातीन अपनी औलाद को गद्दी नशीन अपना जानशीन बनाते हैं क्या इन मशाइख़ सूफ़ियाए किराम को फ़ासिक़ कहोगे ? ग़रज़ कि अपनी औलाद को अपना जानशीन करना किसी आयत व ह़दीस की रू से जुर्म नहीं। इस से पहले इमामे ह़सन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ह़ज़रते अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के ख़लीफ़ा बन चुके थे, बेटे का ख़लीफ़ा बनना ह़ज़रते ह़सन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से शुरूअ़ हुवा।

ह़ज़रते मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) ने दुआ़ की, कि मौला मेरे भाई हारून (عَلَیْہِ السَّلَام) को मेरा वज़ीर बना दे

وَاجْعَلْ لِّیْ وَزِیْرًا مِّنْ اَهْلِیْ ﴿۲۹﴾ هٰرُوْنَ اَخِی ﴿۳۰﴾ اشْدُدْ بِهٖۤ اَزْرِیْ ﴿۳۱﴾ وَ اَشْرِكْهُ فِیْۤ اَمْرِیْ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मेरे लिये मेरे घरवालों में से एक वज़ीर कर दे, वोह कौन मेरा भाई हारून उस से मेरी कमर मज़बूत़ कर और उसे मेरे काम में शरीक कर।[1] आप की येह दुआ़ क़बूल फ़रमा ली गई रब ने आप पर नाराज़ी न फ़रमाई कि तुम अपनों के लिये कोशिश क्यूं करते हो ? ह़ज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या عَلَیْہِ السَّلَام ने रब्बुल आ़लमीन से फ़रज़न्द मांगा और दुआ़ की, कि वोह मेरा बेटा मेरा जानशीन हो येह दुआ़ क़बूल हुई, रब फ़रमाता है :

فَهَبْ لِیْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِیًّا ﴿۵﴾ یَّرِثُنِیْ وَ یَرِثُ مِنْ اٰلِ یَعْقُوْبَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो मुझे अपने पास से कोई ऐसा दे डाल जो मेरा काम उठा ले, वोह मेरा जानशीन हो और औलादे या'क़ूब का वारिस हो।"[2]

1 ...پ۱۶، طٰہٰ: ۲۹ تا ۳۲ 2 ...پ۱۶، مریم: ۵ تا ۶

www.dawateislami.net

ग़रज़ कि अपने फ़रज़न्द अपने भाई अपने अह्ले क़राबत को अपना नाइब करना न ह़राम है न मकरूह बल्कि इस की कोशिश करना इस की दुआ़ करना अम्बिया से साबित है।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वस्वसा : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यज़ीद के फ़िस्क़ो फ़ुजूर के बा वुजूद ख़लीफ़ा नामज़द कर दिया।

जवाब : ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : कहीं साबित नहीं होता कि अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) की ह़यात में यज़ीद फ़ासिक़ो फ़ाजिर था और अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने उस को फ़ासिक़ो फ़ाजिर जानते हुवे अपना जानशीन किया। यज़ीद का फ़िस्क़ो फ़ुजूर अमीरे मुआ़विया के बा'द ज़ाहिर हुवा, आइन्दा का फ़िस्क़ फ़िलह़ाल फ़ासिक़ न बनाएगा। रब तआ़ला ने शैत़ान को उस के कुफ़्र ज़ाहिर होने के बा'द जन्नत और जमाअ़ते मलाइका से निकाला इस से पहले उसे हर जगह रहने की इजाज़त दी गई उस की अ़ज़मत व ह़ुरमत फ़रमाई गई। जब शैत़ान का कुफ़्रो इनाद ज़ाहिर होने से पहले काफ़िर क़रार न दिया गया तो यज़ीद फ़िस्क़ो फ़ुजूर से पहले कैसे फ़ासिक़ो फ़ाजिर के ज़ुमरे में आ सकता है? और अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कैसे मौरिदे इल्ज़ाम बन सकते हैं और अगर कोई ऐसी रिवायत मिल जाए जिस से मा'लूम हो कि अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यज़ीद के फ़िस्क़ो फ़ुजूर से ख़बरदार होते हुवे उसे अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया तो वोह रिवायत झूटी है। मज़ीद फ़रमाते हैं :

1 .....अमीरे मुआ़विया, स. 76 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

जो रिवायत अमीरे मुआ़विया या किसी सह़ाबी का फ़िस्क़ साबित करे वोह मर्दूद है क्यूंकि क़ुरआन के ख़िलाफ़ है। तमाम सह़ाबा ब हुक्मे क़ुरआनी मुत्तक़ी हैं।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को यज़ीद के फ़िस्क़ो फ़ुजूर और बुरी आ़दतों का इ़ल्म नहीं था नीज़ यज़ीद का फ़िस्क़ो फ़ुजूर उस के ख़लीफ़ा बनने के बा'द मश्हूर हुवा इस बात की मज़ीद वज़ाह़त के लिये मज़ीद दलाइल मुलाह़ज़ा कीजिये चुनान्चे,

जब ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यज़ीद की बैअ़त के बारे में ज़ियाद की राए मा'लूम की तो ज़ियाद ने अपने हमराज़ उ़बैद बिन का'ब से यज़ीद के बारे में मश्वरा किया जिस पर उस ने ज़ियाद से कहा : "यज़ीद के करतूत से ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आगाह कर दो।" लेकिन बा'द में येह तै़ हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को यज़ीद के बारे में मा'लूमात फ़राहम करने के बजाए बराहे रास्त यज़ीद को समझाया जाए।(2) इस से मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को यज़ीद की बुरी आ़दात का बिल्कुल इ़ल्म नहीं था और न ही किसी में इतनी जुरअत थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस बारे में मा'लूमात फ़राहम करता, येही वज्ह है कि इस फ़ैसले के बा'द आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं ने यज़ीद को लाइक़ समझ कर येह ओ़ह्दा सिपुर्द किया है लिहाज़ा तू मेरी

1 .....अमीरे मुआ़विया, स. 77 मुलख़्ख़सन

2 ... تاریخ ابن عساکر، عبید بن کعب، ۳۸/۲۱۲

www.dawateislami.net

उम्मीद को पूरा फ़रमा और इस की मदद फ़रमा।"[1] येह भी ज़ेह्न नशीन रहे कि इस मन्सब के हुसूल से क़ब्ल यज़ीद का फ़िस्क़ो फ़ुजूर मश्हूर न था इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे जलीलुल क़द्र सह़ाबी ने फ़रमाया : अगर यज़ीद अच्छा साबित हुवा तो हम रिज़ामन्द रहेंगे और अगर मुसीबत बना तो सब्र करेंगे।[2] इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यज़ीद को ब वक़्ते वफ़ात येह वसिय्यत फ़रमाई : ऐ यज़ीद ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर, मैं ने तुझे मन्सबे ख़िलाफ़त सोंप दिया है अगर येह फ़ैसला बेहतर हुवा है तो मेरी ख़ुशबख़्ती और सआ़दत मन्दी है और अगर येह दुरुस्त इक़्दाम न हुवा तो इस मन्सब के सबब तेरी बदबख़्ती होगी, तू लोगों के साथ नर्मी व मह़ब्बत से पेश आना, अगर तुझे ऐसी बात पहुंचे जो तेरे लिये तक्लीफ़ देह और बे इ़ज़्ज़ती का सबब हो उस से दर गुज़र करना।[3]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा दलाइल से येह बात वाज़ेह़ हो गई कि यज़ीद की ख़िलाफ़त की वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर कोई ए'तिराज़ नहीं बन सकता और हर अ़क़्लमन्द येह बात ब ख़ूबी समझता है कि अगर वालिद नेक हो और औलाद बद किरदार, तो उस औलाद की वज्ह से वालिद को बुरा नहीं कहा जाता। इस क़िस्म के शैत़ानी वस्वसों को अपने दिलो दिमाग़ में मत आने दीजिये और हर लम्ह़ा सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की अ़क़ीदतो मह़ब्बत के जज़्बे से सरशार रहते हुवे उन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के दामने करम से वाबस्ता रहिये।

1 ... تاریخ الخلفاء، یزید بن معاویۃ، ص ۱۶۴
2 ... تاریخ الخلفاء، معاویۃ بن ابی سفیان، ص ۱۵۷
3 ... البدایۃ والنہایۃ، سنۃ ستین، ترجمۃ یزید بن معاویۃ، ۵/ ۷۴۲ ملخصاً

www.dawateislami.net

اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने उन प्यारे और मुक़र्रब बन्दों की महब्बत के सदक़े हमें दोनों जहां की भलाइयां और सआदतें अता फ़रमाएगा। वरना दोनों जहां की नाकामी और ख़ुसरान मुक़द्दर होगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें तमाम अक़ाइदे बातिला और शैतानी वसाविस से महफ़ूज़ फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तौबा नसीब हो गई

मदीनतुल औलिया मुल्तान शरीफ़ से शाएअ होने वाले एक माहनामे में **हज़रते** सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुतअ़ल्लिक़ चन्द नाज़ेबा बातें शाएअ हुईं। येह मज़्मून जब हज़रते मौलाना अलहाज अबू दावूद मुहम्मद सादिक़ (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने पढ़ा तो रिसाला ले कर हज़रते मुहद्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान मौलाना सरदार अहमद चिश्ती क़ादिरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में हाज़िर हो गए। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मज़्मून देखा तो कबीदा ख़ातिर हुवे और हज़रते मुफ़्ती अबू सईद मुहम्मद अमीन नक़्शबन्दी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ और हज़रते मुफ़्ती अबू दावूद मुहम्मद सादिक़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को हुक्म दिया कि इस के मुतअ़ल्लिक़ कुछ लिखें, नीज़ काफ़ी सारी किताबों के नाम लिये और फ़रमाया : मेरे कुतुब ख़ाने से फ़ुलां फ़ुलां किताब निकाल कर तिपाई पर रख जाओ। किताबें पेश कर दी गईं। सुब्ह जब येह दोनों हज़रात हाज़िर हुवे तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : मेरी किताबों पर निशान लगे हुवे हैं इन हवाला जात को इकठ्ठा करो। हज़रते मुफ़्ती मुहम्मद अमीन नक़्शबन्दी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ लिखते हैं : हम ने जब किताबें देखीं तो जगह जगह बेशुमार निशान लगे हुवे थे, हम ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर येह निशान कब लगाए ? फ़रमाया : येह मैं ने आज रात मुतालआ कर के लगाएं हैं। येह सुन कर हम हैरत में खो गए कि एक रात में इतना मुतालआ और फिर कुतुबे हदीस का मुतालआ भी साथ किया। फिर आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मज़्मून लिखवाना शुरूअ किया तो दस मक़ाले मुरत्तब हुवे। उन में से पहली क़िस्त साहिबे मज़्मून को भेजी कि या तो इस का जवाब दो या फिर तौबा करो। वोह मज़्मून जब मो'तरिज़ ने पढ़ा तो अगले ही शुमारे में तौबानामा लिख कर शाएअ कर दिया। (हयाते मुहद्दिसे आ'ज़म, स.136)

www.dawateislami.net

दसवां बाब

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया की मरविय्यात

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बते बा बरकत में रह कर अपने ज़ाहिरो बात़िन को इ़ल्मो ह़िक्मत के नूर से ख़ूब आरास्ता किया और अह़ादीसे करीमा का अनमोल ज़ख़ीरा अपने ह़ाफ़िज़े में मह़फ़ूज़ किया । ह़ज़रते इमाम अबू ज़करिया यह़्या बिन शरफ़ नववी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से 163 अह़ादीस रिवायत की हैं।(1) बा'ज़ कुतुबे अह़ादीस में आप से मरवी अह़ादीस की ता'दाद मुख़्तलिफ़ है मसलन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने 8, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुस्लिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने 9, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने 110, ह़ज़रते सय्यिदुना बक़ी बिन मुख़ल्लद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी मुस्नद में 163, जामेउ़ल मसानीद वस्सुनन में 194 और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम त़बरानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मो'जमे कबीर में 16 सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और 100 से ज़ाइद ताबेईने उ़ज़्ज़ाम की तक़रीबन 240 अह़ादीस ज़िक्र फ़रमाईं ।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करने वालों में सह़ाबए किराम और ताबेईने उ़ज़्ज़ाम दोनों त़बक़ात शामिल हैं । आप से रिवायत करने वाले चन्द सह़ाबए किराम व ताबेईने उ़ज़्ज़ाम के अस्माए गिरामी येह हैं : (1) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास

(1) . . . تہذیب الاسماء واللغات، معاویۃ بن ابی سفیان، ۲/۴۰۲، تاریخ الخلفاء، معاویۃ بن ابی سفیان، ص ۱۵۵

www.dawateislami.net

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा (3) ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह (4) ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर (5) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (6) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (7) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी (8) ह़ज़रते सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद (9) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बिन सह्ल (10) ह़ज़रते सय्यिदुना वाइल बिन हुजर (11) ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन ख़दीज (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن)

त़बक़ए ताबेई़न

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन मुसय्यब (2) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़मीद बिन अ़ब्दुर्रह़मान[1] (3) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन ज़ुबैर (4) ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़नफ़िया (5) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बाद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (6) ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन (7) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन अबू रबाह़ (8) ह़ज़रते सय्यिदुना मक्हूल (9) ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद (10) ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह (11) ह़ज़रते सय्यिदुना हुमाम बिन मुनब्बेह[2] (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया से मरवी अह़ादीसे मुबारका

"**फ़ैज़ाने अमीरे मुआ़विया**" के 15 हुरूफ़ की निस्बत से ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी 15 अह़ादीसे मुबारका मुलाह़ज़ा कीजिये :

1 ... تهذیب الاسماء واللغات، معاویة بن ابی سفیان، ۲/۴۰۶

2 ... معجم کبیر، ما اسندہ معاویة، ۱۹/۳۰۸ تا ۳۹۳

www.dawateislami.net

यौमे आशूरा का रोज़ा

हज़रते सय्यिदुना हमीद बिन अ़ब्दुर्रहमान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि जिस साल हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज किया उसी साल मदीनए मुनव्वरा हाज़िर हुवे तो यौमे आ़शूरा में खुत़बे के दौरान फ़रमाया : ऐ अह्ले मदीना ! तुम्हारे उ़लमा कहां हैं ? मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस दिन के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते सुना है : "येह आ़शूरा का दिन है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस दिन का रोज़ा फ़र्ज़ नहीं किया, मैं रोज़े से हूं तुम में से जो चाहे रोज़ा रखे और जो चाहे छोड़ दे ।"(1)

ऊंची गर्दनों वाले

हज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन यह़्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने चचा से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना कि क़ियामत के दिन मुअज़्ज़िन ऊंची गर्दनों वाले होंगे ।(2)

येह तो किसी को ज़ब्ह करना

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

---

1 . . . بخاری، کتاب الصوم، باب صیام یوم عاشوراء، ۱/۶۵۷، حدیث: ۲۰۰۳، مسلم، کتاب الصیام، باب صوم یوم عاشوراء، ص ۵۷۱، حدیث: ۱۲۶

2 . . . مسلم، کتاب الصلوۃ، باب فضل الاذان وھرب الشیطان۔۔۔الخ، ص ۲۰۴ حدیث: ۱۴

www.dawateislami.net

जिस से भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन की समझ बूझ अ़ता फ़रमाता है, बेशक येह माले दुन्या शीरीं और सरसब्ज़ है, तो जो इसे जाइज़ त़रीक़े से ह़ासिल करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के इस माल में बरकत अ़ता फ़रमाएगा और तमादोह़ (किसी के सामने इस की ता'रीफ़ करने) से बचो कि येह तो ज़ब्ह़ करना है।[1]

इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मद्ह़ करने वाले और ममदूह़ (जिस की मद्ह़ की जाए) के दीन के मुआ़मले में सख़्त आज़माइश है। इस मद्ह़ को ज़ब्ह़ से ता'बीर किया गया क्यूंकि येह मद्ह़ दिल को मुर्दा कर देती है और वोह शख़्स जिस की मद्ह़ की जाए दीन से दूर हो जाता है। नीज़ इस मद्ह़ में ममदूह़ के लिये सख़्त आज़माइश है क्यूंकि येह मद्ह़ उसे इस के अह़वाल से ला परवाह कर के उ़ज्ब और तकब्बुर में मुब्तला कर देगी और येह ममदूह़ ख़ुद को इस ता'रीफ़ का अह्ल समझने लगेगा, ख़ुसूसन जब येह ममदूह़ दुन्या दार और नफ़्स का पैरूकार शख़्स हो।

एक रिवायत में है कि "मद्ह़ ज़ब्ह़ करने वाले आ'माल से है" क्यूंकि जिस को ज़ब्ह़ किया जाता है उस के अ़मल में सुस्ती वाक़ेअ़ हो जाती है और मद्ह़ भी सुस्ती को लाज़िम कर देती है या मद्ह़ उ़ज्ब पसन्दी व तकब्बुर पैदा कर देती है और येह ज़ब्ह़ जैसा ही ख़त़रनाक अ़मल है इसी लिये मद्ह़ को ज़ब्ह़ से तशबीह दी गई। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो तुम्हारे

1 ... مسند احمد، حدیث معاویۃ بن ابی سفیان، ۱۵/۲، حدیث: ۱۶۸۳۷

www.dawateislami.net

साथ भलाई करे अगर वोह ऐसा शख़्स है जो अपना शुक्र अदा करना और अपनी ता'रीफ़ सुनने को पसन्द करता है तो तुम उस की ता'रीफ़ न करो क्यूंकि उस के ह़क़ का तक़ाज़ा येह है कि तुम उसे मक़ामे ज़ुल्म पर न पहुंचाओ और अगर वोह (ममदूह़) ऐसा नहीं है तो तुम उस का शुक्रिया ज़रूर अदा करो ताकि उमूरे ख़ैर में उस की रग़बत ज़ियादा हो और जो ता'रीफ़ी कलिमात हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी के बारे में फ़रमाए वोह मुस्तशनियात में से हैं जैसा कि हुज़ूर का फ़रमान **अ़ब्दुल्लाह कैसा प्यारा बन्दा है !**[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सच को लाज़िम कर लो और झूट से बचो

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सच को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूंकि सच नेकी के कामों की त़रफ़ राहनुमाई करता है और येह दोनों या'नी सच्चाई और सच बोलने वाला जन्नत में रहेंगे। झूट से बचो क्यूंकि येह बुराई की त़रफ़ राहनुमाई करता है और येह दोनों या'नी झूट और झूट बोलने वाला जहन्नम में जाएंगे।[2]

ज़िक्रुल्लाह के इजतिमाअ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिद में एक ह़ल्क़े पर गुज़रे तो पूछा : तुम्हें यहां किस चीज़ ने बिठाया है ? वोह

1 ... فیض القدیر، حرف الھمزۃ، ۳/۱۶۷، تحت الحدیث: ۲۹۲۰ ملخصاً

2 ... معجم کبیر، من اسند معاویۃ، ۱۹/۳۸۱، حدیث: ۸۹۴

www.dawateislami.net

बोले : हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने बैठे हैं। फ़रमाया : क्या ख़ुदा की क़सम ! तुम्हें इसी चीज़ ने बिठाया है ? बोले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हमें इस के सिवा किसी और चीज़ ने नहीं बिठाया। फ़रमाया : मैं ने तुम पर बद गुमानी की वज्ह से क़सम नहीं ली। मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अह़ादीस को सब से कम रिवायत करने वाला हूं, ऐसा कोई नहीं जिसे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुझ जैसा क़ुर्ब हो। एक बार रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने सह़ाबा के एक ह़ल्क़े पर तशरीफ़ लाए तो पूछा : तुम्हें यहां किस चीज़ ने बिठाया ? वोह बोले : हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने बैठे हैं उस का शुक्र कर रहे हैं कि उस ने हमें इस्लाम की हिदायत दी, हम पर बड़ा एह़सान किया। फ़रमाया : क्या ख़ुदा की क़सम ! तुम्हें सिर्फ़ इस चीज़ ने बिठाया है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम को इस के सिवा किसी और चीज़ ने नहीं बिठाया। फ़रमाया : मैं ने तुम पर बद गुमानी की वज्ह से क़सम नहीं ली, लेकिन मेरे पास जिब्रील आए उन्हों ने मुझे बताया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर फ़िरिश्तों के सामने फ़ख़्र कर रहा है।[1]

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला की सब से बड़ी ने'मत हिदायते ईमान है और सब से बड़ा एह़सान हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दामने पाक हाथ आ जाना

1 ... مسلم، کتاب الذکر والدعاء۔۔۔الخ، باب فضل الاجتماع علی تلاوۃ القرآن۔۔۔الخ، ص ۱۴۴۸، حدیث: ۴۰

www.dawateislami.net

है, ख़ुद फ़रमाता है : “بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ” (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बल्कि **अल्लाह** तुम पर एह़सान रखता है कि उस ने तुम्हें इस्लाम की हिदायत की)(1) और फ़रमाता है : “لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا” (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** का बड़ा एह़सान हुवा मुसलमानों पर कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा)(2) ईमान और हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी के सिवा किसी और ने'मत पर रब तआ़ला ने लफ़्ज़ مَنَّ इरशाद नहीं फ़रमाया। शे'र

रब्बे आ'ला की ने'मत पर आ'ला दुरूद
ह़क़ तआ़ला की मिन्नत पर लाखों सलाम

येह भी मा'लूम हुवा कि इस्लाम और हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी के शुक्रिया के लिये मजलिसें करना, ह़ल्के़ बना कर बैठना सुन्नते सह़ाबा है। येह ह़दीस मजलिसे मीलाद शरीफ़ की अस्ल है। मुफ़्ती साह़िब मज़ीद फ़रमाते हैं : (फ़िरिश्तों पर यूं फ़ख़्र फ़रमाता है कि) फ़िरिश्तों से फ़रमा रहा है मेरे उन बन्दों को देखो कि नफ़्सो शैत़ान के तसल्लुत़ में हैं, दुन्यावी रुकावटें मौजूद हैं, शहवत व ग़ज़ब रखते हैं इतनी रुकावटें होते हुवे सब पर लात मार कर मेरा ज़िक्र कर रहे हैं, यक़ीनन तुम्हारे ज़िक्र से मेरा येह ज़िक्र अफ़्ज़ल है, चूंकि फ़िरिश्तों ही ने इन्सान की शिकायत की थी कि वोह ख़ून रेज़ व फ़सादी (या'नी ख़ून बहाने और फ़साद फैलाने वाला) होगा इस लिये उन्हीं को येह सुनाया जा रहा है कि

1 . . . پ۲۶، الحجرات:۱۷ 2 . . . پ۴، ال عمرٰن:۱۶۴

www.dawateislami.net

देखो अगर इन्सान में फ़सादी हैं तो ऐसे नमाज़ी व ग़ाज़ी भी हैं जो नफ़्सो शैतान व तुग़याने कुफ़्फ़ार सब से ही जिहाद करते रहते हैं।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पोशीदा ऐब ढूंडने का नुक़्सान

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि तुम जब लोगों के ख़ुफ़्या उ़यूब के पीछे पड़ोगे तो उन्हें बिगाड़ दोगे।(2)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ज़ाहिर येह है कि इस फ़रमाने आ़ली में ख़िताब ख़ुसूसी तौर पर जनाबे मुआ़विया से है क्यूंकि आइन्दा येह सुल्तान बनने वाले थे तो इस ग़ुयूब दां मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहले ही इन को त़रीक़ए सल्त़नत की ता'लीम फ़रमा दी कि तुम बादशाह बन कर लोगों के ख़ुफ़्या उ़यूब न ढूंढा करना, दर गुज़र और ह़त्तल इमकान अ़फ़्वो करम से काम लेना और हो सकता है कि रूए सुख़न सब से हो कि बाप अपनी जवान औलाद को, ख़ावन्द अपनी बीवी को, आक़ा अपने मा तह़्तों को हमेशा शक की निगाह से न देखे। बद गुमानियों ने घर बल्कि बस्तियां बल्कि मुल्क उजाड़ डाले, रब तआ़ला फ़रमाता है : "اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ" (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है)(3) और फ़रमाता है : "وَلَا تَجَسَّسُوْا" (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : और

1.....मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 320

2...مشکاۃ المصابیح، کتاب الامارۃ والقضاء، الفصل الثانی، ۲/۱۰، حدیث: ۳۷۰۹

3...پ۲۶، الحجرات: ۱۲

www.dawateislami.net

ऐ़ब न ढूंढो)[1] हम अपने ऐ़ब ढूंडें और लोगों की ख़ूबियां तलाश करें । ख़याल रहे कि यहां बिला वज्ह की बद गुमानियों से मुमानअ़त है वरना मश्कूक और बद मआ़श लोगों की निगरानी करना सुल्त़ान के लिये ज़रूरी है, जासूसी का मोह्कमा मुल्करानी के लिये लाज़िम है ।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़ में भूल जाएं तो...

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यूसुफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने नमाज़ की इमामत फ़रमाई । नमाज़ में एक मक़ाम पर जहां बैठना था आप खड़े हो गए, लोगों ने سُبْحٰنَ اللّٰه कहा लेकिन आप खड़े रहे । नमाज़ के इख़्तिताम पर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने दो सजदे किये नमाज़ मुकम्मल करने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हुवे और फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना : जो शख़्स अपनी नमाज़ में कुछ भूल जाए तो वोह (एक सलाम के बा'द) इन सजदों की त़रह़ दो सजदे कर ले ।[3]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़कूरा रिवायत में ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने नमाज़ के इख़्तिताम पर

1 ...پ۲۶، الحجرات: ۱۲

2 .....मिरआतुल मनाजीह, 5 / 364

3 ...نسائی، کتاب السھو، باب مایفعل من نسی شیئا من صلاتہ، ص ۲۱۵، حدیث: ۱۲۵۷

www.dawateislami.net

दो इज़ाफ़ी सजदे किये इन दो इज़ाफ़ी सजदों को सजदए सह्व कहा जाता है। यहां येह मस्अला ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये कि जब नमाज़ में भूले से कोई वाजिब तर्क हो जाए या फ़र्ज़ व वाजिब में ताख़ीर हो जाए तो सजदए सह्व किया जाता है। नमाज़ के फ़राइज़ और वाजिबात, सजदए सह्व कब वाजिब होता है? और इस का क्या त़रीक़ए कार है? इस बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **"नमाज़ के अह़काम"** और **"बहारे शरीअ़त ह़िस्सए सिवुम"** का मुत़ालआ़ कीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ नमाज़ के कसीर मसाइल सीखने का मौक़अ़ मिलेगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़राइज़ व सुनन के दरमियान वक़्फ़ा करना चाहिये

ह़ज़रते सय्यिदुना साइब फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ मक़्सूरे में जुमुआ़ पढ़ा, जब इमाम ने सलाम फेरा तो मैं उसी जगह खड़ा हो गया। ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घर चले गए (मुझे अपने घर बुला कर फ़रमाया) येह काम आइन्दा न करना जब तुम जुमुआ़ पढ़ो तो उसे और नमाज़ से न मिलाओ यहां तक कि कोई बात कर लो या हट जाओ, क्यूंकि हम को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस का हुक्म दिया कि बिग़ैर कलाम या बिग़ैर हटे नमाज़ को नमाज़ से न मिलाएं।[1]

1 ... مسلم، کتاب الجمعۃ، باب الصلاۃ بعد الجمعۃ، ص ۴۳۷، حدیث: ۷۳

www.dawateislami.net

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि फ़राइज़ व नवाफ़िल में कुछ फ़ासिला ज़रूरी है जगह का फ़ासिला हो या दुआ़ व वज़ीफ़ा या कलाम का, बल्कि बेहतर येह है कि दुआ़ भी मांगे जगह भी क़दरे बदल ले बल्कि मुक़्तदी लोग सफ़ें भी तोड़ दें फिर सुन्नतें अदा करें ताकि आने वाले को येह शुबा न हो कि जमाअ़त हो रही है इसी लिये बा'दे नमाज़े जनाज़ा सफ़ें तोड़ कर बल्कि बैठ कर दुआ़ मांगते हैं।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नशा आवर चीज़ें ह़राम हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना : हर नशा आवर चीज़ मोमिन पर ह़राम है।[2]

मुसलमान के लिये तक्लीफ़ भी बाइ़से फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना कि मुसलमान को उस के जिस्म में जो भी तक्लीफ़ पहुंचती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस के ज़रीए उस के गुनाहों को मिटा देता है।[3]

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 232

2 ... ابن ماجۃ، کتاب الاشربۃ، باب کل مسکر حرام، ۴/۶۷، حدیث: ۳۳۸۷

3 ... مسند احمد، حدیث معاویۃ بن ابی سفیان، ۶/۲۶، حدیث: ۱۶۸۹۹

www.dawateislami.net

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब बन्दे पर कोई मुसीबत आए और वोह सवाब की निय्यत से उस पर सब्र करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस मुसीबत को उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बना देता है। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया : बन्दा हर लम्ह़ा जनायात (क़ाबिले सज़ा जुर्म) में मुब्तला रहता है बा'ज़ जुर्म तो ख़ालिस गुनाह होते हैं और बा'ज़ भलाई के काम भी जुर्म बन जाते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे को मुख़्तलिफ़ क़िस्म की तकालीफ़ में मुब्तला कर के उस को गुनाहों से पाक फ़रमा देता है ताकि बरोज़े क़ियामत उस के गुनाहों का बोझ कम हो और अगर उस की रह़मत व मग़्फ़िरत शामिले ह़ाल न हो तो बन्दा पहली ना फ़रमानी पर ही हलाक हो जाए।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मर्दों को सोना और रेशम पहनना मन्अ़ है

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सोना और रेशम पहनने से मन्अ़ फ़रमाया।[2]

नौहा ख़्वानी नाजाइज़ है

ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि रसूले

1 ... فیض القدیر، حرف المیم، ۵/۲۱۷، تحت الحدیث: ۸۰۴۸ ملخصاً

2 ... مسند احمد، حدیث معاویۃ بن ابی سفیان، ۶/۳۱، حدیث: ۱۶۹۲۸

www.dawateislami.net

करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नौहा़ करने से मन्अ़ फ़रमाया।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें नौहा़ ख़्वानी से मन्अ़ फ़रमाया। मुर्दे के ग़लत़ औसाफ़ बयान कर के बुलन्द आवाज़ से रोना नौहा़ है जो कि सख़्त ममनूअ़ है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सब्र का हुक्म दिया है न कि कपड़े फाड़ने और चीख़ने चिल्लाने का। लिहाज़ा किसी के इन्तिक़ाल के बा'द वावेला करने, चीख़ने चिल्लाने से हर ह़ाल में बचना चाहिये और जो ऐसे काम करते हों कोशिश कर के उन्हें भी इन बुरे अफ़्आ़ल से बाज़ रखना चाहिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें तमाम ग़ैर शरई अफ़्आ़ल से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

آمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बेहतरीन इन्सान कौन !

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम में से बेहतर वोह है जो अपने घरवालों के साथ अच्छा हो।[2]

इमामे ह़सन की शान

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1 ... ابن ماجة، کتاب الجنائز، باب فی النهی عن النياحة، ۲/۲۵۷، حدیث: ۱۵۸۰

2 ... معجم کبیر، من اسند معاویة، ۱۹/۳۶۳، حدیث: ۸۵۳

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सने मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बान या होंट मुबारक का बोसा ले रहे थे। बेशक जिस ज़बान या होंट को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चूमा उसे हरगिज़ अ़ज़ाब नहीं दिया जाएगा।(1)

हिजरत कब तक रहेगी ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हिन्द बजली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि हिजरत उस वक़्त तक मुन्क़त़अ़ न होगी जब तक तौबा मुन्क़त़अ़ न हो जाए और तौबा उस वक़्त तक मुन्क़त़अ़ न होगी जब तक सूरज मग़रिब से तुलूअ़ न हो जाए।(2)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : इस हिजरत से मुराद वोह हिजरत है जो कभी मुन्क़त़अ़ न होगी और इस की तीन सूरतें हैं (1) गुनाहों को छोड़ कर इत़ाअ़ते इलाही की त़रफ़ हिजरत करना (2) जहां गुमराही आ़म हो उन अ़लाक़ों को छोड़ कर नेक लोगों की त़रफ़ हिजरत करना (3) पुर फ़ितन अ़लाक़ों को छोड़ कर अम्नो सलामती वाले अ़लाक़ों की त़रफ़ हिजरत करना।(3)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ... مسند احمد، حدیث معاویۃ بن ابی سفیان، ۶/۱۷، حدیث: ۱۶۸۴۸

2 ... ابو داؤد، کتاب الجہاد، باب الہجرۃ ھل انقطعت، ۳/۶، حدیث: ۲۴۷۹

3 ... مرقاۃ المفاتیح، کتاب الفتن، باب لا تقوم الساعۃ الخ، الفصل الاوّل، ۹/۴۶۵، تحت الحدیث: ۵۵۲۰

www.dawateislami.net

ग्यारहवां बाब

विसाले सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सालिह़ीन के दुन्या से रुख़्सत होने का अन्दाज़ भी निराला होता है मरज़े विसाल और नज़्अ़ के वक़्त में भी इन के मा'मूलात, नसीह़त और वसिय्यत में हमारे लिये बे शुमार मदनी फूल होते हैं। बुज़ुर्गाने दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن की दुन्या से रुख़्सती नेकी की दा'वत देने और मुसलमानों के साथ ख़ैरख़्वाही करते हुवे हुवा करती है जिस की वज्ह से इन नुफ़ूसे क़ुदसिया की मुबारक ह़यात का आख़िरी बाब ईमान अफ़रोज़ और क़ाबिले रश्क बन जाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल भी निहायत ईमान अफ़रोज़ और क़ाबिले रश्क है, आप की ज़ाहिरी ह़यात का येह आख़िरी और रौशन बाब मुलाह़ज़ा कीजिये :

मरज़े विसाल की इब्तिदा में यज़ीद को वसिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यज़ीद को येह वसिय्यत फ़रमाई : ऐ यज़ीद ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहना, मैं ने जितनी हुकूमत करनी थी सो कर ली अब अगर येह अमारत अच्छी चीज़ है तो मैं इस के ज़रीए सआ़दत मन्द होऊंगा और अगर येह कोई और चीज़ है तो मैं इस के ज़रीए ना मुराद होऊंगा। तू लोगों से नर्मी करना, अगर किसी बात से तुझे अज़िय्यत पहुंचे या तेरी ऐ़बजूई की जाए तो इस से दर गुज़र करना, इस नसीह़त पर अ़मल से तेरी ज़िन्दगी ख़ुश गवार हो जाएगी और तेरी रिआ़या तेरे ह़क़ में अच्छी हो जाएगी। तू लड़ाई झगड़े और गुस्से से

www.dawateislami.net

इजतिनाब करना वरना तू खुद को और अपनी रिआ़या को हलाक कर देगा। शुरफ़ा व इ़ज़्ज़त दार लोगों की तौहीन और उन पर बड़ाई जताने से गुरेज़ करना और उन के लिये यूं नर्म हो जाना कि वोह तुझ में ज़ो'फ़ और कमज़ोरी न पाएं। तू उन के लिये अपना बिस्तर बिछाए रखना, उन्हें अपने क़रीब रखना, इस त़र्ज़े अ़मल से वोह तेरे ह़क़ को पहचान जाएंगे। तू उन की तौहीन और इस्तिख़फ़ाफ़े ह़क़ से गुरैज़ करना वरना वोह भी तेरी तौहीन करेंगे, तेरे ह़क़ का इस्तिख़फ़ाफ़ करेंगे और तुझे बुरा भला कहेंगे। जब तू किसी काम का इरादा करे तो मुत्तक़ी बुज़ुर्गों और तजरिबा कार ह़ज़रात से मश्वरा करना, उन की मुख़ालफ़त न करना और अपनी राए को तरजीह़ देने से बचते रहना, बेशक राए एक जगह नहीं ठहरती। जो काम तेरे नज़दीक बेहतर हो और कोई शख़्स उस काम पर तेरी राहनुमाई कर दे तो तू उस के मश्वरे की तस्दीक़ करना। उस काम को अपनी बीवियों और ख़ादिमों से पोशीदा रखना। अपनी फ़ौज की निगहबानी और अपनी इस्लाह़ करना कि इस से लोग तेरे दोस्त हो जाएंगे। तू लोगों को अपने बारे में चेमीगोइयां करता न छोड़ना, बिलाशुबा लोग शर की त़रफ़ जल्द माइल हो जाते हैं। तू नमाज़ में ह़ाज़िरी को यक़ीनी बनाना। अगर मेरी वसिय्यत पर तू ने अ़मल किया तो लोग तेरा ह़क़ पहचान लेंगे, तेरी सल्त़नत वसीअ़ हो जाएगी और तू लोगों की निगाहों में अ़ज़ीम हो जाएगा। तू अह्ले मक्का और अह्ले मदीना के शरफ़ व इ़ज़्ज़त को पहचान ! बेशक वोह तेरी अस्ल और तेरा ख़ानदान हैं। तू अह्ले शाम के मर्तबे को फ़रामोश न करना, बेशक वोह तेरे इत़ाअ़त गुज़ार हैं। शहर वालों की त़रफ़ ख़ुत़ूत़ रवाना करते रहना जिस

www.dawateislami.net

में उन से नेकी का वा'दा हो, येह बात उन की उम्मीदों को तक़्विय्यत देगी। अगर तमाम सूबों से लोग वुफ़ूद की सूरत में तेरे पास आएं तो उन से हुस्ने सुलूक और इ़ज़्ज़त से पेश आना, बेशक वोह अपने मा तह़्तों के नुमाइन्दे हैं और किसी तोहमत लगाने वाले और चुग़ुल ख़ोर की बातों में न आना बेशक मैं ने उन्हें बुरा वज़ीर पाया है।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मरज़े विसाल की इब्तिदा में यज़ीद को इस क़दर ज़बरदस्त और पुर हि़क्मत नसीह़त फ़रमाई जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मरज़ ने शिद्दत इख़्तियार की तो उस वक़्त यज़ीद "हुव्वारीन" में था लोग उसे आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की कैफ़िय्यत से आगाह करते रहे लेकिन उस बदबख़्त को जलीलुल क़द्र सह़ाबी और ख़ैरख़्वाह वालिद के आख़िरी लम्ह़ात और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के आ़जिज़ी व इन्किसारी से भरपूर मा'मूलात देखने का मौक़अ़ न मिला और न ही जनाज़े में शिर्कत की सआ़दत नसीब हुई।(2)

अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मरज़े विसाल में

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की जब त़बीअ़त ख़राब होने लगी और लोग आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के बारे में बातें करने लगे, तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अहले ख़ाना से इरशाद फ़रमाया : "मेरी आंखों में इस्मिद सुर्मा और सर में तेल लगाओ," चुनान्चे, हुक्म की ता'मील की गई और सर में तेल लगा कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को संवार दिया गया। फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

1 . . . البداية والنهاية، سنة ستين من الهجرة النبوية، وهذه ترجمة يزيد بن معاوية، ۵/۴۲۲ ملخصاً

2 . . . الكامل فى التاريخ، ثم دخلت سنة ستين، ذكر وفاة معاوية بن سفيان، ۳/۳۷۰، سير اعلام النبلاء، معاوية بن ابى سفيان ـــ الخ، ۴/۳۱۴

www.dawateislami.net

के लिये बिस्तर बिछाया गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने (कमज़ोरी के सबब) सहारा देने का हुक्म फ़रमाया और बा'दे अज़ां इरशाद फ़रमाया : लोगों को ह़ाज़िर होने की इजाज़त दो, कोई बैठे नहीं, सब खड़े खड़े सलाम कर के रुख़्सत हो जाएं। फिर लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर होने लगे और खड़े खड़े सलाम अ़र्ज़ करने लगे। एक शख़्स ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सलाम अ़र्ज़ किया और सुर्मा और तेल लगे होने की वज्ह से कहने लगा : लोग कहते हैं कि अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वक़्ते आख़िर क़रीब है ह़ालांकि वोह लोगों में सब से ज़ियादा तन्दुरुस्त मा'लूम होते हैं। जब तमाम लोग ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास से चले गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने दुश्मनों के लिये इतनी जुरअत की है ताकि उन्हें दिखा दूं कि ह़ादिसाते ज़माना (या'नी परेशानियों, मुसीबतों) से मैं मुतज़ल्ज़ल नहीं होता। मगर जब इन्सान मौत के पंजों की गिरिफ़्त में आ जाए तो फिर कोई ता'वीज़ उसे बचा नहीं सकता।"(1)

वक़्ते विसाल इ़ज्ज़ व इन्किसारी का इज़्हार

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे बिठाओ।" जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बिठाया गया तो आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र व तस्बीह़ करने लगे, फिर रोते हुवे (अपने आप से) फ़रमाया : "ऐ मुआ़विया ! अब बुढ़ापे और कमज़ोरी के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र याद आया, उस वक़्त क्यूं याद न

1 ... تاریخ طبری، ثم دخلت سنة ستین، ۲۶۲/۳، الکامل فی التاریخ، ثم دخلت سنة ستین، ذکر وفاة معاویة بن ابی سفیان، ۳۶۹/۳

www.dawateislami.net

आया जब जवानी की शाख़ तरोताज़ा थी ।'' येह कहने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस क़दर रोए कि आप की आवाज़ बुलन्द हो गई और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ करने लगे : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ इस गुनाहगार सख़्त दिल बूढ़े पर रह़म फ़रमा, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी लग़्ज़िश से दरगुज़र फ़रमा, मेरी ख़त़ा मुआ़फ़ फ़रमा और अपने ह़िल्म व बुर्दबारी से इस बन्दे को अपनी त़रफ़ लौटा जो तेरे इ़लावा किसी से उम्मीद नहीं रखता और न ही तेरे सिवा किसी पर भरोसा रखता है ।''(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा रिवायत में ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने लिये जो कुछ कहा, यक़ीनन येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़जिज़ी व इन्किसारी के सबब था वरना आप तो सह़ाबिये रसूल हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तमाम उ़म्र इस्लाम की सर बुलन्दी में बसर हुई है अलबत्ता आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस अ़मल में हमारे लिये येह मदनी फूल है कि ''अपने अ़मल पर भरोसा न किया जाए बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ दामनगीर रहे और अपनी ग़लतियों और ख़ामियों पर हमेशा नज़र रखते हुवे रह़मते इलाही के त़लबगार रहें ।''

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वक़्ते विसाल क़रीब आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना गाल मुबारक ज़मीन पर रख दिया, फिर पलट कर दूसरा गाल ज़मीन पर रख

1 ... لباب الاحیاء، الباب الاربعون فی ذکر الموت، فصل فی کلام المحتضرین، ص ۳۵۲

www.dawateislami.net

दिया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिर्या व ज़ारी करते हुवे यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बेशक तू ने अपनी मुक़द्दस किताब में इरशाद फ़रमाया है कि

اِنَّ اللّٰهَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَكَ بِهٖ وَ یَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ یَّشَآءُ (پ۵، النسآء:۴۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक* **अल्लाह** *उसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है*

ऐ मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे उन लोगों में रख जिन की तू मग़्फ़िरत चाहता है।[1]

तबर्रुकाते नबविय्या से महब्बत और अह्ले ख़ाना की वसिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मरज़ुल मौत में इरशाद फ़रमाया : मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को वुज़ू कराता था। एक रोज़ आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें क़मीज़ न पहनाऊं ? मैं ने अ़र्ज़ की : मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! क्यूं नहीं। तो हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने जिस्मे अत़हर से क़मीज़ उतारी और मुझे पहना दी। मैं ने उसे संभाल कर रख लिया। और हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने नाख़ुन तराशे तो मैं ने वोह तराशे हुवे नाख़ुन ले लिये और एक शीशी में रख लिये, तो जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

[1] ... البدایۃ والنہایۃ، سنۃ ستین من الھجرۃ النبویۃ، وھذہ ترجمۃ معاویۃ۔۔۔الخ، ۵/۶۴۷

www.dawateislami.net

की इसी क़मीज़ को मेरे बदन के साथ मिला देना और इन नाख़ुनों को बारीक कर के मेरी आंखों में डाल देना, मुमकिन है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन तबर्रुकात के सबब मुझ पर रह़्म फ़रमाए।[1]

दूसरी रिवायत में है कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सफ़ा की पहाड़ी पर था, (उ़मरह की अदाएगी के बा'द) मैं ने उस्तरा मंगवाया और ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सर मुबारक के मुख़्तलिफ़ जगहों से बाल तराश कर ले लिये, जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो इन बालों को मेरे मुंह और नाक में भर देना।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तबर्रुकात के बारे में वसिय्यत फ़रमाने के बा'द आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने कुछ मग़्मूम अश्आ़र पढ़े जिन्हें सुन कर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की शहज़ादी ने कहा : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न करे कि आप को कुछ हो बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को इस बीमारी से शिफ़ा अ़ता फ़रमाए। येह सुन कर सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह शे'र पढ़ा :

وَإِذَا الْمَنِيَّةُ أَنْشَبَتْ أَظْفَارَهَا أَلْفَيْتَ كُلَّ تَمِيْمَةٍ لَا تَنْفَع

या'नी जब मौत अपने पंजे गाड़ ले तो फिर कोई ता'वीज़ या अ़मल इस से छुड़ा नहीं सकता।[3]

---

1 ... تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔۔الخ، ۵۹/۲۲۷، الکامل فی التاریخ، ثم دخلت سنۃ ستین، ذکر وفاۃ معاویۃ بن ابی سفیان، ۳/۳۶۹، طبقات ابن سعد، معاویۃ بن ابی سفیان، ۶/۳۰، مکتبۃ الخانجی

2 ... بخاری، کتاب الحج، باب الحلق، ۱/۵۷۴، حدیث: ۱۷۳۰، تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔۔الخ، ۵۹/۲۲۸

3 ... تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔۔الخ، ۵۹/۲۲۸

www.dawateislami.net

आख़िरी वक़्त में भी नेकी की दा'वत

येह दर्दनाक अश्आ़र पढ़ने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर बेहोशी त़ारी हो गई, जब इफ़ाक़ा हुवा तो अह्ले ख़ाना को यूं नेकी की दा'वत इरशाद फ़रमाई : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो क्यूंकि जो उस से डरता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी अमान में रखता है और उस से न डरने वालों के लिये कोई पनाहगाह नहीं।" इसी नेकी की दा'वत पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दारे आख़िरत की त़रफ़ कूच फ़रमा गए।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात बरोज़े जुमा'रात, माहे रजब, 60 हिजरी[2] में मुल्के शाम के मश्हूर शहर "दिमश्क़" में हुई। उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र अठत्तर साल (78)[3] थी।[4]

1 ... تاریخ طبری، ثم دخلت سنة ستین، ذکر الخبر عن مدة ملکه، ۳/۲۶۳، تاریخ ابن عساکر، معاویة بن صخر۔۔۔الخ، ۵۹/۲۲۸، الکامل فی التاریخ، سنة ستین، ذکر وفات معاویه بن ابی سفیان، ۳/۴۷۰، البدایة والنهایة، سنة ستین من الهجرة النبویة، وهذه ترجمة معاویة۔۔۔الخ، ۵/۲۴۷

2 .....बा'ज़ के नज़दीक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सिने विसाल 61 हिजरी है।
مروج الذهب، ذکر خلافة معاویة بن ابی سفیان، ۳/۱۱

3 .....ब वक़्ते विसाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र के बारे में 75, 73, 77, 78 और 85 साल के अक़्वाल भी मौजूद हैं।
سیر اعلام النبلاء، معاویة بن ابی سفیان۔۔۔الخ، ۴/۳۱۴، الکامل فی التاریخ، ثم دخلت سنة ستین ذکر وفاته معاویة۔۔۔الخ، ۳/۳۶۸

4 ... تاریخ الخلفاء، معاویة بن ابوسفیان، ص۱۵۸ بتصرف، الثقات لابن حبان، ذکر البیان بان من ذکرناهم کانوا خلفاء۔۔۔الخ، ۱/۲۳۲، تهذیب الاسماء واللغات، معاویة بن ابی سفیان، ۲/۷۰، امیر معاویہ، ص۴۴ بتصرف

www.dawateislami.net

विसाले मुबारक की तारीख़

मुअर्रिख़ीन का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाले मुबारक माहे रजबुल मुरज्जब 60 सिने हिजरी में हुवा लेकिन तारीख़े विसाल में इख़्तिलाफ़ है । ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन अह़मद त़बरानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना नूरुद्दीन अ़ली बिन अबू बक्र हैसमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़िक्रकर्दा रिवायत और इमाम यूसुफ़ बिन ज़कीमुज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाले मुबारक 4 रजबुल मुरज्जब 60 सिने हिजरी में हुवा ।[1] कुछ मुअर्रिख़ीन के नज़्दीक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल 15 रजबुल मुरज्जब 60 सिने हिजरी है[2] बा'ज़ के नज़्दीक विसाले मुबारक 22 रजबुल मुरज्जब 60 सिने हिजरी को हुवा[3]

---

1 . . . معجم کبیر، من اسمہ معاویۃ، سن معاویۃ ووفاتہ۔۔۔الخ، ۱۹/ ۳۰۵، حدیث: ۷۰۹، مجمع الزوائد، کتاب المناقب، باب ما جاء فی معاویۃ بن ابی سفیان، ۹/ ۵۹۷، حدیث: ۱۵۹۳۲، تہذیب الکمال، معاویۃ بن ابی سفیان ۔۔۔الخ، ۲۸/ ۱۷۹

2 . . . تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔۔الخ، ۵۹/ ۵۸، البدایۃ والنہایۃ، سنۃ ستین من الہجرۃ النبویۃ، وھذہ ترجمۃ معاویۃ۔۔۔الخ، ۵/ ۲۴۷، تاریخ ابن خلدون، عزل الضحاک عن الکوفۃ۔۔۔الخ، ۳/ ۲۴، الکامل فی التاریخ، ثم دخلت سنۃ ستین، ذکر وفاۃ معاویۃ بن ابی سفیان، ۳/ ۳۶۹، الاستیعاب، معاویۃ بن ابی سفیان، ۳/ ۴۷۲، سیر اعلام النبلاء، معاویۃ بن ابی سفیان، ۴/ ۳۱۴، تہذیب الاسماء واللغات، معاویۃ بن ابی سفیان، ۲/ ۴۰۷

3 . . . تاریخ مولد العلماء ووفیاتہم، سنۃ ستین، ۱/ ۱۶۷، تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔۔الخ، ۵۹/ ۲۴۰، الکامل فی التاریخ، ثم دخلت سنۃ ستین، ذکر وفاۃ معاویۃ بن ابی سفیان، ۳/ ۳۶۹، الاستیعاب، معاویۃ بن ابی سفیان، ۳/ ۴۷۲، سیر اعلام النبلاء، معاویۃ بن ابی سفیان، ۴/ ۳۱۴، تہذیب الاسماء واللغات، معاویۃ بن ابی سفیان، ۲/ ۴۰۷

www.dawateislami.net

जब कि कुछ ने यकुम रजबुल मुरज्जब 60 हिजरी[1] और 26 रजबुल मुरज्जब[2] का क़ौल भी ज़िक्र फ़रमाया है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तद्फ़ीन से पहले ख़िताब

जब ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हो गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कफ़न के हमराह मिम्बर पर तशरीफ़ लाए। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना के बा'द इरशाद फ़रमाया : बेशक अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़रब की तल्वार की धार और ऊ़द की मिस्ल अ़रब को महकाने वाले थे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन के ज़रीए़ फ़ित्तना ख़त्म फ़रमाया, इन्हें बन्दों पर ह़ुक्मरान बनाया, इन के ज़रीए़ शहरों को फ़त्ह़ फ़रमाया, इन के लश्करों ने बह़रो बर में सफ़र किया और येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में ऐसे बन्दे थे कि जब इन्हों ने दुआ़ की तो क़बूल हुई, तह़क़ीक़ इन की ज़िन्दगी के अय्याम ख़त्म हो गए और येह हम से रुख़्सत हो गए। येह इन का कफ़न है, अब हम इन्हें कफ़न दे कर (नमाज़े जनाज़ा के बा'द) क़ब्र में दफ़्न करेंगे और इन्हें इन के आ'माल के साथ बर्ज़ख़ी ज़िन्दगी के लिये क़ियामत तक के लिये छोड़ देंगे।[3]

1 ... تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔۔الخ، ۵۹/ ۲۴۰، البدایۃ والنہایۃ، سنۃ ستین من الھجرۃ النبویۃ، وھذہ ترجمۃ معاویۃ۔۔۔الخ، ۵/ ۶۴۷، الکامل فی التاریخ، ثم دخلت سنۃ ستین، ذکر وفاۃ معاویۃ بن ابی سفیان، ۳/ ۳۶۹

2 ... الاستیعاب، معاویۃ بن ابی سفیان، ۳/ ۴۷۲

3 ... اسد الغابۃ، معاویۃ بن صخر ابي سفیان، ۵/ ۲۲۳، تاریخ طبری، ثم دخلت سنۃ ستین، ذکر الخبر عمن۔۔۔الخ، ۳/ ۲۲۳، تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔۔الخ، ۵۹/ ۲۳۳، الکامل فی التاریخ، سنۃ ستین، ذکر وفات معاویہ بن ابی سفیان، ۳/ ۳۷۰

www.dawateislami.net

अल बिदायतु वन्निहायत में इस त़रह़ है : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाले मुबारक के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्हाक बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हुवे, आप के हाथ में ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कफ़न था, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : येह मुआ़विया हैं जो अ़रब का मज़बूत़ क़ल्आ़, अ़रब के मददगार और इन की ख़ुश नसीबी इन में अ़ज़ीमुल मर्तबत थे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन के ज़रीए़ फ़ितनों का सद्दे बाब फ़रमाया, लोगों का ह़ुक्मरान बनाया और ममालिक को फ़त्ह़ कराया। अब इन का इन्तिक़ाल हो चुका है, हम इन की तजहीज़ो तक्फ़ीन कर के तदफ़ीन के बा'द इन का मुआ़मला रब عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर देंगे।[1]

नमाज़े जनाज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नमाज़े जनाज़ा सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्हाक बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़ाई।[2]

---

[1] ... البداية والنهاية، سنة ستين من الهجرة النبوية، وهذه ترجمة معاوية۔۔۔الخ، ۵/۲۴۷

[2] .... اسد الغابة، معاوية بن صخر ابي سفيان، ۵/۲۲۳، تاريخ طبری، ثم دخلت سنة ستين، ذكر الخبر عمن۔۔۔الخ، ۳/۲۶۳، الثقات لابن حبان، معاوية بن ابی سفيان، ۱/۲۳۲، الكامل فی التاريخ، سنة ستين، ذكر وفات معاوية بن ابی سفيان، ۳/۳۷۰

www.dawateislami.net

बा'दे वफ़ात भी दिलों पर राज

ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन अ़म्र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक दिन अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हुवा। दुआ़ए रह़मत की तो एक शख़्स ने पूछा : येह किस की क़ब्र है ? तो उस ने कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे इ़ल्म के मुत़ाबिक़ येह उन की क़ब्र है कि जिन की गुफ़्तगू इ़ल्मी हुवा करती, ख़ामोशी ह़िल्म व बुर्दबारी की बिना पर होती, जिन की अ़त़ा ग़नी बना देती और जिन की जंग (दुश्मन के लिये) पैग़ामे फ़ना होती, फिर वक़्त आया और येह भी चल दिये, येह क़ब्र ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की है।[1]

मद्फ़न

दिमश्क़ में बाबुस्सग़ीर के पास ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का मज़ारे मुबारक आज तक ज़ियारत गाहे ख़ासो आ़म है। इन के मज़ार के इर्द गिर्द एक आ़लीशान इ़मारत ता'मीर की गई है हर पीर और जुमा'रात के दिन येह मज़ार मुबारक खोला जाता है।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का मज़ारे पुर अन्वार दिमश्क़ में बाबे सग़ीर

1 ... الکامل فی التاریخ، ثم دخلت سنة ستین، ذکر بعض سیرته واخباره۔۔۔الخ، ۳/۳۷۴

2 ... مروج الذهب، ذکر خلافة معاویة بن ابی سفیان، ۳/۱۱، سمط النجوم العوالی، المقصد الرابع، الباب الاول فی الدولة الاموية، خلافة معاوية بن ابی سفیان، ۳/۱۶۱

www.dawateislami.net

के पास है। बाबे सग़ीर को एक ख़ुसूसिय्यत येह भी ह़ासिल है कि वहां ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़लावा कई जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मज़ारात मौजूद हैं चुनान्चे,

ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्नुल अक्फ़ानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मुझे शैख़ अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अह़मद कत्तानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मज़ारात की ज़ियारत करवाई जो दिमश्क़ में बाबे सग़ीर के पास मदफ़ून हैं उन में ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ाला बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन ह़न्ज़लिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, और ह़ज़रते सय्यिदुना औस बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वग़ैरा सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मज़ारात मौजूद हैं।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़म्र अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जलीलुल क़द्र सह़ाबिये रसूल थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बैअ़ते रिज़्वान में भी शिर्कत की सआ़दत पाई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शाम के शहर दिमश्क़ में सुकूनत पज़ीर रहे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत इ़बादत गुज़ार बुज़ुर्ग थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कोई औलाद नहीं थी। आप हर वक़्त इ़बादते इलाही में मश्ग़ूल रहते थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मज़ारे पुर अन्वार भी बाबुस्सग़ीर के उस ह़ुजरे में वाक़ेअ़ है जहां ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मज़ारे फ़ाइज़ुल

1 ... تاریخ ابن عساکر، باب ذکر فضل مقابر۔۔۔الخ، ۲/۴۱۸

www.dawateislami.net

अन्वार है। आप का विसाले मुबारक ख़िलाफ़ते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इब्तिदाई दौर में हुवा।[1]

बाबे सग़ीर में मद्फ़ून उ़लमाए किराम

बाबे सग़ीर में जहां कई सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की आख़िरी आरामगाह है वहीं कई किबार उ़लमाए किराम व मुह़द्दिसीने उ़ज़्ज़ाम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के मज़ारात भी हैं जिन में ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने रजब, ह़ज़रते बुरहानुन्नाजी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا) क़ाबिले ज़िक्र हैं। नीज़ ह़ज़रते शैख़ अबुल फ़त्ह़ नस्र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मज़ारे मुबारक भी बाबे सग़ीर में ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़दमैने शरीफ़ैन की जानिब मौजूद है। आप के बारे में ह़ज़रते इमाम नववी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हम ने अपने शुयूख़ को येह फ़रमाते हुवे सुना कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की क़ब्रे अन्वर के पास हफ़्ते के दिन जो दुआ़ मांगी जाए वोह क़बूल होती है।[2]

अ़ज़ीम मुह़द्दिस व मुअर्रिख़ ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने अ़साकिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मज़ार भी ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़ार के इह़ाते में वाक़ेअ़ है चुनान्चे, ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल क़ादिर रुहावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ाफ़िज़ सलफ़ी, अबुल उ़ला हम्ज़ानी और ह़ाफ़िज़ अबू मूसा मदीनी की भी ज़ियारत की है लेकिन ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने अ़साकिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जैसी

1 ... الوافی بالوفیات، ابن الحنظلیۃ الصحابی۔۔۔الخ، ۱۶/۲

2 ... طبقات الشافعیۃ الکبری، نصر بن ابراھیم۔۔۔الخ، ۳۵۳/۵، تھذیب الاسماء واللغات، نصر المقدسی الزاھد، ۴۲۷/۲

www.dawateislami.net

शानो अ़ज़्मत वाला किसी को न पाया । ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने अ़साकिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का विसाले मुबारक रजब में हुवा और आप को बाबे सग़ीर के शरक़ी हुजरे में जहां ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मज़ार है वहां दफ़्न किया गया ।[1]

मज़ारे सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया की ज़ियारत

जलीलुल क़द्र मुह़द्दिस इमाम अबू ह़ातिम मुह़म्मद बिन ह़ब्बान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه (मुतवफ़्फ़ा 354 हिजरी) फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मज़ारे मुबारक दिमश्क़ में बाबुस्सग़ीर के बाहर वाक़ेअ़ है, इन के मज़ार के गिर्द चार दीवारी है **मैं ने कई मरतबा इस मज़ारे मुबारक की ज़ियारत की है ।**[2]

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्नुल अक्फ़ानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه और शैख़ अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अह़मद कत्तानी वग़ैरा उ़लमाए किराम भी ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया के **मज़ारे मुबारक की ज़ियारत से बहरा वर हुवे ।**[3]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की क़ब्रे अन्वर के इर्द गिर्द एक आ़लीशान मज़ार ता'मीर किया गया है जिस से येह बात वाज़ेह़ हो जाती है कि

1 . . . شذرات الذهب، سنة إحدى وسبعين وخمسمائة، ۴/۲۲۳، طبقات الشافعية لابن قاضی شهبة، الطبقة السادسة عشرة۔۔۔الخ، ۲/۱۴

2 . . . الثقات لابن حبان، ذكر البيان بان من ذكرناهم كانوا خلفاء الخ، ۲/۳۰۶

3 . . . تاريخ ابن عساكر، باب ذكر فضل مقابر۔۔۔الخ، ۲/۴۱۸

www.dawateislami.net

सालिहीन की क़ुबूर के गिर्द मज़ार ता'मीर करना और मज़ाराते सालिहीन की ज़ियारत करना अह्ले हक़ का त़रीक़ए कार है जैसा कि इमाम अबू ह़ातिम मुह़म्मद बिन ह़ब्बान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़ार की ज़ियारत की[1] नीज़ आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ली बिन मूसा रज़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ारे पुर अन्वार के मुतअ़ल्लिक़ भी फ़रमाते हैं : मैं ने कई बार इन के मज़ार की ज़ियारत की है।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़लाल रोज़ी किस निय्यत से त़लब की जाए ?

... **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सय्यिदुल मुतवक्किलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो ह़लाल रोज़ी सुवाल से बचने, घरवालों की ख़बरगीरी करने और पड़ोसियों पर शफ़्क़त की निय्यत से त़लब करेगा वोह क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि उस का चेहरा चौधवीं रात के चांद की त़रह़ (चमकता) होगा और जो ह़लाल रोज़ी माल बढ़ाने, फ़ख़्र व तकब्बुर और दिखावे की निय्यत से त़लब करेगा तो वोह बारगाहे इलाही में इस ह़ाल में ह़ाज़िर होगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से नाराज़ होगा।" (مصنف ابن شیبۃ، کتاب البیوع، باب فی التجارۃ والرغبۃ فیھا، ۵/۲۵۸، حدیث:۷)

1 ... الثقات لابن حبان، ذکر البیان بان من ذکرناھم کانوا خلفاء ــــ الخ، ۱/۲۳۲

2 ... الثقات لابن حبان، علی بن موسی الرضا، ۵/۳۲۶

www.dawateislami.net

बारहवां बाब

उ़लमा व मुह़द्दिसीन का ख़िराजे अ़क़ीदत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यूं तो सीरत व तारीख़ पर लिखी गई बे शुमार कुतुब में ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तज़किरा मौजूद है। इन के इ़लावा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शख़्सिय्यत के मुख़्तलिफ़ पहलूओं पर कई मुस्तक़िल किताबें भी लिखी गईं और आज तक लिखी जा रही हैं जो इस बात की अ़लामत है कि मुसलमानों के दिल में नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जलीलुल क़द्र सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की किस क़दर मह़ब्बत और कितनी उल्फ़त है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक सीरत से लोगों को रूशनास कराने, अपनी अ़क़ीदत का इज़हार करने और शैत़ानी वस्वसों की काट करने के लिये किताबें लिखने का सिलसिला जारी है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक सीरत पर अ़रबी और उर्दू में लिखी गई कुतुबो रसाइल के चन्द नाम मुलाह़ज़ा कीजिये :

(1) **ह़िल्मु मुआ़विया :** ह़ाफ़िज़ अबू बक्र इमाम अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबिद्दुन्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मुतवफ़्फ़ा 281 हिजरी)

(2) **ह़िल्मु मुआ़विया :** ह़ज़रते इमाम अबू बक्र बिन अबी आ़सिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

(3) **फ़ज़ाइले अमीरुल मोमिनीन मुआ़विया बिन अबी सुफ़्यान :** इमाम अबुल क़ासिम उ़बैदुल्लाह बिन मुह़म्मद सक़ती बग़दादी (मुतवफ़्फ़ा 406 हिजरी)

www.dawateislami.net

(4) **तत़हीरुल जिनान :** शैख़ुल इस्लाम अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन मुह़म्मद इब्ने ह़जर मक्की رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

(5) **الناهية عن طعن امير المومنين معاوية :** ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अह़मद पिरहारवी चिश्ती رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

(6) **القول الرضي بتصحيح حديث الترمذي في فضل معاوية الصحابي :** ह़ज़रते अ़ल्लामा मख़्दूम मुह़म्मद इब्राहीम बिन शैख़ अ़ब्दुल लत़ीफ़ बिन मख़्दूम मुह़म्मद हाशिम ठठवी

(7) **फ़ज़ाइले अमीरे मुआ़विया :** ह़ज़रते अ़ल्लामा वकील अह़मद सिकन्दरपुरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

(8) **تصحيح العقيدة في باب امير معاوية :** ताजुल फ़ुहूल ह़ज़रते शाह अ़ब्दुल क़ादिर क़ादिरी बदायूनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मुतवफ़्फ़ा 1319 हिजरी)

(9) **शाने अमीरे मुआ़विया :** ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, नबरासुल मुह़द्दिसीन, मुफ़्तिये इस्लाम मौलाना अबू मुह़म्मद सय्यिद दीदार अ़ली शाह मुह़द्दिसुल वरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मुतवफ़्फ़ा 1354 हिजरी)

(10) **النار الحامية لمن ذم المعاوية :** मुफ़स्सिरे कुरआन ह़ज़रते अ़ल्लामा नबी बख़्श ह़ल्वाई (मुतवफ़्फ़ा 1365 हिजरी)

(11) **सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) **:** मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान, ह़ज़रते अ़ल्लामा अबुल फ़ज़्ल मुह़म्मद सरदार अह़मद चिश्ती क़ादिरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

(12) **अमीरे मुआ़विया पर एक नज़र :** मुफ़स्सिरे शहीर ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

www.dawateislami.net

(13) **ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया के बारे में किये गए चन्द सुवालात के जवाबात :** ख़लीफ़ए मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान, शैख़ुल ह़दीस वत्तफ़्सीर ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुर्रशीद क़ादिरी रज़वी झंगवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

(14) **फ़ज़ाइले ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया :** उस्ताज़ुल उ़लमा क़ाज़ी मुफ़्ती ग़ुलाम मह़मूद हज़ारवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

(15) **ह़याते ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया :** पीर ग़ुलाम दस्तगीर नामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

(16) **दुश्मनाने अमीरे मुआ़विया का इ़ल्मी मुह़ासबा :** शैख़ुल ह़दीस, शारेह़े मुअत्ता इमाम मुह़म्मद, मुह़क़्क़िक़े इस्लाम अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ली नक़्शबन्दी क़ादिरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

(17) **तआ़रुफ़े सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया :** शैख़ुल ह़दीस, शारेह़े मुअत्ता इमाम मुह़म्मद, मुह़क़्क़िक़े इस्लाम अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ली नक़्शबन्दी क़ादिरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

(18) **العقیدۃ الصافیۃ :** ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल जलील गयावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

(19) **अमीरे मुआ़विया पर ए'तिराज़ात के जवाबात :** ख़लीफ़ए मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द, मुसन्निफ़े कुतुबे कसीरा ह़ज़रते अल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ैज़ अह़मद उवैसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

(20) **ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया ख़लीफ़ए राशिद :** ग़ाज़िये मिल्लत अ़ल्लामा सय्यिद मुह़म्मद हाशिमी मियां अशरफ़ी जीलानी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

www.dawateislami.net

आ'ला ह़ज़रत के 5 रसाइल

(۱) اَلْبُشْرٰی الْعَاجِلَۃ من تحف اجلۃ (۱۳۰۰ھ)

(۲) اَلْاَحَادِیْثُ الرَّاوِیَۃُ لِمَدْحِ الْاَمِیْرِ مُعَاوِیَۃ (۱۳۰۳ھ)

(۳) عَرْشُ الْاِعْزَازِ وَالْاِکْرَامِ لِاَوَّلِ مُلُوْکِ الْاِسْلَام

(۴) ذَبُّ الْاَھْوَاءِ الْوَاھِیَّۃِ فِیْ بَابِ الْاَمِیْرِ مُعَاوِیَۃ (۱۳۱۲ھ)

(۵) اَعلامُ الصَّحَابَۃِ الْمُوَافِقِیْنِ لِامِیْرِ مُعَاوِیَۃ وَاُمِّ الْمُؤمِنِیْن (۱۳۱۲ھ)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया पर ए'तिराज़ मत कीजिये

तुझे दख़्ल अन्दाज़ी का ह़क़ किस ने दिया ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़ुरआ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से एक शख़्स ने कहा : मैं (ह़ज़रते सय्यिदुना) मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से बुग़्ज़ रखता हूं। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : क्यूं ? उस ने येह वज्ह बयान की : क्यूंकि उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से जंग की थी। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़ुरआ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसे सर्ज़निश करते हुवे फ़रमाया : तेरा बुरा हो ! बेशक ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रब रह़ीम है और उन का मद्दे मुक़ाबिल (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) निहायत करीम है, तो तेरी क्या मजाल कि उन दोनों के मुआ़मले में दख़्ल अन्दाज़ी करे ?(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 . . . البدایۃ والنھایۃ، سنۃ ستین من الھجرۃ النبویۃ، ھذہ ترجمۃ معاویۃ۔۔۔الخ، ۵/۲۳۳

www.dawateislami.net

दोनों फ़रीक़ जन्नती हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुर्ह़बील عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَکِیْل ने फ़रमाया : मैं ने ख़्वाब में देखा कि मैं जन्नत में हूं और सामने गुम्बद बने हुवे हैं, मैं ने कहा : येह किस के लिये हैं ? कहा गया : कलाअ़ और ह़ौशब के लिये कि वोह दोनों ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ थे और दौराने जंग शहीद हो गए थे। मैं ने कहा : अ़म्मार और उन के साथी कहां हैं ? कहा गया : तुम्हारे सामने। मैं ने कहा : उन्हों ने तो एक दूसरे को क़त्ल किया था। जवाब मिला : जब वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिले तो उसे बहुत ज़ियादा बख़्शिश वाला पाया (या'नी वोह मुआ़फ़ कर दिये गए)[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बद अ़क़ीदगी का इ़लाज फ़रमा दिया

एक सय्यिद ता़लिबे इ़ल्म का वाक़िआ़ है जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मह़ब्बत की आड़ में कुछ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان बिलख़ुसूस ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सख़्त नफ़रत करता था। एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे रब्बानी मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मक्तूबात का मुत़ालआ़ कर रहा था, दौराने मुत़ालआ़ जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का येह अ़मल नज़र से गुज़रा कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म और बिलख़ुसूस

1 ... حلیۃ الاولیاء، عمرو بن شرحبیل، ۴/۱۵۶، رقم: ۵۱۰۰

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن) को बुरा भला कहने वाले पर ह़द जारी फ़रमाया करते थे तो गुस्से से बड़ बड़ाने लगा : शैख़ ने कैसी बे मज़ा बात यहां नक़्ल कर दी है । और مَعَاذَاللہ मक्तूबात शरीफ़ की जिल्द ज़मीन पर फेंक दी । जब वोह शख़्स सोया तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه उस के ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए । आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه निहायत जलाल में उस के दोनों कान पकड़ कर फ़रमाने लगे : नादान बच्चे ! तू भी हमारी तह़रीर पर ए'तिराज़ करता है और उसे ज़मीन पर फेंकता है ? अगर तू मेरे क़ौल को मो'तबर नहीं समझता तो आ ! तुझे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ही के पास ले चलूं ? जिन की ख़ातिर तू सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان को बुरा कहता है । फिर आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه उसे ऐसी जगह ले गए जहां एक नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग तशरीफ़ फ़रमा थे । ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने निहायत आ़जिज़ी से उस बुज़ुर्ग को सलाम किया फिर उस त़ालिबे इ़ल्म को नज़दीक बुला कर फ़रमाया : येह बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم हैं, सुनो ! क्या फ़रमाते हैं : उस ने सलाम किया, सय्यिदुना शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने उसे सलाम का जवाब देने के बा'द फ़रमाया : ख़बरदार ! नबिय्ये करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबा से कदूरत न रखो, उन के बारे में कोई गुस्ताख़ाना जुम्ला ज़बान पर न लाओ । फिर उसे ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की जानिब इशारा कर के फ़रमाया : इन की तह़रीर से हरगिज़ न फिरना ।

www.dawateislami.net

इस नसीह़त के बा'द भी उस के दिल से सह़ाबए किराम का बुग़्ज़ो कीना दूर न हुवा तो मौलाए काइनात ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : इस का दिल अभी भी साफ़ नहीं हुवा । येह फ़रमा कर ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से थप्पड़ रसीद करने का फ़रमाया, हुक्म की ता'मील करते हुवे जूं ही आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने गुद्दी पर थप्पड़ रसीद किया तो दिल से सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सारी कदूरत धुल गई । जब वोह बेदार हुवा तो उस का दिल सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मह़ब्बत से मा'मूर था और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मह़ब्बत भी सौ गुना ज़ियादा बढ़ चुकी थी ।[1]

अमीरे मुआ़विया पर त़ा'न न करो

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबू त़ाहिर हुसैन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान फ़रमाते हैं कि मैं (बा'ज़ ग़लत़ फ़ह्मियों की बिना पर) जनाबे सय्यिद अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से बुग़्ज़ रखता था और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को शबो रोज़ बुरा भला कहता । एक रात मुझे ख़्वाब में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ एक ख़ूब सूरत रंग वाला शख़्स भी था । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से मुख़ात़ब हो कर फ़रमाया : ऐ अबू त़ाहिर ! इस से बुग़्ज़ न रखा करो और न ही इस पर त़ा'न किया करो । मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! येह कौन हैं ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1 .....तज़्किरए मशाइख़े नक़्शबन्दिया, स. 288 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

ने फ़रमाया : येह मेरा कातिबे वह्य (मेरा राज़दार) और मेरा भाई मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) है ।[1]

अमीरे मुआ़विया का गुस्ताख़ ज़ब्ह शुदा पाया गया

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल मलिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की । आप के दरबारे आ़ली में ख़ुलफ़ाए राशिदीन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن भी जल्वा फ़रमा थे और ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के सामने दस्त बस्ता खड़े थे । आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बारगाह में एक शख़्स पेश किया गया । जनाबे सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शिकायत की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह शख़्स हमारी तौहीन करता है और हमारी शान में गुस्ताख़ियां करता है । आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उसे इस फ़े'ल पर झिड़का तो उस ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं इन ह़ज़रात (ख़ुलफ़ाए राशिदीन) की गुस्ताख़ी नहीं करता ! लेकिन इन (ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया) के मुतअ़ल्लिक़ कुछ कह देता हूं तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने (ह़ालते ग़ज़ब में) तीन मरतबा इरशाद फ़रमाया : तेरा नास हो ! क्या मुआ़विया मेरा सह़ाबी नहीं ? रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ में एक हथयार था, आप ने वोह हथयार ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देते हुवे इरशाद फ़रमाया : इस की गर्दन मार दो । तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस हथयार से उसे ज़ब्ह़ कर दिया

1 ... تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔۔الخ، ۵۹/ ۲۱۲ ملخصاً

www.dawateislami.net

और साथ ही मेरी आंख खुल गई। सुब्ह़ मैं उस शख़्स के घर गया तो वोह ज़ब्ह़शुदा पाया गया।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तू ने येह लफ़्ज़ क्यूं कहे थे ?

ह़ुज़ूर क़िब्लए आ़लम, अबुल अ़ज़मत सय्यिद मुह़म्मद बाक़िर अ़ली शाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की शानो अ़ज़मत के बारे में नसीह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : जनाबे सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के मुतअ़ल्लिक़ बे बाकी, बे अदबी व गुस्ताख़ी से बात करना तो दूर की बात है, ध्यान रखना चाहिये कि यहां तो हल्की सी लग़ज़िश भी बाइ़से अ़ज़ाब बन जाती है मगर जिस पर ख़ुदा तआ़ला रह़मो करम फ़रमा दे तो उस को फ़ौरन तम्बीह हो जाती है और ख़ुदा के फ़ज़्ल से उस को तौबा की तौफ़ीक़ हो जाती है इस ह़क़ीक़त को रोज़े रौशन की त़रह़ वाज़ेह़ करने के लिये अपना एक ज़ाती वाक़िआ़ अ़र्ज़ करना ज़रूरी समझता हूं : "मेरे आक़ा व मौला क़िब्लए आ़लम ह़ुज़ूर वालिदे माजिद (पीर सय्यिद नूरुल ह़सन शाह साह़िब बुख़ारी, नक़्शबन्दी मुजद्दिदी कैलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) साह़िबे अ़र्स رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के विसाल शरीफ़ के चन्द माह बा'द की बात है। एक दोस्त ने जंगे सिफ़्फ़ीन में ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शहनशाहे विलायत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के साथ सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के जंग करने का ज़िक्र किया तो मैं ने भी नसबी ह़मिय्यत के जज़्बे के तह़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के मुतअ़ल्लिक़ ना पसन्दीदगी के अल्फ़ाज़ का इज़्हार कर दिया। मुंह से येह अल्फ़ाज़

1 ... تاریخ ابن عساکر، معاویۃ بن صخر۔۔۔الخ، ۵۹/۲۱۲ ملخصاً

www.dawateislami.net

निकलने की देर थी कि यक लख़्त त़बीअ़त मुन्क़ब्ज़ हो गई और बात़िन का सारा सुरूर और कैफ़, बे कैफ़ी और बे लज़्ज़ती के साथ तब्दील हो गया और तमाम रूह़ानी सिलसिला बन्द हो गया। इसी परेशानी के आ़लम में तौबा व इस्तिग़फ़ार शुरूअ़ कर दी। रात को जब नींद आई तो आ़लमे रूया में देखता हूं कि हुज़ूर क़िब्लए आ़लम वालिदे माजिद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बैठक शरीफ़ में बैठा हूं कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए हैं। आप के साथ ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शहनशाहे विलायत رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और जनाबे सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी तशरीफ़ फ़रमा हैं। ह़ज़रते मौला अ़ली शहनशाहे विलायत رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ में नंगी तल्वार है। शहनशाहे विलायत, मज़हरुल अ़जाइबि वल ग़राइब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास से गुज़र कर मेरे पास तशरीफ़ लाए और जनाबे सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ इशारा कर के इन्तिहाई ग़ुस्से से मुझे इरशाद फ़रमाया कि तू ने आप के मुतअ़ल्लिक़ ऐसे अल्फ़ाज़ क्यूं कहे थे? मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ग़लती हो गई है मुआ़फ़ फ़रमा दें। आप ने फिर इरशाद फ़रमाया : तू ने येह अल्फ़ाज़ क्यूं कहे थे? मैं ने फिर अ़र्ज़ किया : हुज़ूर ग़लती हो गई है मुआ़फ़ फ़रमा दें। आप ने फिर इरशाद फ़रमाया : तू ने येह अल्फ़ाज़ क्यूं कहे थे? मैं ने फिर अ़र्ज़ किया : हुज़ूर ग़लती हो गई है मुआ़फ़ फ़रमा दें। हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सब कुछ ख़ामोशी से सुनते रहे। फिर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शहनशाहे विलायत رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और जनाबे सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वापस तशरीफ़ ले गए। इस के बा'द मैं ने और ज़ियादा तौबा व इस्तिग़फ़ार करना शुरूअ़ की।

www.dawateislami.net

इस वाक़िए़ के बा'द कई मरतबा मुझे ख़्वाब के ज़रीए़ तौबा की मक़्बूलिय्यत का परवाना मिला लेकिन इन तमाम ज़ियारतों और बिशारतों के बा वुजूद दिल में एक बात बैठ गई थी कि तम्बीह के वक़्त हुज़ूरे पुरनूर, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए थे लिहाज़ा यक़ीनी मुआ़फ़ी उस वक़्त होगी जब सरकारे अबद क़रार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद अपने जमाले बा कमाल से नवाज़ेंगे। चुनान्चे, एक रात को मैं सोया तो क़िस्मत जाग उठी या'नी महबूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे शरफ़े ज़ियारत से नवाज़ा और आप ने मुझे अपने सीनए मुबारक से लगा लिया, काफ़ी देर तक आप ने मुझे अपने सीनए मुबारक से लगाए रखा और अपने नूरानी इरशादात से मुझ पर करम फ़रमाते रहे। इस दौरान मुझे न बयान होने वाली ठन्डक और कैफ़िय्यत नसीब हुई, मेरे बे सुकून दिल को सुकून व क़रार की दौलत नसीब हो गई और मुझे इत्मीनान हासिल हो गया कि जनाबे सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शाने मुबारक में जो मा'मूली सी ना मुनासिब बात मैं ने की थी आज उस की मुआ़फ़ी हो गई है। इस के बा वुजूद जब इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम से हरमैने तय्यिबैन की हाज़िरी नसीब हुई तो वहां जा कर भी बैतुल्लाह शरीफ़ और बारगाहे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में मुआ़फ़ी का ख़्वास्तगार हुवा। उम्मीदे वासिक़ है कि **अल्लाह** तआ़ला ने मेरी येह ग़लती मुआ़फ़ फ़रमा दी है।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 .....मनाक़िबे हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया, तक़्दीम

www.dawateislami.net

दुश्मने सहाबा, मुहिब्बे सहाबा बन गया

सूबा पंजाब (पाकिस्तान) के रिहाइशी इस्लामी भाई अपनी ज़िन्दगी में आने वाले मदनी इन्क़िलाब का तज़्किरा कुछ यूं करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करोड़हा करोड़ एह्सान कि उस ने मुझे मुसलमान घराने में पैदा किया मगर अफ़्सोस ! बद क़िस्मती मेरे आड़े आई और अ़क्ल व ख़ुर्द की देहलीज़ पर क़दम रखने से पहले ही मुझे बुरे दोस्तों की सोह्बत मुयस्सर आ गई। मेरे वोह दोस्त बुराइयों में मुब्तला होने के साथ साथ बद अ़क़ीदा भी थे, उन्हों ने मेरे ज़ेह्न में बद अ़क़ीदगी का ज़ह्र घोल दिया। बे मुरव्वती की इन्तिहा येह थी कि مَعَاذَاللّٰه हम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मुतअ़ल्लिक़ गुस्ताख़ाना जुम्ले बकने और उन की शान में ज़बाने ता'न दराज़ करने में ज़रा नहीं लजाते थे। एक मरतबा ब सिलसिलए रोज़गार मेरा पंजाब से बाबुल मदीना (कराची) आना हुवा तो उन्ही दिनों ख़ुश क़िस्मती से मेरा गुज़र एक ऐसे रास्ते से हुवा जहां मेन चौक पर सफ़ेद लिबास में मल्बूस सरों पर सब्ज़ सब्ज़ इमामे सजाए कुछ इस्लामी भाई मौजूद थे। तजस्सुस के हाथों मजबूर हो कर मैं उन के क़रीब गया तो देखा कि उन में से एक इस्लामी भाई "फ़ैज़ाने सुन्नत" नामी ज़ख़ीम किताब थामे दर्स दे रहे हैं और बक़िय्या तवज्जोह के साथ दर्स सुनने में मसरूफ़ हैं। इसी दौरान एक इस्लामी भाई ने आगे बढ़ कर मुझ से मुसाफ़हा किया और मुझे शिर्कत की दरख़्वास्त की लिहाज़ा मैं भी दर्स सुनने खड़ा हो गया। इश्क़े मुस्तफ़ा और अ़ज़मते सहाबा से भरपूर अल्फ़ाज़ मेरे

www.dawateislami.net

कानों में रस घोलने लगे, मेरे दिलो दिमाग़ को ताज़गी मिली और मुझे एह्सास होने लगा कि मैं आज तक गुमराही की ज़िन्दगी बसर करता रहा हूं इस ख़याल के आते ही मेरी आंखों की वादियों से आंसूओं के चश्मे बहने लगे, ख़ौफ़े ख़ुदा की बदौलत मैं ने अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह्मत पे क़ुरबान कि जिस ने मुझे चौक दर्स की बरकत से दुश्मनाने सहाबा की सफ़ से निकाल कर मुहिब्बाने सहाबा की सफ़ में शामिल फ़रमा दिया। दिल मज़हबे अह्ले सुन्नत की ह़क़्क़ानिय्यत की गवाही देने लगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाए।(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अह्ले सुन्नत पर रह्मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सह़ाबा के ह़क़ में ख़ुदा से डरो!

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को गालियां देना गुनाह, गुनाह बहुत सख़्त गुनाह, क़त़ई ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 192 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "सवानेह़े करबला"

1.....मैं ने वीडियो सेन्टर क्यूं बन्द किया ?, स. 7

www.dawateislami.net

सफ़्ह़ा 31 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरे अस्ह़ाब के ह़क़ में ख़ुदा से डरो ! ख़ुदा का ख़ौफ़ करो ! ! उन्हें मेरे बा'द निशाना न बनाओ, जिस ने उन्हें मह़बूब रखा मेरी मह़ब्बत की वज्ह से मह़बूब (या'नी प्यारा) रखा जिस ने उन से बुग़्ज़ किया वोह मुझ से बुग़्ज़ रखता है, इस लिये उस ने उन से बुग़्ज़ रखा, जिस ने उन्हें ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी, जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने बेशक ख़ुदाए तआ़ला को ईज़ा दी, जिस ने **अल्लाह** तआ़ला को ईज़ा दी क़रीब है कि **अल्लाह** तआ़ला उसे गिरिफ़्तार करे।[(1)]

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का निहायत अदब कीजिये

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुसलमान को चाहिये कि सह़ाबए किराम (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) का निहायत अदब रखे और दिल में उन की अ़क़ीदत व मह़ब्बत को जगह दे। उन की मह़ब्बत हुज़ूर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की मह़ब्बत है और जो बद नसीब सह़ाबा (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) की शान में बे अदबी के साथ ज़बान खोले वोह दुश्मने ख़ुदा व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم) है। मुसलमान ऐसे शख़्स के पास न बैठे।[(2)]

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

अह्ले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्ह़ाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाव है इ़तरत रसूलुल्लाह की

1 . . . ترمذی، کتاب المناقب، باب فی من سب اصحاب النبی، ۵/ ۴۶۳، حدیث: ۳۸۸۸

2.....सवानेहे क़रबला, स. 31

www.dawateislami.net

(या'नी अह्ले सुन्नत का बेड़ा पार है क्यूंकि सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان उन के लिये सितारों की मानिन्द और अह्ले बैते अत़्हार عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان कश्ती की त़रह़ हैं)[1]

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوۡبُوۡا اِلَی اللّٰہ! اَسۡتَغۡفِرُ اللّٰہ

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, अह्ले बैते अत़्हार, सह़ाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن की सच्ची मह़ब्बत और इत़ाअ़त का जज़्बा व सआ़दत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये । दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दीनो दुन्या की ढेरों भलाइयां हमारा मुक़द्दर होंगी ।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वोह हम में से नहीं

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स रेशम पहने और चांदी के बरतनों में पिये वोह हम में से नहीं ।"

(معجم الصغیر، ۱/۲۴۸، حدیث: ۶۹۹)

1 .....ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 196

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رضی اللہ عنہ तारीख़ के आईने में

604 ईसवी 19 साल क़ब्ले हिजरत	सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की विलादत बिअ़ूसते नबवी से पांच साल क़ब्ल हुई।
8 हिजरी मुत़ाबिक़ 629 ईसवी	सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस्लाम क़बूल फ़रमाया।
8 हिजरी मुत़ाबिक़ 629 ईसवी	ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उ़मरए जिइ़र्राना के मौक़ए़ पर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मूए मुबारक ह़ासिल फ़रमाए।
13 हिजरी मुत़ाबिक़ 634 ईसवी	ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक लश्कर पर मुक़र्रर फ़रमा कर शाम रवाना फ़रमाया।
13 हिजरी मुत़ाबिक़ 634 ईसवी	ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबी सुफ़्यान के मा तह़्त रह कर सैदा, उ़र्क़ा, जुबैल और बैरूत की फ़ुतूह़ात में ह़िस्सा लिया और उ़र्क़ा ख़ुद फ़त्ह़ फ़रमाया।
15 हिजरी मुत़ाबिक़ 636 ईसवी	ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने क़ैसारिया फ़त्ह़ करने का हुक्म ब ज़रीअ़ए मक्तूब दिया और आप ही ने उसे फ़त्ह़ फ़रमाया।
15 हिजरी मुत़ाबिक़ 634 ईसवी	अह्ले बैतुल मुक़द्दस के लिये सुल्ह़नामा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तह़रीर फ़रमाया।
17 हिजरी मुत़ाबिक़ 637 ईसवी	सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उर्दुन की फ़ौजी छावनी पर मुक़र्रर फ़रमाया।
18 हिजरी मुत़ाबिक़ 639 ईसवी	अ़ह्दे फ़ारूक़ी में ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के विसाल के बा'द शाम के गवर्नर मुक़र्रर हुवे।

www.dawateislami.net

33 हिजरी मुता़बिक़ 653 ईसवी	सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कुस्तुन्तीनिय्या की जंग में शिर्कत फ़रमाई।
21 हिजरी मुता़बिक़ 641 ईसवी	बल्क़ा, फ़िलिस्तीन, अन्ता़किय्या वग़ैरा पर तक़र्ररी।
22 हिजरी मुता़बिक़ 643 ईसवी	दस हज़ार के लश्कर के साथ अह्ले रूम के चन्द शहरों को फ़त्ह फ़रमाया।
23 हिजरी मुता़बिक़ 643 ईसवी	ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सुल्ह़ के ज़रीए अ़स्क़लान फ़त्ह फ़रमाया।
27 हिजरी मुता़बिक़ 648 ईसवी	ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़ह्दे उ़स्मानी में क़िन्नसिरीन फ़त्ह फ़रमाया।
40 हिजरी मुता़बिक़ 660 ईसवी	ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से सुल्ह़ फ़रमाई
40 हिजरी मुता़बिक़ 660 ईसवी	ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत पर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ता'रीफ़ी कलिमात
40 हिजरी मुता़बिक़ 660 ईसवी	ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को शहीद करने के मन्सूबे में शरीक होने वाले को कैफ़रे किरदार तक पहुंचाया।
41 हिजरी मुता़बिक़ 661 ईसवी	ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ख़िलाफ़त सोंपी। इस साल को आ़मुल जमाअ़त का नाम दिया गया।
44 हिजरी मुता़बिक़ 664 ईसवी	उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा बिन्ते अबी सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का विसाल
45 हिजरी मुता़बिक़ 665 ईसवी	ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज फ़रमाया
50 हिजरी मुता़बिक़ 670 ईसवी	ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज फ़रमाया

www.dawateislami.net

50 हिजरी मुताबिक़ 670 ईसवी	हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और हज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا की इल्तिजा पर मिम्बरे रसूल को दिमश्क़ मुन्तक़िल करने का इरादा तर्क फ़रमाया।
59 हिजरी मुताबिक़ 679 ईसवी	हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के विसाल के बा'द वुरसा से हुस्ने सुलूक की ताकीद फ़रमाई।
60 हिजरी मुताबिक़ 680 ईसवी	रजबुल मुरज्जब में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का विसाल हुवा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सीरते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के मुन्तख़ब वाक़िआ़त की मज़्कूरा तमाम तवारीख़ मुख़्तलिफ़ कुतुबे मो'तबरा और (Hijri Date Converter) की मदद से ली गई हैं, चूंकि हिजरी और ईसवी साल के अय्याम मुख़्तलिफ़ होते हैं इसी सबब से तारीख़ों में बा'ज़ औक़ात शदीद इख़्तिलाफ़ भी वाक़ेअ़ हो जाता है लिहाज़ा मज़्कूरा तमाम तवारीख़ में कमी बेशी मुमकिन है।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुन्यवी व उख़रवी भलाई की जामेअ़ चार चीज़ें

... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "चार चीज़ें जिसे अ़ता की गईं उसे दुन्या व आख़िरत की भलाई दे दी गई : (1) शुक्र करने वाला दिल (2) ज़िक्र करने वाली ज़बान (3) मसाइब पर सब्र करने वाला बदन और (4) शोहर की अ़दम मौजूदगी में अपने नफ़्स और शोहर के माल में ख़ियानत करने से बचने वाली बीवी।" (مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزھد، طلق بن حبیب، ٨/٢٤٩، حدیث:١، بتقدم وتاخر)

www.dawateislami.net

ماخذ ومراجع

نمبر شمار	نام کتاب	مؤلف / مصنف / متوفی	مطبوعہ
	قرآن مجید		
1	کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
2	تفسیر الطبری	ابوجعفر محمد بن جریر الطبري، متوفی ۳۱۰ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
3	تفسیر ابن ابی حاتم	ابو محمد عبد الرحمن بن محمد الرازي المعروف بابن ابی حاتم، متوفی ۳۲۷ھ	مکہ مکرمہ عرب شریف
4	الجامع لاحکام القرآن	ابو عبداللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی، متوفی ۶۷۱ھ	دارالفکر، بیروت
5	تفسیر مدارک	ابو البرکات عبداللہ بن احمد بن محمود النسفی، متوفی ۷۱۰ھ	دارالمعرفہ بیروت
6	الدرالمنثور	امام جلال الدین بن ابو بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالفکر، بیروت
7	تفسیر عبدالرزاق	عبدالرزاق بن ہمام الصنعاني، متوفی ۲۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۹ھ
8	خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
9	صراط الجنان	مفتی محمد قاسم عطاری	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
10	الادب المفرد	امام ابو عبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	تاشقند ازبکستان
11	صحیح البخاری	امام ابو عبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت، ۱۴۱۹ھ
12	صحیح مسلم	امام ابو حسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دارالمغنی عرب شریف، ۱۴۱۹ھ
13	سنن ابوداود	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت، ۱۴۲۱ھ
14	سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دارالفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ

www.dawateislami.net

15	مستدرک	امام ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفہ بیروت، ۱۴۱۸ھ
16	مسند احمد	ابو عبد اللہ امام احمد بن محمد بن حنبل الشیبانی، متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ
17	الموطا	امام مالک بن انس اصبحی المدنی، متوفی ۱۷۹ھ	دار المعرفہ بیروت
18	المعجم الاوسط	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۲۲ھ
19	شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۲۱ھ
20	مصنف عبد الرزاق	امام ابو بکر عبد الرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی، متوفی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۲۱ھ
21	مسند البزار	امام ابو بکر احمد عمرو بن عبد الخالق بزار، متوفی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم مدینہ منورہ
22	السنن الکبری	امام ابو بکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
23	مسند طیالسی	امام سلیمان بن داؤد بن جارود طیالسی، متوفی ۲۰۳ھ	دار المعرفہ بیروت
24	الفردوس بماثور الخطاب	ابو شجاع شیرویہ بن شہر دار بن شیرویہ الدیلمی، متوفی ۵۰۹	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۹۸۶
25	المعجم الصغیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
26	المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت
27	سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفہ بیروت
28	السنن الکبری	امام ابو عبد الرحمن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
29	مسند عبد بن حمید	امام ابو محمد عبد بن حمید، متوفی ۲۴۹ھ	عالم الکتب، مکتبۃ النہضۃ العربیہ، ۱۴۰۸ھ

www.dawateislami.net

30	جامع صغیر	امام جلال الدین بن ابوبکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۲۵ھ
31	مجمع الزوائد	حافظ نورالدین علی بن ابی بکر ھیثمی، متوفی ۸۰۷ھ	دارالفکر بیروت
32	اللآلی المصنوعۃ	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
33	مشکاۃ المصابیح	ولی الدین محمد بن عبداللہ خطیب، متوفی ۷۴۲ھ	دارالفکر بیروت، ۱۴۲۱ھ
34	شرح صحیح مسلم	امام ابوزکریا محي الدین بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
35	فتح الباری	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
36	عمدۃ القاری	امام بدرالدین ابو محمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	دارالفکر، بیروت
37	ارشاد الساری	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ	دارالفکر، بیروت
38	مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دارالفکر بیروت
39	فیض القدیر	علامہ محمد عبدالرءوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت، ۱۴۲۲ھ
40	شرح ابن بطال	ابن بطال ابوالحسن علی بن خلف بن عبدالملک، متوفی ۴۴۹ھ	مکتبۃ الرشید ریاض ۱۴۲۰ھ
41	کشف المحجوب	علی ھجویری المعروف داتا گنج بخش متوفی ۵۰۰ھ	مرکز الاولیاء لاہور
42	الزواجر عن اقتراف الکبائر	ابوالعباس احمد بن محمد بن علي بن حجر ھیتمہ ، متوفی ۹۷۴ھ	دارالمعرفہ بیروت
43	المجالسۃ و جواھر العلم	ابوبکر احمد بن مروان الدینوري المالکی، متوفی ۳۳۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
44	الحدیقۃ الندیۃ	عبدالغنی بن اسماعیل نابلسی، متوفی ۱۱۴۳ھ	پشاور پاکستان

www.dawateislami.net

45	المواعظ والاعتبار	تقی الدین احمد بن علی المقریزی، متوفی ۸۴۵ھ	مکتبۃ مدبولی، قاھرہ، ۱۹۹۸ء
46	احیاء العلوم	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر، بیروت ۲۰۰۰ء
47	مکاشفۃ القلوب	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت
48	لباب الاحیاء	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار البیروتی، دمشق، ۱۴۲۴ھ
49	بستان العارفین	فقیہ ابواللیث نصر بن محمد سمرقندی، متوفی ۳۷۳ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت، ۱۴۲۴ھ
50	تاریخ الخمیس	امام حسین بن محمد بن حسن الدیار بکری، متوفی ۹۶۶ھ	مؤسسۃ شعبان، بیروت
51	تاریخ مولد العلماء ووفیاتھم	ابو سلیمان محمد بن عبداللہ الدمشقی، متوفی ۳۷۹ھ	دار العاصمہ، ریاض، ۱۴۱۰ھ
52	الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دار الفکر، بیروت، ۱۴۱۸ھ
53	البدایۃ والنہایۃ	عماد الدین اسماعیل بن عمر ابن کثیر دمشقی، متوفی ۷۷۴ھ	دار الفکر، بیروت
54	معجم الصحابہ	ابی القاسم عبداللہ بن محمد بن عبدالعزیز البغوی، متوفی ۳۱۷ھ	مکتبہ دار البیان، کویت
55	طبقات ابن سعد	محمد بن سعد بن منیع ھاشمی، متوفی ۲۳۰ھ	مکتبۃ الخانجی قاھرہ، ۱۴۲۱ھ
56	الوافی بالوفیات	صلاح الدین خلیل بن ایبک الصفدی، متوفی ۷۶۴ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت
57	الناھیۃ عن طعن امیر المؤمنین معاویۃ	عبدالعزیز بن احمد بن حامد، متوفی ۱۲۳۹ھ	غراس للنشر والتوزیع، ۱۴۲۲ھ
58	حلیۃ الاولیاء	حافظ ابونعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت
59	ذخائر العقبی	ابو العباس احمد بن عبداللہ الطبری، متوفی ۶۹۴ھ	مکتبہ ابن عساکر
60	الریاض النضرۃ	امام شیخ ابوجعفر احمد طبری، متوفی ۶۹۴ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت
61	اخبار الاخیار	شیخ محقق عبدالحق محدث دھلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	فاروق اکیڈمی خیر پور پاکستان

www.dawateislami.net

62	مروج الذهب	ابوالحسن بن علی المسعودی، متوفی ۳۴۶ھ	المكتبة العصريه، بيروت
63	تاریخ ابن عساکر	امام علی بن حسن المعروف ابن عساکر، متوفی ۵۷۱ھ	دار الفکر، بیروت
64	فتوح الشام	علامہ محمد بن عمر بن واقدی، متوفی ۲۰۷ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت
65	تاریخ بغداد	حافظ ابوبکر علی بن احمد خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت، ۱۴۱۷ھ
66	تاریخ المدینۃ المنورۃ	ابوزید عمر بن شبّہ النمیری البصری، متوفی ۲۶۲ھ	دار الفکر قم ایران
67	اخبار مکۃ	ابو الولید محمد بن عبد اللہ بن احمد الازرقی، متوفی ۲۵۰ھ	مکہ مکرمہ عرب شریف
68	تاریخ الطبری	ابوجعفر محمد بن جریر الطبري، متوفی ۳۱۰ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت، ۱۴۰۷ھ
69	تاریخ الاسلام	امام محمد بن احمد بن عثمان ذهبی، متوفی ۷۴۸ھ	دار الکتاب العربی، بیروت
70	تاریخ یعقوبی	احمد بن ابو یعقوب العباسی، متوفی ۲۹۲ھ	مطبع بریل لیڈن، ۱۸۸۳ء
71	تاریخ الخلفاء	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	باب المدینہ کراچی
72	کتاب الثقات	ابوحاتم محمد بن حبان تمیمي الدارمي، متوفی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت
73	الاستیعاب	ابو عمر یوسف عبد اللہ بن محمد بن عبد البر قرطبی، متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت
74	سیر اعلام النبلاء	امام محمد بن احمد بن عثمان ذهبی، متوفی ۷۴۸ھ	دار الفکر، بیروت، ۱۴۱۷ھ
75	تهذیب الاسماء و اللغات	امام ابوزکریا محي الدین بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ	دار الفکر، بیروت
76	معجم البلدان	الامام شهاب الدین ابی عبد اللہ الحموی، متوفی ۶۲۶ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت
77	فتوح البلدان	ابو العباس احمد بن یحیی البلاذری، متوفی ۲۷۹ھ	مؤسسة المعارف، بیروت، ۱۴۰۷ھ

www.dawateislami.net

78	تاج العروس	ابوالفیض سید محمد مرتضی حسین زبیدی، متوفی ۱۲۰۵ھ	التراث العربی کویت، ۱۴۰۷ھ
79	تاریخ ابن خلدون	عبدالرحمٰن بن خلدون، متوفی ۸۰۸ھ	دارالفکر، بیروت، ۱۴۰۱ھ
80	طبقات الشافعیة	ابوبکر بن احمد الدمشقی، متوفی ۸۵۱ھ	عالم الکتب، قاہرہ مصر، ۱۴۰۷ھ
81	طبقات الشافعیة الکبری	امام تاج الدین بن علی بن عبدالکافی السبکی، متوفی ۷۷۱ھ	داراحیاء الکتب العربیہ، ۱۴۱۳ھ
82	الکامل فی التاریخ	ابوالحسن علی بن محمد بن اثیر جزری، متوفی ۶۳۰ھ	مکتبۃ الآداب، قاہرہ مصر
83	التاریخ الکبیر	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
84	السیرۃ الحلبیۃ	برہان الدین علی بن ابراہیم بن احمد الحلبی، متوفی ۱۰۴۴ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
85	شرح الزرقانی علی المواہب	محمد زرقانی بن عبدالباقی بن یوسف، متوفی ۱۱۲۲ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
86	نسیم الریاض	شہاب الدین احمد بن محمد خفاجی، متوفی ۱۰۶۹ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
87	مدارج النبوۃ	شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
88	السیرۃ النبویۃ لابن ہشام	ابومحمد عبدالملک بن ہشام، متوفی ۲۱۳ھ	دارالمعرفہ بیروت
89	الشفا	قاضی ابوفضل عیاض مالکی، متوفی ۵۴۴ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
90	دلائل النبوۃ	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
91	حلم معاویۃ	ابوبکر عبداللہ بن محمد المعروف ابن ابی الدنیا، متوفی ۲۸۱ھ	دارالبشائر، دمشق، ۱۴۲۳ھ
92	شواہد الحق	مولانا عبدالرحمن جامی، متوفی ۸۹۸ھ	مکتبۃ الحقیقیہ استنبول، ترکی

www.dawateislami.net

93	برکات آل رسول	امام یوسف بن اسماعیل نبہانی، متوفی ۱۳۵۰ھ	مکتبہ قادریہ لاہور ۱۹۸۰
94	الفہرست لابن الندیم	ابوالفرج محمد بن ابی یعقوب اسحق المعروف بالوراق	باب المدینہ کراچی
95	شرح اصول اعتقاد	حافظ ابی القاسم ہبۃ اللہ ابن الحسن بن منصور الطبری، متوفی ۴۱۸ھ	دار البصیرۃ الاسکندریہ
96	بغیۃ الباحث	امام نور الدین علی بن سلیمان الہیثم ، متوفی ۸۰۷ھ	مرکز خدمۃ السنۃ والسیرۃ النبویہ، عرب شریف
97	المطالب العالیۃ	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۲۰۰۳
98	النبراس	علامہ محمد عبد العزیز پرہاروی	مدینۃ الاولیا ملتان
99	ذیل طبقات حنابلہ	زین الدین عبد الرحمن ابن شہاب الدین احمد البغدادی، متوفی ۷۹۵ھ	دار لکتب العلمیہ، بیروت، ۱۴۱۷ھ
100	الیواقیت و الجواہر	امام عبد الوہاب بن احمد بن علی بن احمد الشعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
101	تطہیر الجنان	الامام احمد بن حجر الہیتمی، متوفی ۹۷۴	مدینۃ الاولیا ملتان
102	عقد الفرید	الفقیہ احمد بن محمد بن عبد ربہ الاندلسی، متوفی ۳۲۸ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت، ۱۴۱۷ھ
103	التراتیب الاداریۃ	محمد عبد الحی بن عبد الکبیر الکتانی المغربی، متوفی ۱۳۸۲	دار لبشار اسلامیہ ۱۴۳۴
104	الدعامۃ فی احکام سنۃ العمامۃ	محمد بن جعفر الکتانی الحسنی، متوفی ۱۳۴۵ھ	مطبعۃ الفجاء شام، ۱۳۴۲
105	ازالۃ الخفاء	شاہ ولی اللہ محدث دہلوی، متوفی ۱۱۷۶ھ	باب المدینہ کراچی
106	البیان والتبیین	ابوعثمان عمرو بن بحر الجاحظ، متوفی ۲۵۵ھ	مکتبۃ الخانجی، قاہرہ، ۱۴۱۸ھ
107	سمط النجوم العوالی	عبد الملک بن حسین بن عبد الملک شافعی، متوفی ۱۱۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت، ۱۴۱۹ھ
108	السنّۃ	ابوبکر احمد بن محمد الخلال، متوفی ۳۱۱ھ	دار الرایۃ للنشر والتوزیع، ۱۴۱۰ھ
109	الوافی بالوفیات	صلاح الدین خلیل بن ایبک الصفدی، متوفی ۷۶۴ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ

www.dawateislami.net

110	شرف المصطفیٰ	ابو سعد عبد الملک بن ابو عثمان نیشاپوری، متوفی ۴۰۶ھ	دار البشائر الاسلامیہ، ۱۴۲۴ھ
111	کتاب الشریعۃ	امام ابو بکر محمد بن حسین الآجری، متوفی ۳۶۰ھ	دار الوطن، ریاض، ۱۴۱۸ھ
112	تھذیب الکمال	یوسف بن الزکي عبد الرحمن أبو الحجاج المزي، متوفی ۷۴۲ھ	مؤسسۃ الرسالۃ، بیروت، ۱۴۰۰ھ
113	الآداب السلطانیہ	محمد بن علي بن محمد العلوي، المعروف ابن الطقطقي، متوفی ۷۰۹ھ	دار صادر، بیروت
114	مثنوی معنوی شرح بحر العلوم	محمد بن محمد بحر العلوم	ایران باران پبلشنگ
115	لمعۃ الاعتقاد	عبد الرحمن بن محمد بن أحمد بن قدامۃ المقدسی، متوفی ۶۸۲ھ	عرب شریف، ۱۴۲۰ھ
116	حلم معاویۃ	ابو بکر عبد اللہ بن محمد المعروف ابن ابی الدنیا، متوفی ۲۸۱ھ	دار البشائر، دمشق، ۱۴۲۳ھ
117	مورد اللطافہ	یوسف بن تغری بردی الاتابکی، متوفی، ۸۷۴ھ	دار الکتب المصریۃ، قاھرہ، ۱۹۹۷ء
118	تاریخ الخمیس	امام حسین بن محمد بن حسن الدیاربکری، متوفی، ۹۶۶ھ	مؤسسۃ شعبان، بیروت
119	مرآۃ المناجیح	مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی، ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن، مرکز الاولیاء لاہور
120	فتاویٰ رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی، ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن، مرکز الاولیاء لاہور
121	بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی، ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
122	امیر معاویہ	مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن، مرکز الاولیاء لاہور
123	دفاع سیّدنا امیر معاویہ	علماءِ اہلسنّت	دار السلام، مرکز الاولیاء لاہور، ۱۴۳۴ھ
124	جنتی زیور	علامہ عبد المصطفیٰ اعظمی مجددی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۷ھ
125	عاشقانِ رسول کی 130 حکایات	امیر اہلسنت، مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
126	امام اعظم کی وصیتیں	امام اعظم ابو حنیفہ نعمان بن ثابت، متوفی ۱۵۰ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ

www.dawateislami.net

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
इजमाली फ़ेहरिस्त	5	सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया की जवानी और ज़मानए जाहिलिय्यत	28
निय्यतें	6	क़बूले इस्लाम	30
तआ़रुफ़े अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या	7	आप मुअल्लफ़तुल क़ुलूब में से न थे	32
इस उम्मत के बेहतरीन लोग	9	अज़्वाज व औलाद	34
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	11	**दूसरा बाब : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया के औसाफ़**	36
ह़िल्म हो तो ऐसा !	11		
ह़िसाब में आसानी के तीन अस्बाब	14		
पहला बाब : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया का तआ़रुफ़	15	(1) **आ़जिज़ी व इन्किसारी**	37
		अपनी ता'ज़ीम पसन्द न फ़रमाते	37
इस्मे गिरामी और लक़ब व कुन्यत	15	(2) **ख़ूब से ख़ूबतर बनने का जज़्बा**	41
विलादत	16	नसीह़त के त़लबगार	41
सिलसिलए नसब	16	(3) **ह़िल्म व बुर्दबारी**	43
वालिदैन का तआ़रुफ़ और क़बूले इस्लाम	17	सब से ज़ियादा ह़लीमुत्तब्अ़	43
सय्यिदुना अबू सुफ़्यान की क़ुरबानियां	18	कहीं बुर्दबारी कम न हो जाए !	44
लख़्ते जिगर बारगाहे रिसालत में	19	सब से बड़ा सरदार कौन ?	45
ज़रूरी वज़ाह़त	20	किसी से ज़ाती दुश्मनी न रखते	45
सआ़दत मन्द फ़रज़न्द	21	(4) **शुजाअ़त व बहादुरी**	46
सय्यिदतुना हिन्द की प्यारे आक़ा से महब्बत	21	क़ैसारिया का फ़ातेह़	46
बारगाहे रिसालत में हदया	22	(5) **हुस्ने अख़्लाक़**	48
सूरत व सीरते मुबारका	25	सब से अच्छे अख़्लाक़ वाला ह़ाकिम	48
सब्ज़ लिबास भी ज़ेबे तन फ़रमाते	26	ख़ुश त़बई भी फ़रमाते	49
सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया का बचपन	26	(6) **जज़्बए ख़ैरख़्वाही**	50
बचपन से ही अ़ज़मतों का ज़ुहूर	27	उम्मत की ख़ैरख़्वाही का जज़्बा	50

www.dawateislami.net

हुज्जाज और ग़रीब रोज़ादारों की ख़ैरख़्वाही का इन्तिज़ाम	50	तबर्रुकात की दलील मांगना कैसा ?	69
		आ'ला ह़ज़रत का फ़तवा	70
(7) फ़िक़्ह व इजतिहाद	50	सरकार की निस्बत का एह़तिराम	71
(8) किताबते वह्य	51	अह्ले बैते अत़हार से मह़ब्बत	72
(9) इत्तिबाए सुन्नत	52	ईमान कामिल तब होगा...	72
ज़ियारते क़ुबूर की सुन्नत अदा फ़रमाई	52	ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा से मह़ब्बत	72
आ़शूरे का रोज़ा रखते	52	शेरे ख़ुदा से मह़ब्बत	72
(10) اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ	53	अ़लिय्युल मुर्तज़ा मुझ से अफ़्ज़ल हैं	73
सुन्नत पर अ़मल करने की तरग़ीब	55	मनाक़िबे अ़ली व अह्ले बैत ब ज़बाने अमीरे मुआ़विया	75
बाल जोड़ने की मुमानअ़त	56	शेरे ख़ुदा के फ़ैसले पर ए'तिमाद	79
यज़ीद की गिरिफ़्त	57	इल्मी मस्अले में शेरे ख़ुदा से रुजूअ़	80
(11) नमाज़ से मह़ब्बत	59	दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत से रुजूअ़ कीजिये	81
शैत़ान ने नमाज़ के लिये जगाया	59	मैं अ़ली से मह़ब्बत करता हूं	81
(12) सादगी	60	औसाफ़े शेरे ख़ुदा सुन कर आंखें भर आईं	82
तीसरा बाब : सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया का इ़श्क़े रसूल	62	शहादते शेरे ख़ुदा पर आबदीदा हो गए	85
		ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन से मह़ब्बत	85
हुज़ूर की चादर से मह़ब्बत	62	फ़ज़ाइले इमामे ह़सन ब ज़बाने अमीरे मुआ़विया	85
दिन में तारे नज़र आने लगे	63	मनाक़िबे इमामे ह़सन की तस्दीक़	86
सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया का बे मिसाल कफ़न	63	मुशाबहत की वज्ह से एह़तिराम	88
नबिय्ये करीम से निस्बत रखने वाली चीज़ों से मह़ब्बत	66	सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया की त़रफ़ से चार लाख दिरहम का नज़राना	89
मिम्बर और अ़सा मुबारक से मह़ब्बत	66	ह़ज़रते इमाम ह़सन से ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाने की फ़रमाइ़श	89
जुब्बए मुस्त़फ़ा बाइ़से शिफ़ा	67		
जुब्बए मुस्त़फ़ा और मूए मुबारक से हुसूले बरकत का अन्दाज़	68	इस्तिग़फ़ार की बरकत	90
		ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन से मह़ब्बत	91
तुझे बुराई नहीं पहुंचेगी	69	इमामे हुसैन का ह़ल्क़ए दर्स	91

www.dawateislami.net

सिलए रेह़मी और नर्मी से पेश आने की वसिय्यत	92	(7) बिला तकल्लुफ़ इस्तिफ़ादा	106
येह थोड़ी सी रक़म है	92	(8) तक़्सीम कारी फ़रमाने वाले	107
अमीरे मुआ़विया इमामे ह़ुसैन व ह़सन का इस्तिक़्बाल फ़रमाते	93	(9) अ़वाम की ख़ैरख़्वाही	108
चौथा बाब : हुकूमते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया	95	सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया का ज़मानए हुकूमत	109
		लोगों की भलाई का ख़याल फ़रमाते	110
सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया ह़ाकिम कैसे बने ?	96	मेहमान नवाज़ी और ख़ैरख़्वाही का अन्दाज़	112
फ़ारूक़े आ'ज़म तरबिय्यत फ़रमाते	96	इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल	112
फ़ारूक़े आ'ज़म की नसीह़त	97	मुक़द्दस मक़ाम को मस्जिद में तब्दील फ़रमा दिया	114
फ़ारूक़े आ'ज़म के ह़ुक्म पर मुआ़हदा तह़रीर फ़रमाया	97	ह़दीसे पाक पर अ़मल का जज़्बा	115
अमीरे मुआ़विया को उसूले अ़द्ल से मुतअ़ल्लिक़ मक्तूब	97	सय्यिदुना मिस्वर बिन मख़रमा का इत़मीनान	116
		सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया की दिन भर की मसरूफ़ियात	117
सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया ख़लीफ़ा कैसे बने ?	98		
हुकूमते अमीरे मुआ़विया पर सय्यिदुना इमामे ह़सन की गवाही	99	इन जैसा न पाओगे	118
		अमीरे अह्ले सुन्नत का मा'मूल	120
फ़ारूक़े आ'ज़म के नज़दीक मक़ामे सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया	99	सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया के ह़िक्मत भरे मदनी फूल	120
फ़ारूक़े आ'ज़म का ए'तिमाद	102	ह़ासिद कब राज़ी होगा ?	121
सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया के तदब्बुर की ता'रीफ़	102	अ़क़्लमन्द कौन ?	121
हुकूमते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया के बुन्यादी उसूल	103	फ़ारूक़े आ'ज़म ने दुन्या को धुतकार दिया	122
		बुर्दबारी इख़्तियार करने की नसीह़त	122
(1) नेकी की दा'वत	103	ख़ुत़बे के ज़रीए नेकी की दा'वत	123
(2) अ़ह्द की पासदारी	104	उन आफ़ात से बचिये	123
(3) شَعَائِرُاللہ से मह़ब्बत	104	शरई ह़ुक्म पर अ़मल करवाते	125
(4) मसाइल का इदराक और उन का ह़ल	105	सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया ने दिल जीत लिया	126
(5) दूसरों के तजरिबे से इस्तिफ़ादा	105	दिल जीतने का नुस्ख़ा	127
(6) मश्वरे का ख़ैर मक़्दम	106	सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया का सुन्हरी दौर	128

www.dawateislami.net

फ़ितनों का ख़ातिमा	128	मिस्र से ह़ासिल होने वाली माली मुआ़वनत	149
शहादते शेरे खुदा पर कैफ़िय्यत	129	सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया और ह़िफ़ाज़ती उमूर	150
रूमी बादशाह की सर्ज़निश	130	सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया के दौर में पैग़ाम रसानी का निज़ाम	151
अ़लिय्युल मुर्तज़ा के शहज़ादे पर ए'तिमाद	131		
मैं तुम से बेहतर नहीं हूं	132	ख़ुतूत पर मोहर और नक़्ल महफ़ूज़ रखने का निज़ाम राइज फ़रमाया	152
लोगों की ज़रूरियात पूरी फ़रमाते	133		
बच्चों की दिलजूई फ़रमाते	133	एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़	153
बच्चों की दिलजूई की अहम्मिय्यत	134	**सातवां बाब : अल्लाह वालों से महब्बत व अ़क़ीदत**	154
पांचवां बाब : अ़हदे अमीरे मुआ़विया की इल्मी सरगर्मियां	137	फ़ारूक़े आ'ज़म के औसाफ़ बयान करो !	154
ह़दीस बयान करने में एह़तियात़	137	बारिश के लिये बुज़ुर्ग का वसीला	155
मुझे एक ह़दीस लिख दीजिये	138	सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया की आ़जिज़ी	157
रिवायते ह़दीस की तह़क़ीक़	139	सात बातों की मुमानअ़त	158
कुरैश को कुरैश कहने की वज्ह	141	उम्मुल मोमिनीन की ख़ैरख़्वाही	158
तारीख़ की पहली किताब	141	बेश क़ीमत हार का तोह़फ़ा	159
छटा बाब : सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया और इन्तिज़ामी उमूर	143	सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा की सख़ावत	159
		सालिह़ीन का दुन्या से चले जाना आज़माइश है	159
सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया का निज़ामे एह़तिसाब	143	महब्बते रसूल की उ़म्दा मिसाल	160
बद अख़्लाक़ी की बिना पर भांजे को मा'ज़ूल कर दिया	145	**आठवां बाब : सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया के फ़ज़ाइल**	161
अ़हदे सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया में ओ़हदए क़ज़ा	146		
सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया और जेलख़ाना जात	147	सह़ाबए किराम की फ़ज़ीलत क़ुरआन से	162
सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया का क़ैदियों से रवय्या	147	सह़ाबए किराम के उ़मूमी फ़ज़ाइल	164
मजलिसे इस्लाह़ बराए क़ैदियान	147	(1) फ़ज़ाइले अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने मुस्त़फ़ा	165
सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया और निज़ामे मालियात	148	(1) हादी व महदी बना दे	166
दिमश्क़ से ह़ासिल होने वाली माली मुआ़वनत	149	(2) किताब व ह़िक्मत सिखा दे	167
इराक़ से ह़ासिल होने वाली माली मुआ़वनत	149	(3) दुन्या व आख़िरत में मग़फ़िरत याफ़्ता	167

www.dawateislami.net

(4) इसे इल्मो हिल्म से भर दे	169	(4) हुकूमते मुआ़विया को बुरा न समझो	185
(5) अल्लाह व रसूल मुआ़विया से महब्बत करते हैं	169	(5) वोह सहाबिये रसूल और फ़क़ीह हैं	185
(6) हैं जिब्रील के भी प्यारे अमीरे मुआ़विया	170	(6) मुनासिब तरीन शख़्सिय्यत	186
(7) मुआ़विया तुम मुझ से हो	171	(7) अमीरे मुआ़विया जन्नती हैं	186
(8) उ़मूमी फ़ज़ीलत में ख़ुसूसी ए'ज़ाज़	172	(8) मुस्त़फ़ा करीम के सामने लिखने वाले	187
(9) रसूलुल्लाह के राज़दार	173	(9) ऐसी हुकूमत कोई नहीं करेगा	187
(10) सल्त़नत की बिशारत	173	(10) अमीरे मुआ़विया का ज़िक्र ख़ैर से ही करो	187
(11) अमीरे मुआ़विया क़वी व अमीन हैं	174	(11) सब से ज़ियादा ह़लीम व बुर्दबार	188
(12) नूर की चादर की बिशारत	175	**(3) शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने उ़लमा व औलिया**	188
(13) किताबुल्लाह के अमीन	175		
(14) मैं अ़ली से महब्बत करता हूं	176	(1) आप का बे मिसाल अ़द्लो इन्साफ़	188
(15) आग के त़ौक़ की वईद	177	(2) अगर तुम सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया को देख लेते....	189
(16) अमीरे मुआ़विया जन्नती हैं	177		
(17) सब से ह़लीम व सख़ी	178	(3) त़ा'न की जुरअत	189
बुर्दबार बनने का आसान अ़मल	178	(4) शातिमे सहाबी को सज़ा	190
ह़िल्म एक बे बहा दौलत	179	(5) ताबेई़ का सहाबी से मुक़ाबला करते हो ?	190
मोमिनों के मामूं	180	(6) साह़िबे फ़ज़ीलत सहाबी	191
कातिबे वह़्य	180	(7) हुक़ूक़ पूरा करने वाले ख़लीफ़ा	191
जिन्हें मुस्त़फ़ा लिखना सिखाएं	181	(8) मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी गई	191
(18) बिशारते फ़त्ह़े शाम ब ज़बाने शाहे ख़ैरुल अनाम	182	(9) ज़बान बन्द रखी जाए	192
ऐसों से दूर रहिये	182	(10) अह्ले बैत के ख़िदमतगार	193
(2) फ़ज़ाइले अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने सह़ाबा व अह्ले बैत	183	(11) जलीलुल क़द्र सहाबी और मुज्त़हिद	193
		(12) सब से पहले फ़ज़ाइले अमीरे मुआ़विया पढ़ाते	193
(1) ह़क़ के साथ फ़ैसला करने वाले	184	**(4) शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने बुज़ुर्गाने दीन**	194
(2) ऐसा सरदार नहीं देखा	184		
(3) नमाज़ में सब से ज़ियादा मुशाबहत	184	शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने कुबैसा बिन जाबिर ताबेई़	194

www.dawateislami.net

शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक	195
शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने सय्यिदुना अह़मद बिन ह़म्बल	195
ऐसे शख़्स से तअ़ल्लुक़ न रखो	195
शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने सय्यिदुना मुआ़फ़ा बिन इ़मरान	196
शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी	196
शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने सय्यिदुना अ़ली बिन सुल्तान क़ारी	197
शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने सय्यिदुना यूसुफ़ नब्हानी	197
शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने इमामे अह़ले सुन्नत	198
शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने सदरुश्शरीआ़	198
शाने अमीरे मुआ़विया ब ज़बाने मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान	199
नवां बाब : मुशाजराते सह़ाबा और हम	200
अ़ज़मते सह़ाबा और तारीख़ी रिवायात	203
शाने अमीरे मुआ़विया के बारे में ग़लत फ़ह्मियों का इ़ज़ाला	206
दसवां बाब : सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया की मरविय्यात	225
त़बक़ए ताबेई़न	226
सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया से मरवी अह़ादीसे मुबारका	226
यौमे आ़शूरा का रोज़ा	227
ऊंची गर्दनों वाले	227
येह तो किसी को ज़ब्ह़ करना !	227
सच को लाज़िम कर लो और झूट से बचो	229
ज़िक्रुल्लाह के इ़ज़तिमाआ़ की फ़ज़ीलत	229
पोशीदा ऐ़ब ढूंडने का नुक़्सान	232
नमाज़ में भूल जाएं तो...	233
फ़राइज़ व सुनन के दरमियान वक़्फ़ा करना चाहिये	234
नशा आवर चीज़ें ह़राम हैं	235
मुसलमान के लिये तक्लीफ़ भी बाइ़से फ़ज़ीलत	235
मर्दों को सोना और रेशम पहनना मन्अ़ है	236
नौह़ाख़्वानी नाजाइज़ है	236
बेहतरीन इन्सान कौन !	237
इमामे ह़सन की शान	237
ह़िजरत कब तक रहेगी !	238
ग्यारहवां बाब : विसाले सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया	239
मरज़े विसाल की इब्तिदा में यज़ीद को वसिय्यत	239
अमीरे मुआ़विया मरज़े विसाल में	241
वक़्ते विसाल इज़्ज़ो इन्किसारी का इज़हार	242
तबर्रुकाते नबविया से मह़ब्बत और अह़ले ख़ाना को वसिय्यत	244
आख़िरी वक़्त में भी नेकी की दा'वत	246
ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया का विसाल	246
विसाले मुबारक की तारीख़	247

www.dawateislami.net

तदफ़ीन से पहले ख़िताब	248	बद अ़क़ीदगी का इलाज फ़रमा दिया	259
नमाज़े जनाज़ा	249	अमीरे मुआ़विया पर त़ा'न न करो	261
बा'दे वफ़ात भी दिलों पर राज	250	अमीरे मुआ़विया का गुस्ताख़ ज़ब्हशुदा पाया गया	262
मदफ़न	250		
बाबे सग़ीर में मदफ़ून उ़लमाए किराम	252	तू ने येह लफ़्ज़ क्यूं कहे थे ?	263
मज़ारे सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया की ज़ियारत	253	दुश्मने सह़ाबा, मुह़िब्बे सह़ाबा बन गया	266
बारहवां बाब : उ़लमा व मुह़द्दिसीन का ख़िराजे अ़क़ीदत	255	सह़ाबा के ह़क़ में ख़ुदा से डरो	267
		सह़ाबए किराम का निहायत अदब कीजिये	268
आ'ला ह़ज़रत के 5 रसाइल	258	**ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया तारीख़ के आईने में**	270
सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया पर ए'तिराज़ मत कीजिये	258		
		माख़ज़ो मराजेअ़	273
तुझे दख़्ल अन्दाज़ी का ह़क़ किस ने दिया ?	258	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	281
दोनों फ़रीक़ जन्नती हैं	259	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुबो रसाइल	288

कोई देख तो नहीं रहा !

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रक़द सबख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मुनाफ़िक़ जब देखता है कि कोई (उसे देखने वाला) नहीं है तो वोह बुराई की जगहों में दाख़िल हो जाता है। वोह इस बात का तो ख़याल रखता है कि लोग उसे न देखें मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख रहा है इस बात का लिह़ाज़ नहीं करता।

(احیاء العلوم، کتاب المراقبۃ والمحاسبۃ، المرابطۃ الثانیۃ المراقبۃ، ۵/۱۳۰، ملخصاً)

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या के शो'बए फ़ैज़ाने सहाबा व अह्ले बैत की त़रफ़ से पेशकर्दा कुतुबो रसाइल

01...फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़हात : 720)

02...फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (जिल्द अव्वल) (कुल सफ़हात : 864)

03...फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (जिल्द दुवुम) (कुल सफ़हात : 856)

04...ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़हात : 132)

05...ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़हात : 89)

06...ह़ज़रते त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़हात : 56)

07....ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़हात : 72)

08...फ़ैज़ाने सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़हात : 32)

09...ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़हात : 60)

﴿शो'बए फ़ैज़ाने सहाबियात﴾

01...फ़ैज़ाने आ़इशा सिद्दीक़ा (कुल सफ़हात : 608)

02...फ़ैज़ाने ख़दीजतुल कुब्रा (कुल सफ़हात : 84)

03...शाने ख़ातूने जन्नत (कुल सफ़हात : 501)

04...फ़ैज़ाने उम्महातुल मोमिनीन (कुल सफ़हात : 368)

﴿शो'बए फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा﴾

01...फ़ैज़ाने मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान (कुल सफ़हात : 62)

02...फ़ैज़ाने सय्यिद अह़मद कबीर रिफ़ाई (कुल सफ़हात : 33)

03...फ़ैज़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ (कुल सफ़हात : 32)

04...फ़ैज़ाने उ़स्मान मरवन्दी (कुल सफ़हात : 43)

05...फ़ैज़ाने पीर मह्र अ़ली शाह (कुल सफ़हात : 33)

06...फ़ैज़ाने अ़ल्लामा काज़िमी (कुल सफ़हात : 70)

07...फ़ैज़ाने दाता अ़ली हिजवेरी(कुल सफ़हात : 84)

08...फ़ैज़ाने सुल्त़ान बाहू (कुल सफ़हात : 32)

09...फ़ैज़ाने ह़ाफ़िज़े मिल्लत (कुल सफ़हात : 32)

10...फ़ैज़ाने बहाऊद्दीन ज़करिया मुल्तानी (कुल सफ़हात : 74)

11...फ़ैज़ाने बाबा फ़रीद गंजे शकर (कुल सफ़हात : 115)

www.dawateislami.net

यादददाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

याददाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा

www.dawateislami.net

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाखें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

Web : www.dawateislami.net / E-mail : maktabadelhi@dawateislami.net